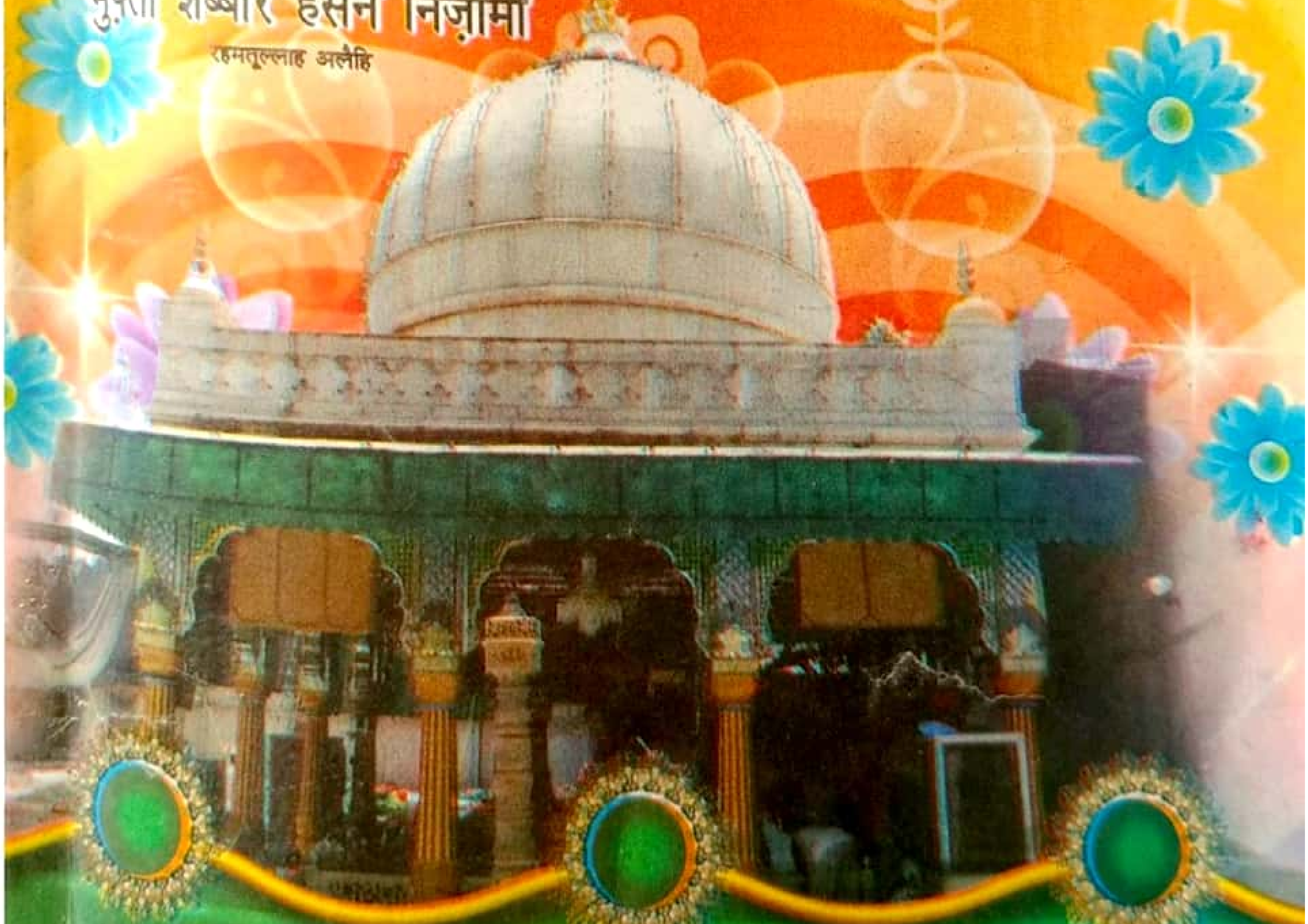
हज़रत ख़्वाजा

कुतबुद्दीन बख़्तियार काकी

रहमतुल्लाह अलैहि

अज़

मुफ़्ती शब्बीर हसन निज़ामी
रहमतुल्लाह अलैहि



आस्ताना बुक डिपो
1565, सूईवालान, देहली-2

ख़्वाजा कुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी (रह०)

नायब

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ (रह०)

की

मुक़द्दस ज़िन्दगी, तालीमात व इरशादात

शब्बीर हसन चिश्ती निज़ामी

आसताना बुक डिपो
1565, सूईवालान, नई दिल्ली – 2

ख़्वाजा कुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी (रह०)

रूपांतरण : एस० ख़ालिद निज़ामी
प्रकाश : आसताना बुक डिपो,
1565 सूईवालान, नई दिल्ली-2
संस्करण :
पहली बार : 1999
मूल्य :
कम्पोज़िंग : ज़हीन कम्पोज़िंग

आसताना बुक डिपो
1565, सूईवालान, नई दिल्ली – 2

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तआरुफ़

हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब साहब चिश्तिया ख़ानदान के बहुत बड़े कामिल और वासिल दुरवेश थे। आपकी मौजूदगी व अज़मत का शुहरा न सिर्फ़ हिन्द व पाकिस्तान में है बल्कि सारा जहाँ आपके कमालाते बातिन और दरजाते रूहानी का मद्दाह व मोतरिफ़ है।

आपकी नज़रे असर को क़ुदरत ने वह कशिश व जाज़िबियत और असर अता फ़रमाया था कि जिसपर आपकी एक बार नज़र पड़ती थी वलिए कामिल बन जाता था। हज़ारहा फ़ासिक़ व फ़ाजिर आपकी विलायत से सालेह मुत्तक़ी बन गए थे। बेशुमार सालेहीन आपकी रूहानी बरकात से बड़े-बड़े दर्जे पर पहुँच गए।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के बाद चिश्तियों के सालार और सुल्तानुल मशाइख़ हैं। हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब साहब की अज़मत व जलालत का अन्दाज़ा इससे हो सकता है कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने चालीस रोज़ तक हुज़ूर सरवरे कायनात (सल्ल०) को ख़्वाब में देखा।

नबी (सल्ल०) फ़रमाते रहे – ''ऐ मुईनुद्दीन! क़ुत्बुद्दीन हमारा

दोस्त है। तुम्हारा ख़लीफ़ा और सज्जादा नशीन बनेगा। तुम्हें जो नेमतें सीना-ब-सीना अपने बुर्जुगों से मिली हैं उससे बेहतर तुम्हें क़ायम मक़ाम नहीं मिल सकता।"

चुनांचे कुत्ब साहब अभी अच्छी तरह जवान न हुए थे। दाढ़ी भी नहीं निकली थी कि ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने आपको ख़िलअते ख़िलाफ़त अता फ़रमाया और कुत्बुल मशाइख़ बनाकर तअय्युनात फ़रमाया। हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने हिफ़्तादुत अख़यार में तहरीर फ़रमाया है –

कुत्ब (रह०) मुईनुद्दीन चिश्ती (रह०) के सबसे बड़े ख़लीफ़ा थे। आप अकाबिर औलिया और जलीलुल क़द्र उलमाए किराम में से हैं। तमाम मशाइख़ आपके मुतक़िद और हल्क़ाबगोश ख़ादिम थे। बड़ी शानवाले थे, बहुत बुलन्द मरतबा रखते थे। ज़ुबाने मुबारक से जो फ़रमा देते थे हूबहू ज़ुहूर में आता था। जो शख़्श आपकी पाक सोहबत इख़्तियार करता या खुदापरस्त बन जाता है उसपर कुत्ब साहब ख़ास इनायत की नज़र फ़रमाते हैं।

ख़ानदानी अज़मत

हज़रत कुत्ब साहब ओश के सादाते किराम में से थे। सैयदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन की औलादे अमजाद में से थे। आपका शजरे नसब महरुल अक़लाब में इस तरह मज़कूर है।

हज़रत ख़्वाजा कुत्बुद्दीन बख़तियार काकी बिन सैयद मूसा बिन सैयद अहमद बिन सैयद कमालद्दीन बिन सैयद मोहम्मद बिन सैयद अहमद बिन सैयद इसहाक़ हुसैन बिन सैयद अलमारूफ़ बिन सैयद अहमद चिश्ती बिन सैयद रज़ीउद्दीन बिन सैयद हुसामुद्दीन बिन

सैयद रशीदुद्दीन बिन सैयद जाफ़र बिन अमीरुल मोमिनीन हज़रत इमाम मोहम्मद अलहव्वाद बिन अमीरुल मोमिनीन हज़रत इमाम अली मूसा रज़ा बिन बउम्मुल मुस्लिमीन हज़रत इमाम मूसा काज़िम बिन अमीरुल मोमिनीन हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़र बिन अमीरुल मोमिनीन हज़रत इमाम ज़ैनुल आबेदीन बिन अमीरुल मोमिनीन व इमामुल मोहक़्क़ेक़ीन सैयदना अली शेरे खुदा

दो वासतों से हज़रत का सिलसिल-ए-नसब आक़ाए काएनात सैयदना अली मुर्तज़ा शेरे खुदा पर मुनतही हो जाता है।

विलादत बा सआदत

अफ़सोस किसी तज़किरह में कुत्ब साहब की तारीख़ व सन् पैदाइश मज़कूर नहीं। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का सन् विसाल 634 हि० है। मुसन्निफ़ अहसनुल हसीर ने लिखा है कि वक़्ते विसाल कुत्बुद्दीन साहब की उमर 64 साल थी। इस रिवायत की रौशनी में हिसाब लगाने से हज़रत कुत्ब साहब का सन् वफ़ात अगर 698 हि० है कुत्ब साहब का सन् विलादत माना जाए तो कुत्ब साहब का 524 हि० में बमक़ाम बग़दाद शरीफ़ मुरीद होना तारीख़ी एतेबार से ग़लत हो जाता है। इसलिए कि -

(1) कुत्ब साहब ने दलीलुल आरेफ़ीन की पहली मजलिस में जहाँ अपना साले मुरीदी सन् 514 तहरीर किया है वहाँ यह भी रक़म फ़रमाया है कि इस वक़्त शैख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी भी हाज़िरे मजलिस थे। हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी की उमर इतनी ज़रूर थी कि ख़्वाजा साहब ने आपको सरबर अबुरदा मशाइख़ में शुमार कर दिया और आपकी मौजूदगी मजलिस में तहरीर फ़रमाई।

बहरहाल कुत्ब साहब के सन् पैदाइश में इतना इश्काल है तारीख़े विलादत और माह क़मरी का दरयाफ़्त करना तो अमरे मुहाल है। कुत्ब साहब आलमे ज़ाहिर में तशरीफ़ लाए। आपकी तशरीफ़ आवरी हस्बे क़ानून व मस्लहते खुदावन्दी ज़रूर थी। ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने जो शम्म-ए-हिदायत अजमेर में रौशन की थी उसकी रौशनी से हिन्दुस्तान के हज़ारों ज़ुल्मत कदों को रौशन करना था। कुदरत ने हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को जो रूहानी दर्जा अता फ़रमाया था आपके नायब में भी वही ख़ूबियाँ और सिफ़ात नागुज़ीर थीं। इधर हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ मदीना तैय्यबा से तब्लीग़ी मिशन लेकर वारिदे हिन्दुस्तान हुए, उधर कुदरत ने हज़रत कुत्ब साहब को जामे़र अदबी सिफ़ात पैदा फ़रमाकर आपके बाद आपकी सियादत के लिए नामज़द फ़रमा दिया। नबी (सल्ल०) का चालीस रोज़ तक ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के ख़्वाब में आना और उनको हिदायत फ़रमाना कि कुत्बुद्दीन तुम्हारा नायब और क़ायम मक़ाम है और वही इस नेमत का मुस्तहिक़ है जो तुमको सीना-ब-सीना तुम्हारे मशायख़ से हासिल है। हमारे इस ख़्याल की तौसीक़ कामिल है कि जैसे पीरो मुर्शिद कामिल व अकमल थे वैसे ही उनके ख़लीफ़ा और जानशीं और नायब भी हैं। यही वजह है कि बुज़ुर्गों की ज़ुबानी सुना है कि जो शख़्स माली मुशकिलात या किसी और वजह से हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के दरबार में हाज़िर होकर मन्नत पूरी करने से आजिज़ हो वे अपनी मन्नत दरबार कुत्बुल अक़ताब में पुरी कर सकता है। दरबार कुत्बुल अक़ताब की हाज़िरी ग़रीब नवाज़ के दरबारे गौहर याद की हाज़िरी के क़ायम मक़ाम है।

नाम मुबारक

मुस्तनद तज़किरों से मालूम होता है कि वालिदैन ने अपने नूरे नज़र लख़्ते जिगर का इस्मे गिरामी बख़्तियार रखा था। जुन्हीं वालिदैन ने यह नाम तजवीज़ किया, क़ुदरत ने क़ुतुबुद्दीन ख़िताब अता फ़रमाया।

हज़रत क़ुत्ब साहब मादर ज़ाद वली पैदा हुए थे

हज़रत क़ुत्ब साहब की वालिदा मोहतरमा का बयान है कि जब आप मेरे बतन में थे, निस्फ़ शब के बाद से एक पहर दिन तक बुलन्द आवाज़ से अल्लाह-अल्लाह का ज़िक्र किया करते थे। जिस वक़्त आप निस्फ़ शब के बाद इस आलमे फ़ानी में तशरीफ़ लाए एकाएक मेरा घर नूर से मामूर हो गया।

उस वक़्त ऐसा नूर ज़ाहिर हुआ कि तमाम घर मूनव्वर हो गया और वालिदा ख़्याल करने लगीं कि सूरज निकल आया।

ये हालत देखकर वालिदा पर हैबत तारी हो गई। उन्होंने देखा कि हज़रत क़ुत्ब सर बसुजूद हैं, अल्लाह-अल्लाह फ़रमा रहे हैं।

कुछ देर बाद वह नूर आहिस्ता-आहिस्ता कम हो गया और आवाज़ आई : हमने तेरे बेटे के दिल को 'असरारे-इलाही का ख़ज़ाना बना दिया।' ये नूर जो तुझे नज़र आ रहा है ये भी ख़ुदा तआला का असरार था।'

वालिदा का इन्तिक़ाल

यतीमी नबी (सल्ल०) की सुन्नत है। यह आपके ख़ुलफ़ा और जानशीनों में भी जारी रही। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का

लड़कपन ही था कि उनके वालिद गुज़र गए। हज़रत कुत्ब साहब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के नायब थे। आपके वालिद भी आपको आधा साल का शीरख़्वार बच्चा छोड़ कर जन्नत को सिधार गए। हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब यतीम हो गए। वालिद के इन्तिक़ाल के बाद आपकी परवरीश और तालीम व तरबीयत का बार वालिदा के कांधों पर पड़ गया। वालिदा ने इसको निहायत खुशअसलूबी के साथ अंजाम दिया। दूध छुड़ाने के बाद जब आपकी उमर 2 साल और चार माह हो गई। कुत्ब साहब आग़ोश मादर में ही इबतिदाई तालीम से फ़ारिग़ हो चुके थे।

कुत्ब साहब मकतब में

हज़रत सैय्यद मुहम्मद गेसू दराज़ ने जवामेउल कलीम में लिखा है कि जब आपकी उमर 4 साल 4 माह हुई। वालिदा ने एक ख़ादिम के साथ आपको तालीम के लिए शीरीनी और कुछ ज़र नक़द देकर मकतब रवाना फ़रमा दिया। रास्ते में एक बुज़ुर्ग मिले। उन्होंने ख़ादिम से दरयाफ़्त किया। इस नेक बख़्त बच्चे को कहाँ ले जा रहे हो। ख़ादिम ने जवाब दियाः मकतब में। फ़रमायाः इस बच्चे को मौलाना अबू हफ़्स (रह०) के पास ले जाना। वह बहुत बड़े आलिम और बुज़ुर्ग हैं। वही इस बच्चे को तालीम देंगे। खुद भी साथ-साथ हो लिए।

मौलाना अबू हफ़्स के पास पहुँचकर फ़रमायाः इस बच्चे को अच्छी तरह तालीम देना। इससे बड़े-बड़े काम लेने हैं। अलग़रज़ वह बुज़ुर्ग हज़रत कुत्ब साहब को मौलाना मौसूफ़ के पास छोड़कर चले गए। मौलाना मौसूफ़ ने ख़ादिम से फ़रमायाः जानते हैं ये बुज़ुर्ग कौन थे?

अर्ज़ किया: मुझे मालूम नहीं। आपने फ़रमाया: हज़रत ख़िज़्र (अलै०) थे, रहनुमाई के लिए तशरीफ़ लाए थे।

सियरुल अक़ताब में आपकी इबतिदाई तालीम का साल इस तरह मज़कूर है -

4 साल, 4 माह की उमर में वालिदा ने आपको मकतब में भेजा। ख़ादिम आपको हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती की ख़िदमत में ले गया। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने कुत्ब साहब के हाथ से तख़्ती लेकर कुछ रक़म फ़रमाना चाहा। आवाज़ आई: ऐ मोईनुद्दीन थोड़ी देर तवक़्क़ुफ़ करो। हमीदुद्दीन नागौरी आ रहा है। वही इस बच्चे को तालीम देगा। अलबत्ता कमालात और नेमत रूहानी इस बच्चे को तुम ही से मिलेगी।

इतने में क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी (रह०) भी तशरीफ़ ले आए। हज़रत कुत्ब साहब ने ताज़ीम अदा की। हज़रत क़ाज़ी साहब के हाथ से तख़्ती लेकर दरयाफ़्त किया। बताओ क्या लिखुं? हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया लिखो: सुबहानल्लज़ी असरा बेअबदेही लैलन मिनलमस्जिदिल हराम। क़ाज़ी साहब ने फ़रमाया। ये तो पन्द्रहवीं पारा के शूरू की आयत है। तूने कुरआन शरीफ़ किससे पढ़ा ? हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया कि मेरी वालिदा को 15 पारे याद थे। मैंने शिकमे मादर में तालीम रब्बानी से याद कर लिए थे। हज़रत क़ाज़ी साहब ने तख़्ती पर पूरी सूरत असरा लिख दी। कुत्ब साहब ने बाक़ी 15 पारा 4 यौम में याद कर लिए। इसके बाद क़ाज़ी साहब हज़रत कुत्ब को ज़ाहिरी व बातिनी तालीम फ़रमा कर सरकार ग़रीब नवाज़ के सुपुर्द करके तशरीफ़ ले गए।

रवायात मुतज़क्करा बाला अगरचे बज़ाहिर मुतज़ाद सी नज़र

आती है मगर सियरुल अक़ताब की इस इबारत से कि -

हज़रत क़ुत्ब साहब उलूमे दीनी की तहसील में सरगरमे अमल होकर थोड़े ही अरसे में आलिम व फ़ज़िले यगाना बन गए। ये मालूम होता है कि वाक़ेअ सानी अल्ज़्क्र पहला है और अव्वल अज़ज़िक्र बाद का। वल्लाह आलम बिस्सवाब।

हज़रत ख़्वाजा ख़िज़्र (अलै०) से मुलाक़ात

सुल्तानुल मशाइख़ हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही (रह०) ने बहवाले शैखुलइस्लाम हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंजशकर (रह०) फ़रमाया कि तालीम ज़ाहिरी से फ़राग़त के बाद जज़्बए तलाशे हक़ में हज़रत क़ुत्ब साहब ने वतन मालूफ़ को ख़ैरबाद कहा। यहाँ से रवाना होकर एक शहर में पहुँचे। चन्द रोज़ इक़ामत फ़रमाई। इस शहर में आबादी से कुछ फ़ासले पर एक मस्जिद थी जिसके सेहन में एक बड़ा उँचा मिनारा था। हज़रत ख़्वाजा को ज़माने तालीम में एक ऐसी दुआ मालूम हुई थी कि अगर इस दुआ को आख़िर शब में बाद अदाए दोगाना मिनारा पर चढ़ाया जाए तो हज़रत ख़िज़्र (अलै०) की ज़ियारत नसीब हो।

हज़रत क़ुत्ब साहब ने ये मौक़ा ग़नीमत तसव्वुर फ़रमाया। वह दुआ हस्बे तरकीब मिनारा पर पढ़ी और नीचे उतरकर इस इन्तिज़ार में रहे कि ख़्वाजा हज़रत से मुलाक़ात हो मगर मस्जिद में कोई शख़्स भी न आया। हज़रत क़ुत्ब साहब मस्जिद से बाहर आगए। एक बुज़ुर्ग नज़र आए। फ़रमाया इस सुनसान मैदान में तनेतन्हा क्या कर रहा है? हज़रत क़ुत्ब साहब ने दिली मुद्दआ बयान किया। उन्होंने फ़रमायाः क्या तुम दुनिया के तलबगार हो? अर्ज़ कियाः

नहीं। फिर फ़रमायाः किया तुम क़र्ज़दार हो? अर्ज़ किया कि नहीं। फ़रमायाः फिर तुम्हें हज़रत की क्यों तलाश है? वह भी तुम्हारी तरह सरगरदां फिर रहा है। इस शहर में एक बुज़ुर्ग यादे हक़ में मशग़ूल हैं। उन्होंने 7 मरतबा हज़रत से मिलने की कोशिश की मगर मुलाक़ात न हो सकी।

अभी ये गुफ़्तगू हो रही थी कि एक बुज़ुर्ग मस्जिद से निकलकर पास आकर खड़े हो गए। कहने लगे कि ये लड़का न दुनिया का तलबगार है न क़र्ज़दार है। इसे तो आपसे मुलाक़ात का इशतियाक़ है। हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब ये बात सुनकर समझे कि जो बुज़ुर्ग मुझसे बातें कर रहे थे वही हज़रत ख़िज़्र (अलै०) थे। हज़रत कुत्ब साहब अभी इनसे कोई बात न कहने पाए थे कि वह दोनों बुज़ुर्ग ग़ायब हो गए। हज़रत कुत्ब साहब भी वहाँ से चल दिए।

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को सरकारे दोआलम का इशारह

सबए सनाबिल में है कि हुज़ुर सरवरे काएनात (सल्ल०) 40 रोज़ तक हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के ख़्वाब में तशरीफ़ लाकर फ़रमाते रहे।

" ऐ मोईनुद्दीन! कुत्बुउद्दीन हमारा दोस्त है। तुम्हारा ख़लीफ़ा और सज्जादानशीं है। तुम्हें जो नेमतें सीना-ब-सीना अपने बुज़ुर्गों से मिली है उसे दे दो। इससे बेहतर तुम्हें कोई क़ाइम मक़ाम नहीं मिल सकता ।"

इधर बारगाहे नबुव्वत से हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को हिदायत मिल रही थी उधर हज़रत कुत्ब साहब पीर व मुर्शिद की तलाश में सरगरदाँ थे।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की आग़ोशे आतिफ़त

सियरुल अक़्ताब में है -

इसी दौरान जज़्बए तलाशे हक़ जलवागर हुआ। हज़रत क़ुत्ब साहब ओश से रवाना होकर बग़दाद शरीफ़ पहुँचे और इमाम अबुल लैस समरक़न्दी की मस्जिद में सुलतानुल आरेफ़ीन ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती सन्जरी की ख़िदमते अक़दस में शरफ़े हुज़ुरी हासिल किया।

इस मजलिस में हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सहरवरदी, शैख़ औहदउद्दीन किरमानी, शैख़ बुरहानुद्दीन चिश्ती, शैख़ मुहम्मद असफ़हानी औलियाए कामिलीन भी मौजूद थे।

हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब साहब ने दलीलुल-आरेफ़ीन की पहली मजलिस में मुरीद होने का ज़िक्र फ़रमाया है। हज़रत क़ुत्ब साहब फरमाते हैं -

बग़दाद शरीफ़ 5 रजब, सन् 514 हि०, जुमेरात

इस फ़क़ीर को इमाम अबुल लैस समरक़न्दी की मस्जिद में शहनशाहे मुल्क दस्तगाह सुलतानुल मशाइख़ हुज़ूर ग़रीब नवाज़ की दौलत पाबोसी नसीब हुई। देखते ही दिल ने कहा - " अक़ीदत पैदा हुई ।" उसी वक़्त बैअत के शरफ़ से मुशर्रफ़ हुआ। हज़रत असफ़हा ने चाहे टोपी कुलाहे फ़क़ीर के सर पर रखी। मैं ने इस नेमते उज़्मा के हासिल होने पर इज़्दे अक़दस जल्ल मजदहू का बहुत-बहुत शुकरिया अदा किया।

पीरे दस्तगीर की नज़रे करम से हज़रत क़ुत्ब साहब चन्द रोज़ में दर्जा कमाल को पहुँच गए। सरकार ग़रीब नवाज़ ने ख़िरक़ए ख़िलाफ़त अता फ़रमाया। सियरुल अक़्ताब में है कि हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब

साहब ने थोड़े ही अर्से में पीर रौशन ज़मीर की मख़सूस बरकत से दरजाते सुलूक तै कर लिए। उस वक़्त हज़रत कुत्ब साहब की उमर 17 साल थी, दाढ़ी तक नहीं निकली थी कि ख़िलाफ़त हासिल करके ख़िरका ज़ेबे तन फ़रमाया।

इसके बाद हज़रत कुत्ब साहब रियाज़ात व मुजाहदात में मशगूल हो गए। बाज़ तज़किरों में हज़रत कुत्ब साहब के मुरीद होने का वाक़िआ इस तरह मज़कूर है कि जब हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ असफ़हान तशरीफ़ ले गए और शैख़ महमूद असफ़हानी के पास क़ियाम फ़रमाया। उस वक़्त हज़रत कुत्ब साहब भी उनके पास तशरीफ़ फ़रमा थे। इन्हें मुर्शिद कामिल की तलाश थी। शैख़ महमूद असफ़हानी हालात का मुताला फ़रमा रहे थे कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ज़ियारत नसीब हुई। हज़रत कुत्ब साहब ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से बैअत हुए।

यह रिवायत अगरचे बाज़ मुस्तनद तज़किरों में मौजूद है मगर चूँकि हज़रत कुत्ब साहब बग़दाद शरीफ़ की मस्जिद इमाम अबुल लैस समरक़न्द ही में ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के दस्ते हक़ परस्त पर बैअत होना तसलीम फ़रमाया है इसलिए रिवायते अव्वल सहीह व मुतबर है।

मसालिकुस्सालिकीन में है कि हज़रत कुत्ब साहब ख़िलाफ़त से शरफ़ अन्दोज़ होकर एक मुद्दत तक हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग की ख़िदमते बाबरकत में रहकर मुजाहदात व रियाज़ात में मशगूल रहे और तकमीले मरातिबे सुलूक के बाद सैर व सियाहत फ़रमाई, मशाइख़े किबार से फ़ुयूज़े रूहानी हासिल किए।

दिल्ली की विलायत

गरीब नवाज़ (रह०) ने फ़रमाने रिसालत की तामील करते हुए हज़रत कुत्ब साहब को ख़िरक़ा ख़िलाफ़त अता फ़रमाकर दिल्ली की विलायत अता फ़रमाई।

हज़रत कुत्ब साहब की दिल्ली रवांगी और मुलतान में क़ियाम

कुछ दिनों बाद हज़रत कुत्ब साहब को मालूम हुआ कि पीर दस्तगीर हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती हिन्दुस्तान तशरीफ़ ले गए तो हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब भी हिन्दुस्तान रवाना हो गए। हिन्दुस्तान पहुँचकर मुलतान में क़ियाम किया और शैखुल इस्लाम हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया की ज़ियारत से शरफ़ अन्दोज़ हुए। सियरुल अक़ताब में है कि शैखुल इस्लाम हज़रत शैख़ ज़करिया मुलतानी कुद्दस सिर्रहू को हज़रत कुत्ब साहब की तशरीफ़आवरी की इत्तिला मिली तो खुद ब नफ़्से नफ़ीस हज़रत कुत्ब साहब के इसतिक़बाल के लिए तशरीफ़ ले गए और निहायत ताज़ीम व तकरीम के साथ उनको अपनी ख़ानक़ाह में ठहराया और दावतें कीं। हज़रत सैय्यद अशरफ़ जहाँगीर यमानी ने मकतूबात कुत्ब की हिन्दुस्तान में तशरीफ़ आवरी का तज़किरा करते हुए लिखा है कि हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब मुलतान की एक मस्जिद में फ़रोकुश थे। हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया ने नूरे बातिन से मालूम कर के एक ख़ादिम को दरयाफ़्ते हाल के लिए मस्जिद में भेजा। जिस वक़्त वह ख़ादिम आप की ख़िदमत में पहुँचा उस वक़्त हज़रत कुत्ब साहब वुज़ू कर रहे थे। रीशे मुबारक से जो पानी का क़तरा टपकता था उसको फ़रिश्ते नूर के तबक़

में रखकर आसमान पर ले जा रहे थे। वह ख़दिम भी अहले नज़र और साहिबे बातिन था।

ख़ादिम ने यह हाल देखकर अपना मुशाहदा हज़रत शैख़ के गोशगुज़ार किया। हज़रत शैख़ पालकी हमराह लेकर उस मस्जिद में तशरीफ़ लाए जहाँ हज़रत कुत्ब साहब इक़ामत गुज़ीं थे। हज़रत कुत्ब को पालकी में सवार करा कर अपनी ख़ानक़ाह में ब-सद-इज़्ज़त व इहतेराम ले आए और ख़ूब ख़ातिर मदारात की।

हज़रत शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी से दोस्ताना तअल्लुक़ात

मसालिकुस्सालिकीन में है कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से ख़िरक़ा ख़िलाफ़त हासिल करने के बाद हज़रत कुत्ब साहब ने मशाइख़े अस्र से भी इस्तेफ़ादा किया। क़ियामे बग़दाद के ज़माने में हज़रत शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी से आपके दोस्ताना तअल्लुक़ात हो गए और इस दरजा बाहमी मुहब्बत और इख़्लास बढ़ा कि जब हज़रत कुत्ब साहब हिन्दुस्तान रवाना हुए तो हज़रत शैख़ जलालद्दीन तबरेज़ी को आपकी जुदाई शाक़ हुई। तन्हा रहना पसन्द न किया। हज़रत शैख़ साहब भी हज़रत कुत्ब साहब के साथ हिन्दुस्तान रवाना हो गए। चुनांचे ये दोनो बुज़ुर्ग मुलतान पहुँचे और हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया की ख़ानक़ाह में फ़रोकश रहे।

हज़रत शैख़ जलालद्दीन तबरेज़ी के मुख़्तसर हालात

हज़रत शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ वली कामिल और उँचे दरजे के मशाइख़ में से थे। मशाइख़े चिश्त के तज़किरों में आपके मनाक़िब मज़कूर हैं। फ़वायदुलफ़वाद में सुलतानुल मशाइख़ हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन

औलिया महबूबे इलाही से मनकूल है कि हज़रत शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी हज़रत शैख़ अबू सईद तबरेज़ी के मुरीद थे। पीर व मुर्शिद के इन्तिक़ाल के बाद हज़रत शैख़ मौसूफ़ हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सहरवरदी की ख़िदमते बाबरकत में आ गए। आपने अपने शैख़ की इस क़द्र ख़िदमत की कि कोई मुरीद या गुलाम अपने पीर व आक़ा की ख़िदमत नहीं कर सकता। हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सहरवरदी हर साल सफ़रे हज्जे बैतुल्लाह किया करते थे। किबरे सिन्नी का आलम था। कुवा में ज़ोफ़ व इज़्मिहलाल रूनुमा हो चुका था इसलिए खाने-पीने में हज़रत शैख़ सहरवरदी को तकलीफ़ का सामना होता था। हज़रत शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी ने यह तरीक़ा इख़्तियार कर रखा था कि सफ़र में देगची और चुल्हा (और चुल्हे में आग) सर पर रखकर चलते थे। जिस जगह हज़रत सहरवरदी को इश्तिहाए मालूम होती फ़ौरन ताज़ा खाना पकाकर पेशे ख़िदमत कर देते थे।

हज़रत शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी को शैखुल इस्लाम हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया मुलतानी और कुत्बुल अक़ताब हज़रत ख़्वाजा कुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी से बेहद मुहब्बत थी। हज़रत शैख़ तबरेज़ी ने ज़माना क़याम कुत्बुल अक़ताब दिल्ली में क़ियाम फ़रमाया।

इस ज़माना में शैख़ नजमुद्दीन हज़रत शैखुल इस्लाम थे। शैखुल इस्लाम से भी आपकी मुलाक़ात हुई मगर शैखुल इस्लाम ने किसी अमरे शनीअ् में आपको मुत्तहम कर के बंगाल भेज दिया। एक रोज़ का वाक़िआ है कि हज़रत शैख़ तबरेज़ी दरया के किनारे तशरीफ़ फ़रमा थे, मोतक़िदीन का हुजूम था, उठे और वुज़ू कर के हाज़ेरीन की तरफ़ मुतवज्जह होकर फ़रमाया – "आओ दिल्ली के शैखुल इस्लाम के

जनाज़ह की नमाज़ पढ़ लो।" फ़रमाया दिल्ली के शैख़ुल इस्लाम ने तो हमें शहर बदर किया ही था हमारे शैख़ ने उसे दुनिया ही से रुख़्सत कर दिया।

सुलतानुलमशाइख़ हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया ने फ़वायदुलफ़वाद में तहरीर फ़रमाया है कि देहली में कुछ रोज़ क़ियाम के बाद जब हज़रत शैख़ तबरेज़ी (रह०)रवाना हुए तो आपकी ज़बाने मुबारक पर ये कलिमात थे कि "मैं जब देहली आया था ज़रे ख़ालिस था। अब चाँदी बन गया हूँ। आगे ख़ुदा जाने क्या बन जाऊँगा।"

हज़रत शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी (रह०) ने क़स्बा बदायूँ में भी क़ियाम फ़रमाया था। फ़वायदुलफ़वाद में एक वाक़िआ लिखा है कि हज़रत शैख़ तबरेज़ी (रह०) एक रोज़ अपने मकान की दहलीज़ पर बैठे हुए थे कि आपके सामने एक मर्द दहीफ़रोश सर पर दही का मटका रखे गुज़रा। ये दहीफ़रोश डाकुओं के गिरोह का एक फ़र्द था। दहीफ़रोश की नज़र ज्योंही हज़रत शैख़ के जमाले अनवर पर पड़ी बेताब व बेक़रार हो गया। हज़रत शैख़ ने भी अपनी एक तेज़ नज़र से उसके दिल की दुनिया ज़ेरोज़बर कर दी। वह दहीफ़रोश दीने मुहम्मदी के सदक़ात का एतराफ़ करके मुसलमान हो गया। हज़रत शैख़ ने उसका इस्लामी नाम अली रखा। फिर अपने घर वापिस जाकर कुछ ज़र नक़द था हज़रत शैख़ के सामने ला कर रख दिया। हज़रत शैख़ ने फ़रमाया कि तुम्हारी नज़र मैंने क़बूल कर ली मगर उसे तुम अपने ही पास रखो। जिस वक़्त और जिस तरह ख़र्च करने का हुक्म दूँ उसकी तामील करना। हज़रत शैख़ के हाँ हाजतमन्दों का मजमा लगा रहता था। हज़रत शैख़ के हुक्म के मुताबिक़ अली

हाजतमन्दों को रुपये देते रहते थे।

फ़वायदुलफ़वाद में है कि एक मरतबा शैख़ शहाबुद्दीन सहरवरदी (रह०) सफ़रे हज्ज से वापिस तशरीफ़ लाए। अहलिय बग़दाद आपके ज़ियारत के लिए हाज़िर हुए। हर शख़्स ने कुछ नक़्द या जिन्स की सूरत में पेश किया। एक ग़रीब बुढ़िया भी हाज़िर ख़िदमत हुई और अपनी फटी-पुरानी चादर की गिरह खोलकर एक दिरहम हज़रत शैख़ की ख़िदमत में नज़र किया। हज़रत शैख़ ने इस दिरहम को सबसे नीचे रख कर उसके उपर तमाम तोहफ़े तहाइफ़ रख दिए और हाज़िरीन को इरशाद फ़रमाया : जिस शख़्स को जो चीज़ पसन्द हो उठा लो। हाज़िरीन ने हस्बे पसन्द चीज़ें उठा लीं। हज़रत शैख़ सहरवरदी (रह०) ने शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी (रह०) को मुख़तिब कर के फ़रमाया : तुम भी तो कोई चीज़ लो। शैख़ जलालुद्दीन ने बुढ़िया का पेश किया हुआ दिरहम उठा लिया। हज़रत शैख़ सहरवरदी (रह०) ने फ़रमाया : वाह भाई ! तुमने तो सभी कुछ उठा लिया। हज़रत शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी ने बंगाल में विसाल फ़रमाया था, वहीं आपका मज़ारे मुबारक है।

मुख़्तसर हालात शैख़ुलइस्लाम बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी (रह०)

हज़रत शैख़ुलइस्लाम सन् 575 हिजरी में क़िला कोट करोर मुल्तान में पैदा हुए थे। 12 साल की उमर में कुरआन शरीफ़ क़िरअत सबआ के साथ हिफ़्ज़ कर लिया था। खुरासान और बुख़ारा के अकाबिर उलमा से तकमीले इल्मे दीन फ़रमाई और बहुत से मशाइख़ और औलियाए किराम से इकतिसाबे फ़ैज़ किया। इसके बाद हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत से शर्फ़ अन्दोज़ हुए।

5 साल हरमे नबी में हाज़िर रहे और मौलाना कमालुद्दीन मोहम्मद यमनी मुहद्दिस से इल्मे हदीस पढ़कर सनदे फ़ज़ीलत हासिल की, इसके बाद बैतुलमक़दिस में हाज़िर होकर अम्बिया (अ०) के पुरनूर मज़ारात की ज़यारत से शरफ़याब होकर बग़दाद शरीफ़ तशरीफ़ लाए। बग़दाद शरीफ़ में शैख़ुश्शुयूख़ हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सहरवरदी की ज़ियारत व बैअत से मुस्तफ़ीद हुए। 18 रोज़ क़ियाम किया। एक शब शैख़ुश्शुयूख़ की ख़ानक़ाह में आलमे रूया में हज़रत सरवरे आलम (सल्ल०) एक वसीअ ऐवान में तख़्त पर जलवा अफ़रोज़ नज़र आए। हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) के दाएँ जानिब हज़रत शैख़ुश्शुयूख़ ईस्तादा थे। उसी मकान में एक खूँटी पर चन्द नफ़ीस ख़िरक़े आवेज़ाँ देखे। हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) ने फ़रमाया: शहाबुद्दीन! बहाउद्दीन ज़करिया को बुलाओ। शैख़ ने ख़्वाजा का हाथ पकड़कर हुज़ूर की क़दम बोसी के लिए पेश किया तो हुज़ूर ने फ़रमाया : शहाबुद्दीन! इन ख़िरक़ों में से एक ख़िरक़ा बहाउद्दीन को पहनाओ। शैख़ ने अपने दस्ते मुबारक से हज़रत ख़्वाजा को ख़िरक़ा पहनाया।

ख़्वाजा साहब सुबह हस्बे मामूल बेदार हुए। देखा तो वही मकान है जो ख़्वाब में देखा था। इसी तरह खूँटी पर चन्द ख़िरक़े आवेज़ाँ नज़र आए। हज़रत शैख़ ने वही ख़िरक़ा जो ख़्वाब में देखा था अपने दस्ते मुबारक से ख़्वाजा साहब को पहनाया और फ़रमाया: बहाउद्दीन! ये ख़िरक़े हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) की अमानत हैं। जिसको हुज़ूर हुक्म देते हैं पहना देता हूँ। हुज़ूर के मन्शा के बग़ैर मेरी कहाँ मजाल है कि किसी को ख़िरक़ा दे सकूँ।

हज़रत शैख़ की ख़ानक़ाह में बकसरत औलिया अल्लाह इबादत व रियाज़त में मशगूल थे। सबको शक हुआ कि हम एक मुद्दत से ख़ानक़ाह में हाज़िर हैं। हज़रत शैख़ ने हमपर नज़रे करम नही फ़रमाई। ये हिन्दुस्तानी बुज़ुर्ग बहुत ही खुश नसीब हैं कि वह हफ़्ते बाद उसे ख़िरक़ा ख़िलाफ़त मिल गया। हज़रत शैख़ ने उन हज़रात को दिलासा और तसल्ली देते हुए फ़रमाया कि तुम लोगों की मिसाल गीली लकड़ी की है। बहाउद्दीन ख़ुश्क लकड़ी की मानिन्द है। इश्क़े इलाही की आग दिखाई तो भड़क उठा। तुम लोगों में अभी आतिशे मुहब्बत से भड़क उठने की सलाहियत पैदा नहीं हुई।

हज़रत ख़्वाजा साहब बग़दाद शरीफ़ से मुल्तान की क़ुत्बियत पर फ़ाएज़ होकर तशरीफ़ लाए। मख़लूक़े ख़ुदा हिदायत हासिल करने चारों तरफ़ से जमा हो गई और मुल्तान में रूहानी फ़ुयूज़ो बरकात का समुन्द्र मौज मारने लगा। जिस वक़्त हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन मुल्तान तशरीफ़ लाए, वहाँ के अकाबिर को हज़रत ख़्वाजा की तशरीफ़ आवरी गिराँ गुज़री। ज़बान से तो कुछ न कह सके। एक प्याला दूध से भरा हुआ आपकी ख़िदमत में भेजा जिसका मतलब ये था कि शहर मुल्तान पहले ही से ख़ासाने ख़ुदा का मसकन है। अब यहाँ किसी नौवारिद की गुंजाइश नहीं। दूध के प्याले की तरह ये शहर बुज़ुर्गाने दीन से भरा हुआ है। हज़रत ख़्वाजा साहब को नूरे बातिन से मशाइख़े मुल्तान के मफ़हूम का इन्केशाफ़ हो गया तो आपने इस दूध के प्याले पर एक गुलाब का फूल रखकर वापिस कर दिया जिसका मतलब यह था कि मेरा वजूद मुल्तान में गुलाब के फूल की मिसाल है। मैं किसी पर बार नहीं हूँ।

हज़रत ख़्वाजा बहाउद्दीन ज़करिया की ज़ाते गिरामी से बेशुमार करामात ज़ुहूर में आईं। एक रोज़ हज़रत मख़दूम जहानियाँ जहानेगश्त (रह०) ख़ानक़ाह हज़रत ख़्वाजा में मशगूले इबादत व रियाज़त थे। गर्मी का सख़्त मौसम था। आपको अपने वतन बुख़ारा की सर्दी और बर्फ़बारी याद आई। ये साख़्ता मुँह से निकला: "मुल्तान में बुख़ारा की वह खुन्की और ज़ालाबारी कहाँ।" हज़रत ख़्वाजा साहब पर मख़दूम साहब के इज़्तरारेक़ल्ब का हाल मुन्कशिफ़ हुआ। हुजरा से बाहर तशरीफ़ लाए और ख़ादमाने दरगाह को हुक्म दिया कि ख़ानक़ाह के सेहन से चटाइयाँ उठा लो। झाड़ू देकर साफ़ कर दो। ख़ुद्दाम ने तामीले हुक्म की। फ़ौरन ही आसमान पर बादल छा गए, ज़ालाबारी शुरू हो गई। हज़रत सैय्यद जलालुद्दीन बुख़ारी और दिगर औलियाए किराम ने ख़ूब लुत्फ़ के साथ सर्द पानी पिया। ये ज़ालाबारी सिर्फ़ हुदूदे ख़ानक़ाह तक महदूद थी। शहर में बारिश की एक बुन्द या ओला का एक दाना भी नहीं गिरा।

शाहाने देहली की तरफ़ से आपको शैखुलइस्लाम का ख़िताब मिला था। हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकरी का हज़रत ख़्वाजा साहब के साथ गहरा रिश्तए मुवद्दत व तअल्लुक़ था। हज़रत बाबा साहब, अजोधन में ज़िक्र व मुराक़बा में मशगूल थे। एकाएक आप बेहोश हो गए, जब बहुत देर हो गई तो खुलफ़ा को परेशानी लाहिक़ हुई। हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब का ख़िरक़ा मुबारक आप पर डाला गया। बड़ी देर बाद बाबा साहब को होश आया तो फ़रमाया: मेरे भाई ख़्वाजा बहाउद्दीन का विसाल हो गया है। हज़रत ख़्वाजा साहब की तारीख़ विसाल 17 सफ़र, सन् 666 हि० है। मज़ार शरीफ़ मुलतान में ज़ियारत गाहे आलम है।

हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब ने मुल्तान को मुग़लों की दस्तबुर्द से बचा लिया

एक रोज़ हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया और शैख़ जलालुद्दीन तबरेजी - ये तीनों हज़रात ख़ानक़ाह में तशरीफ़ फ़रमा थे कि सुलतान नासिरुद्दीन क़बाचा वालिए मुलतान दौड़ा हुआ हाज़िर होकर इमदाद का ख़्वास्तिगार हुआ। मुग़लों ने क़िला मुलतान का मुहासरा कर लिया था।

हज़रत ख़्वाजा साहब ने एक तीर पर कुछ पढ़कर दम करके देते हुए फ़रमाया कि ये तीर शाम के वक़्त दुश्मन के लश्कर की तरफ़ फेंक देना। सुलतान नासिरुद्दीन ने हस्बे हिदायत तामीले हुक्म की। सुबह हुई तो मैदान साफ़ था या तो मुग़ल मुहासरा किए पड़े थे या क़िला के आस-पास किसी मुग़ल का नाम व निशान भी मौजूद न था। सुलतान नासिरुद्दीन ने खुदा का शुक्र अदा किया और हाज़िरे ख़ानक़ाह होकर हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब से क़दम बोस हुए।

हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब से मुलतान में क़ियाम की दरख़्वास्त

सुल्तान नासिरुद्दीन ख़्वाजा कुत्ब साहब से वालिहाना व अक़ीदतमन्दाना अन्दाज़ में अर्ज़ किया कि अगर हुज़ूर मुलतान में क़ियाम फ़रमाएँ तो हमारे लिए खुश्नसीबी का बाइस होगा। हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब ने जवाब दिया कि मैं बिला इजाज़त पीर व मुर्शिद के किसी जगह क़ियाम नहीं कर सकता। यहाँ मेरे भाई बहाउद्दीन शाहे विलायत हैं। हक़ ताला ने उनके लिए यही जगह मुक़र्रर फ़रमाई है। मैं यहाँ किसी हाल में क़ियाम नहीं कर सकता।

शम्मए कुत्बियत पर परवानों का हुजूम

मुलतान मे हज़रत कुत्ब साहब पर लोग परवानों की तरह निसार होने लगे। नूरे हिदायत हासिल करने लगे। बहुतसे लोगों ने आपसे बैअत की दरख़्वास्त की लेकिन आपने किसी को बैअत नहीं किया। फ़रमाया कि ये इलाक़ा मेरे भाई मख़दूम बहाउद्दीन का है, मुझे आपके इलाक़े में किसी शख़्स को बैअत करना ज़ेबा नहीं।

अल-ग़रज़ हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब मुलतान से रवाना हो गए। आपके हमराह एक जमात मुलतान के लोगों की थी। हाँसी पहुँचकर उनको मुरीद किया और हाँसी से चलकर रौनक़ अफ़रोज़ देहली हुए।

हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब का अरीज़ा सरकार ग़रीब नवाज़ में

हाँसी पहँचकर हज़रत कुत्ब साहब ने एक अरीज़ा हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ख़िदमत में इरसाल किया और ख़ुद देहली रवाना हो गए। हज़रत कुत्ब साहब ने तहरीर फ़रमायाः

तुम देहली में ही क़ियाम करो। हक़ ताला ने तुम्हें देहली की विलायत अता फ़रमाई है। रूहानी मुलाक़ात तो हर वक़्त है ही, इन्शाअल्लाह मैं चन्द रोज़ बाद तुम्हारे पास आऊँगा, मुलाक़ात ज़ाहिरी भी हो जाएगी।

इस हुक्मनामा के मौसूल होते ही हज़रत कुत्ब साहब मुस्तक़िल तौर पर देहली में इक़ामत गुज़ीं हो गए।

हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब का देहली में शाहाना इस्तिक़बाल

मसालिकुस्सालिकीन में बहवालए सियरुलआरिफ़ीन मज़कूर है

कि जब आप देहली रौनक़ अफ़रोज़ हुए उस वक़्त सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश व मुरीद ख़लीफ़ा हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ औरंग शाही पर मुतमक्किन थे। सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश एक फ़ौजी दस्ते के साथ हज़रत क़ुत्ब साहब के इस्तिक़्बाल के लिए शहर से बाहर आए और शुक्रे खुदावन्दी बजा लाकर इल्तमास किया कि आप शहर में क़ियाम फ़रमाएँ लेकिन आपने मन्जूर न किया बल्कि अपनी रिहाइश के लिए मौज़ा कीलोखड़ी जो जमना के किनारे वाक़े था पसन्द फ़रमाया। उस ज़माना में कीलोखड़ी उस मक़ाम पर आबाद था जहाँ हुमायूँ बादशाह का मक़बरा वाक़े है। इस वक़्त दिल्ली के शैख़ुल इसलाम हज़रत शैख़ जमालुद्दीन मुहम्मद बिस्तामी थे, वह आपके बड़े मोतक़िद थे।

सियरुल अक़ताब में है रफ़ता-रफ़ता तमाम शहर आपका मोतक़िद हो गया। शहर के ख़्वास के इलावह अवाम का एक मजमा हर वक़्त लगा रहता था। हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब साहब इस भीड़-भाड़ से बहुत घबराए। जी चाहता था कि किसी दूसरी जगह जाकर गोशानशीनी इख़्तियार कर लें मगर बग़ैर इजाज़त पीर व मुर्शिद ऐसा नहीं कर सकते थे।

लोगों की अक़ीदत यहाँ तक बढ़ी कि हज़रत क़ुत्ब साहब के पास हर वक़्त लोगों का मेला रहने लगा। खुद बादशाह सलामत हफ़ता में दो बार ज़ियारत के लिए हाज़िर होते थे।

हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब साहब का काशानए विलायत

सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश (बादशाहे देहली) का महल महरौली में था। उस ज़माने में दिल्ली उसी मक़ाम पर आबाद थी जहाँ महरौली वाक़े है। महरौली से कीलोखिड़ी का फ़ासला 5 कोस था। लोगों और खुद

बादशाह को इतनी दूर आने-जाने में तकलीफ़ होती थी। बादशाह सलामत ने निहायत इज़्ज़त व इन्किसारी से अर्ज़ किया कि शहर से इतनी दूर आने-जाने में ख़ादिम को परेशानी होती है, उमूरे सलतनत में हरज वाक़े होता है, आम लोगो को भी आने-जाने में तकलीफ़ होती है इसलिए आप अज़ राहेकरम शहर में तशरीफ़ ले चलें। हज़रत कुत्ब साहब ने अज़ राहे इनायत सुल्तान मौसूफ़ की दरख़्वास्त क़बूल फ़रमाइ और शहर में तशरीफ़ ले जाकर मस्जिद अइज़्ज़ुद्दीन के क़रीब बूदोबाश इख़्तियार फ़रमाई। लाडो सराय के जंगल में शाही इमारात के क़रीब हज़रत साहब की हवेली मस्कूना के निशानात मौजूद थे जहाँ लोग ज़ियारत के लिए जाया करते थे। अब मालूम नहीं वह निशानात मौजूद हैं या नहीं।

उन्हीं दिनों हज़रत मौलाना बदरुद्दीन नागौरी देहली में तशरीफ़ फ़रमा थे। क़ाज़ी साहब से हज़रत कुत्ब साहब की देरीना मुलाक़ात थी। देहली में रौनक़ अफ़रोज़ी के बाद हज़रत कुत्ब साहब से अक़ीदत और मुहब्बत में और भी इज़ाफ़ा हो गया।

हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी को हज़रत कुत्ब साहब की ताज़ीम व इजलाल का हुक्म

सियरुलअक़्ताब में है कि देहली में हज़रत कुत्बुलअक़्ताब की तशरीफ़ आवरी से क़बल हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी ने आलमे मुआमला में देखा कि देहली में आफ़ताबे आलम ताब तुलू हुआ है जिससे तमाम ममलिकत मुनव्वर और ताबाँ है और वह हज़रत क़ाज़ी साहब के मकान में उतर आया है और वह आफ़ताब क़ाज़ी साहब से कह रहा है कि अब मैं तुम्हारे मकान में ही रहूँगा। हज़रत क़ाज़ी साहब

यह ख़्वाब देखकर हैरान थे। देखो इस ख़्वाब का क्या नतीजा ज़ुहूर में आता है, लेकिन यह बात उनके दिल में ज़रूर थी कि देहली में अनक़रीब कोई वलीए कामिल आने वाला है और वह मेरे मकान में क़ियाम पज़ीर होंगे। इस ख़्वाब को देखे हुए दो रोज़ न गुज़रे थे कि हज़रत कुत्ब साहब देहली तशरीफ़ ले आए और एक भटियारे के मकान में जो हज़रत का मुतक़िद था क़ियाम पज़ीर हुए। उसी रोज़ क़ाज़ी साहब को ख़्वाब में हुक्म हुआ कि हमारा दोस्त इस शहर में आया हुआ है फुलाँ भटियारे के मकान में ठहरा हुआ है, जल्दी जाओ उन्हें अपने घर ले आओ, तुम्हारे यहाँ क़याम करेंगे। हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन फ़ौरन नंगे पाँव भटियारे के मकान में पहुँचे और हज़रत साहब को निहायत अदब व इहतिराम के साथ अपने मकान पर ले आए।

सियरुलअक़ताब में है कि उस वक़्त हज़रत कुत्बुद्दीन साहब की उमर 17 साल थी लेकिन इस कमसिनी के बावजूद बेहद कमालात के हामिल थे।

हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी अगरचे हज़रत कुत्बुद्दीन साहब के उस्ताद थे लेकिन क़ाज़ी साहब ने हज़रत कुत्बुद्दीन साहब की वह ख़िदमत और अदब व इहतेराम किया कि लोग हैरान होकर कहा करते कि ख़्वाजा कुत्बुद्दीन तो तमाम मशाइख़ के कुत्ब हैं और क़ाज़ी हमीदुद्दीन हज़रत कुत्ब साहब की बाल बराबरी भी नहीं कर सकते। इस ख़िदमत के सिले में बावजूदे कि क़ज़ी साहब अपने पीरो मुर्शिद से फ़ैज़ाने नेमत हासिल कर चुके थे। हज़रत कुत्ब ने भी इनको नेमते रूहानी और ख़िलाफ़त अता फ़रमाई।

मनसबे शैख़ुलइस्लाम की पेशकश

ख़्वाजा कुत्ब साहब का क़बूल करने से इन्कार

कुछ अरसे बाद सुल्तान शम्सुद्दीन अलतमश ने आपको शैख़ुलइस्लाम का मनसब पेश किया मगर आपने क़बूल करने से इन्कार फ़रमा दिया। हज़रत कुत्ब साहब के इन्कार के बाद शैख़ नजमुद्दीन सुग़रा देहली के शैख़ुलइस्लाम बने।

शैख़ नजमुद्दीन सुग़रा का शैख़ुलइस्लामी का घमण्ड

सियरुलआरेफ़ीन में है कि शैख़ नजमुद्दीन सुग़रा बड़ी अच्छी आदत और अख़लाक़ के आदमी थे मगर शैख़ुलइस्लाम का ओहदा मिलते ही उनकी हालत बदल गई। दुनियावी जाह व जलाल पर फ़रेफ़ता हो गए। और जो खुबियाँ उनमें शैख़ुलइस्लाम बनने से पहले थीं शैख़ुलइस्लाम बनते ही रफ़ूचक्कर हो गईं।

हज़रत कुत्ब साहब की तरफ़ देहली में तशरीफ़ आवुरी के बाद रुजूआते ख़ल्क़ था। अवाम व ख़वास हज़रत कुत्ब साहब पर फ़िदा व फ़रेफ्ता थे। शैख़ नजमुद्दीन सुग़रा ने भी यही ख़्याल किया था कि शैख़ुलइस्लाम बनने के बाद मैं भी मरजए ख़लायक़ बन जाऊँगा मगर शैख़ुलइस्लामी के बाद किसी ने भी उनको मुँह न लगाया। वह रस्मी तौर पर शैख़ुलइस्लाम ज़रूर थे मगर कोई उनको पूछता तक न था। इसके बरअक्स हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब की ये हालत थी कि लोग अपना घरबार छोड़कर आपकी गुलामी बाअस सद इफ़तिख़ार व सआदत दारैन तसव्वुर करते थे।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ (रह०) देहली में

शैख़ नजमुद्दीन सुग़रा ये हाल देखकर रश्क व हसद से अन्दर ही अन्दर सुलगने लगे और नौबत यहाँ तक पहुँची कि जब हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ देहली तशरीफ़ लाए और हज़रत कुत्ब साहब की ख़ानक़ाह में क़ियाम फ़रमाया तो हज़रत कुत्ब साहब ने बादशाह सलामत को आपकी तशरीफ़ आवरी की इत्तिला देनी चाहिए मगर हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने मना फ़रमा दिया लेकिन इसके बावजूद बादशाह और अवाम व ख़्वास को आपकी तशरीफ़ आवरी की इत्तिला हो गई। लोग बड़ी तादाद में ज़ियारते हुज़ूरवाला के लिए आने लगे। बावजूद कि शैख़ नजमुद्दीन सुग़रा से हुज़ूर ख़्वाजा ग़रीब नूरी की ख़ुरासान से मुलाक़ात थी मगर वह हज़रत कुत्ब साहब पर रश्क व हसद की वजह से ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से मिलने न आए। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ (रह०) ख़ुद शैख़ुलइस्लाम से मिलने तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त शैख़ुलइस्लाम अपने मकान का चबूतरा तामीर करा रहे थे। शैख़ुलइस्लाम ने न हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का इस्तिक़बाल किया व ख़ुशआमदीद कहा और न ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की तरफ़ अच्छी तरह मुल्तफ़ित हुए।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फ़रमाया कि मुझसे मिलने देहली के मशाइख़े किबार उलमा और ख़्वास व अवाम आए मगर तुम न आए। तमने शैख़ुलइस्लाम के घमण्ड में पुराने दोस्तों को भी भुला दिया। शैख़ुलइस्लाम नजमुद्दीन सुग़रा ये बात सुनकर बहुत शर्मिन्दा हुए और हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के क़दमो मे सर रखकर माज़रत करने लगे और कहने लगे कि में जैसा आपका मुख़लिस था वैसा ही अभी भी हूँ मगर कुत्ब साहब ने मेरी क़दरो मन्ज़िलत बरबाद कर दी। जब से कुत्ब साहब देहली तशरीफ़ लाए हैं ख़िलक़त उन्ही की तरफ़ रुजू

है, मैं तो बराए नाम शैखुलइस्लाम हूँ, मुझे तो कोई पूछता तक नहीं।

यह बात हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ को सख़्त नागवार गुज़री। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने कुत्ब साहब से फ़रमाया -

बाबा कुत्ब साहब तुम मेरे साथ चलो। यहाँ के बाज़ आदमी तुम्हारे देहली में क़ियाम से नाराज़ हैं। ये फ़रमाकर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ शैख़ नजमुद्दीन सुग़रा के मकान से वापिस आ गए। शैखुलइस्लाम ने हर चन्द मन्नत व समाजत की। खाना तैयार हो रहा है, खाना खाकर जाना मगर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने उनकी कोई बात न सुनी।

हज़रत कुत्ब साहब की अजमेर को रवांगी और मख़लूक़े खुदावन्दी का वावीला

हज़रत कुत्ब साहब से अहालियाने देहली को बेपनाह अक़ीदत व मुहब्बत थी। यह ख़बर सुनकर बेताब हो गए। जिस वक़्त हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ हज़रत कुत्ब साहब को हमराह लेकर बक़स्दे अजमेर रवाना हुए तो तमाम शहर में यक्बारगी शोर व मातम और वावीला बरपा हो गया। लोग दीवानावार आपके पीछे रवाना हो गए। हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब से अवाम व ख़्वास की अक़ीदत व मुहब्बत का यह आलम था कि लोग हज़रत कुत्ब साहब के क़दमों के नीचे की ख़ाक तबर्रुक उठा कर सर आँखों पर मल रहे थे और हज़रत कुत्ब साहब के पीछे-पीछे रोते चले जा रहे थे।

शम्सुद्दीन अल्तमश की बेताबी और ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से इल्तिजा

सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश को ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की और हज़रत कुत्ब साहब की रवांगी की इत्तिला हुई तो आप दौड़े हुए ख़्वाजा

ग़रीब नवाज़ की ख़िदमत में हाज़िर होकर क़दम बोस हुए और ब कमाले मिन्नत व ज़ारी अर्ज़ किया: हुजूर ! कुत्ब साहब को अजमेर न ले जाएं, बराए खुदा यहीं रहने दें।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ अहालियाने देहली की अक़ीदत और शयुफ़तगी मुशाहदा फ़रमा चुके थे, सुल्तान की दरख़्वास्त को मन्जूर करते हुए फ़रमाया:

"बाबा कुत्बुद्दीन! तुम देहली ही में रहो, तुम्हारे चले जाने से सारे परेशान हो जाएंगे, यह शहर तुम्हारे सपुर्द है।"

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के फ़रमान से हज़रत कुत्ब साहब वापस तशरीफ़ ले आए।

मसालिकुस्सालिकीन में है कि सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी के मुरीद थे। तालीम व तरबियत हुजूर ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फ़रमाई थी लेकिन इसके बावुजूद सुल्तान मौसूफ़ को हज़रत कुत्ब साहब के साथ बेहद अक़ीदत और मुहब्बत थी। अजब नहीं कि हज़रत कुत्ब साहब से भी इरादत हासिल हो। चूँकि हज़रत कुत्ब साहब के खुलफ़ा में सुल्तान मौसूफ़ का भी नाम शामिल है इसलिए ख़याल यह है कि सुल्तान मौसूफ़ आख़िर वक़्त में हज़रत कुत्ब साहब से बैअत हो गए होंगे।

हौज़े शम्सी की तामीर

सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश को एक मुद्दत से आरज़ू थी कि शहर के नज़दीक पानी का एक हौज़ तामीर कराया जाए। उस ज़माने में शहर में पानी की क़िल्लत थी। एक रोज़ सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश ने हुजूर सरवरे काएनात (सल्ल०) को ख़्वाब में देखा कि आप एक

मक़ाम पर घोड़े पर सवार हैं। फ़रमा रहे हैं :-ऐ शम्सुद्दीन! इस मक़ाम पर हौज़ तामीर कर।

सुल्तान मौसूफ़ ने ख़्वाब से वेदार होकर फ़ौरन एक ख़ादिम हज़रत साहब के पास भेजा कि मैंने आज रात एक ख़्वाब देखा है अगर इर्शाद हो तो हाज़िर होकर अर्ज़ करूँ।

हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया कि बादशाह से कह देना कि "हुज़ूर (स०) ने जिस जगह हौज़ तामीर करने का हुक्म दिया है मैं उस जगह जा रहा हुँ, तुम आ जाओ।"

सुल्तान शम्सुद्दीन घोड़े पर सवार होकर रवाना हो गया। पता चला कि हज़रत कुत्ब साहब फ़लाँ जगह रौनक़ अफ़रोज़ हैं और तुम्हारी आमद के मुन्तज़िर हैं। सुल्तान घोड़ा दौड़ाता हुआ हज़रत कुत्ब साहब के पास पहुँच गया। हज़रत कुत्ब साहब नमाज़ में मश्गूल थे। नमाज़ से फ़ारागत के बाद सुल्तान मौसूफ़ ने जिस जगह हुज़ूर (स०) को तशरीफ़ फरमा ख़्वाब में देखा था वहाँ घोड़े के सुम के निशान मौजूद थे। पानी जारी था सुल्तान शम्सुद्दीन ने उसी जगह हौज़ तामीर करवा दिया जो आज तक मौजूद है और ऐन उस मक़ाम पर जहाँ घोड़े के सुम के निशान देखे थे एक बुर्ज़ तामीर करवाया। अहले बातिन आज भी उस मक़ामे मुक़द्दस की ज़ियारत कर के फ़ुयूज़ व बरकात जनाब रिसालत मआब (स०) से मुस्तफ़ीद होते हैं।

सुल्तानुश्शुअरा हज़रत अमीर ख़ुसरू ने अपनी किताब क़िरनुस्सअदैन में इस हौज़ की बहुत तारीफ़ तहरीर फ़रामाई है। इस हौज़ के किनारे अक्सर औलिया अल्लाह मदफ़ून हैं। हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब अक्सर इस हौज़ के किनारे इबादत में मश्गूल रहा करते थे। इसी हौज़ के किनारे हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब का दरबारे

कुतबिय्यत आरास्ता होता था। दरबारियों में हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी, ख़्वाजा महमूद मोइना दोज़, शैख़ बदरुद्दीन ग़ज़नवी, शैख़ ताजुद्दीन मुनव्वर खुसूसियत से क़ाबिले ज़िक्र हैं।

इसी हौज़ के किनारे हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब से मुलाक़ात के लिए रिजालुलग़ैब आया करते थे।

मसालिकुस्सालिकीन में है कि एक रोज़ एक शुत्रसवार नीले रंग का लिबास ज़ेबेतन किए हुए उस हौज़ पर आया। गुसुल कर के दोगाना अदा किया। उस वक़्त उस मस्जिद में जो सुल्तान शम्सुद्दीन के लंगरख़ने के क़रीब लबे हौज़ वाक़े थी, बुज़ुर्गाने मौसूफ़ुस्सद्र मौजूद थे। नमाज़ के बाद उस बुज़ुर्ग ने ब आवाज़े बुलन्द दरयाफ़्त किया कि इस मस्जिद में कौन-कौन साहब बैठे हुए हैं। शैख़ ताजुद्दीन मुनव्वर ने जवाब दिया कि चन्द फ़ुक़रा यादे इलाही में बैठे हैं।

उस सवार ने कहा कि मेरा सलाम ख़्वाजा कुत्ब साहब और शैख़ मुहम्मद अता क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी को पहुँचा दो और उनसे कह दो कि ख़ादिमे ख़ास अबू सईद दिमिश्क़ी ने सलाम अर्ज़ किया है। जिस वक़्त हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब ने अबू सईद दिमिश्क़ी का नाम सुना दरवेशों के हमराह मुलाक़ात के लिए दौड़े। उस जगह पहुँचे मगर वहाँ कोई मौजूद न था। हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमायाः अबू सईद रिजालुलग़ैब में से हैं।

हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया है कि हौज़े शम्सी का किनारा और ईदगाह कोहना की पुश्त यह दोनों मक़ामात इजाबते दुआ के है, यहाँ जो दुआ की जाती है फ़ज़्ले खुदावन्दी से क़बूल होती है बशर्ते कि रात शब-बेदारी और इबादते खुदावन्दी में बसर की हो।

महफ़िले समा पर उलमाए ज़ाहिर चिराग़ पा

सियरुलअक़्ताब में है कि सुल्तानुत्तारिकीन हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी (रह०) हज़रत ख़्वाजा कुत्बुलअक़्ताब को तालीम दे कर देहली तशरीफ़ ले आए थे। रास्ता में क़फ़स परिन्दे का गाना सुना। उस परिन्दे की चोंच में 12 सौ सुराख़ होते हैं। जिस वक़्त इस परिन्दे पर मस्ती का आलम तारी होता है तो चोंच के सुराख़ों से क़िस्म-क़िस्म की आवाज़ें निकलती हैं।

हज़रत क़ाज़ी साहब उस परिन्दे का गाना सुनकर मस्त व बेखुद हो गए, वज्द तारी हो गया, बहुत देर तक ज़ौक़ की हालत तारी रही। इफ़ाक़ा के बाद हज़रत ख़िज़्र तशरीफ़ लाए उन्होंने फ़रमाया हमीदुद्दीन यह समाअ् जो तुमने आज सुना बड़े-बड़े औलिया और मशाइख़ ने सुना है। क़ाज़ी साहब ने कहा कि मैं तो समाअ् का आशिक़ हूँ, अगर क़व्वाल मयस्सर आ जाए तो समाअ् सुनूँ हज़रत ख़िज़्र (अलै०) ने फ़रमाया जबसे हज़रत ख़्वाजा जुनैद बग़्दादी ने समाअ् को तर्क किया है उस वक़्त से यह हालत है कि अगर कोई शख़्स समाअ् सुनता है उसको दार पर चढ़ा दिया जाता है। ख़लीफ़ए वक़्त ने क़व्वालों का बैतुलमाल से वज़ीफ़ा मुक़र्रर कर दिया है। अब क़व्वाल किसी महफ़िले समाअ् में नहीं जाते लेकिन उनके बाद हज़रत ख़्वाजा नासिरुद्दीन अबू यूसुफ़, हज़रत शैख़ हाजी शरीफ़ मदनी ख़ूब समाअ् सुना करते थे। किसी शख़्स की मजाल न थी कि इन हज़रात को मना कर सके। उस ज़माने में हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी भी समाअ् सुना करते थे। ख़लीफ़ए वक़्त ने भी आपको मना किया, उलमा ने भी बहस-मुबाहसा किए। हज़रत ख़्वाजा साहब ग़ालिब रहे। आजकल

सिवाए हज़रत ख़्वाजा के किसी की ताक़त है कि समाअ् सुन सके।

क़ाज़ी साहब हज़रत ख़्वाजा ख़िज़्र की ज़ुबान से यह बात सुनकर ख़ामोश हो गए। बाज़ार जाकर गुलाम ख़रीद लाए और हर एक को नात ख़्वानी सिखाई। चन्द रोज़ में यह लोग बेहतरीन क़व्वाल बन गए। हज़रत क़ाज़ी साहब रोज़ाना समाअ् सुनने लगे। यह ख़बर शहर में फैल गई। क़ाज़ी सअ्दुद्दीन,क़ाज़ी मिन्हाज सिराज, क़ाज़ी अमाद, हिन्द मुबारक ग़ज़नवी,मौलाना मजदुद्दीन वग़ैरह ने तअ्न बाज़ी शुरू कर दी और यह कहना शुरू किया: लो क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने अपने पीरों के तरीक़े के ख़िलाफ़ समाअ् सुनना शुरू कर दिया। हज़रत क़ाज़ी साहब को जब यह बात मालूम हुई तो फ़रमाया मैं चिश्ती हूँ। मेरे पीर चिश्ती हैं, मुझे जो कुछ मिला है, चिश्तियों से मिला है। मेरे लिए हज़रत ख़्वाजा जुनैद बग़दादी की ताबा हुज्जत नहीं।

इस वाक़िआ के कुछ रोज़ बाद हज़रत क़ाज़ी साहब बग़दाद तशरीफ़ ले गए और अपने एक मुरीद (कामिल) के यहाँ क़ियाम किया। वह मुरीद मालदार आदमी था। उसके पास चालीस हुजरे थे। मुरीद ने सब हुजरों के दरवाज़े खोल दिए सिर्फ एक हुजरा मुक़फ़्फ़ल रखा। क़ाज़ी साहब ने पूछा यह हुजरा तुमने क्यों नहीं खोला तो मुरीद ने अर्ज़ किया कि हज़रत इस हुजरा को मैं ने एक नै नवाज़ ख़लीफ़ा के ख़ौफ़ से छुपा रखा है। ख़लीफ़ा समाअ् का मुख़ालिफ़ है।

क़ाज़ी साहब ने फ़रमाया कि मैं तो समाअ् का दिलदादह हूँ। तुम किसी बात का ख़ौफ़ न करो। उस आदमी को मेरे पास ले आओ। वह आदमी हाज़िर हो गया। हज़रत क़ाज़ी साहब के हुक्म से नै नवाज़ी

शुरू की। महफ़िले समाअ् गरम हो गई। क़व्वाली की आवाज़ सुनकर लोगों ने क़ाज़ी और मुफ़्ती-शहर को इत्तिला कर दी। क़ाज़ी साहब के नाम हुक्म नामा आया कि अदालत में हाज़िर होकर महफ़िले समाअ् पर बहस करो, अगर सुबूत बहम न पहुँचा सके तो दार पर खिचवा दिए जाओगे। क़ाज़ी साहब पर कैफ़ियत तारी थी। क़ासिद खड़ा रहा। जब सही हालत पर आए तो हुक्मे अदालत सुनाया गया। क़ाज़ी साहब ने फ़रमाया कि समाअ् तमाम आदमियों के लिए हराम नहीं है। आम लोगों के लिए हराम है, ख़्वास के लिए हलाल है। क़ासिद रवाना हो गया। अभी चन्द क़दम ही गया था कि क़ाज़ी साहब ने उसको वापस बुलाकर फ़रमाया कि क़ाज़ी और मुफ़्ती साहिबान से कह देना कि कल तमाम उलमा हाज़िर हों, यह फ़क़ीर भी हाज़िर होगा। अगर यह फ़क़ीर समाअ् सुनने का अहल होगा तो समाअ् ज़रूर सुनेगा, वरना जहाँ और लोगो को फाँसी दी गई हमीदुद्दीन को भी सही। अलग़र्ज़ अदालत का हलकारा हुक्मनामा का जवाब सुनकर रुख़सत हो गया और क़ाज़ी व मुफ़्ती साहिबान इस बात पर रज़ामन्द हो गए।

हज़रत क़ाज़ी साहब ने अपने मुरीद से फ़रमाया अब तुम यह काम करो कि कल को मुफ़्ती और क़ाज़ी को अपने यहाँ ज़ियाफ़त पर मद्ऊ करो। यहाँ शहर में क़व्वाल तो हैं नहीं जिस क़द्र जमा कर सको मज़ामीर जमा कर लो और सिहन में रख दो। रातभर में 72 मज़ामीर जमा हुए। यह तमाम मज़ामीर वस्ते सिहन में कपड़ा डालकर रख दिए गए। मुरीद ने क़ाज़ी और मुफ़्ती को दावतनामा भेज दिया।

अगले दिन क़ाज़ी और मुफ़्ती साहब तशरीफ़ ले आए। पूछने लगे हमीदुद्दीन कहाँ हैं। हज़रत क़ाज़ी ने फ़रमाया कि मैं हूँ। मेरा नाम

हमीदुद्दीन है। समाअ् सुनता हूँ, समाअ् को मुबाह तसव्वुर करता हूँ। बात यह है कि मैं दिल का मरीज़ हूँ। वर्ना दिल का इलाज समाअ् ही है। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा ने फ़रमाया है कि अगर किसी प्यासे को शिद्दते तिश्नगी के वक़्त पानी मयस्सर न हो और जान जाने का ख़तरा हो तो उसको ऐसी हालत में शराब पीना मुबाह है, ताकि मुसलमान की जान ज़ाया हो जाने से महफ़ूज़ रहे। हज़रत इमाम शाफ़ई का क़ौल है कि हुज़्न व मलाल रफ़ा करने के वास्ते समाअ् सुनना मुबाह है।

हज़रत क़ाज़ी साहब फ़ाज़िले यगाना और आलिमे बे बदल थे। क़ाज़ी और मुफ़्ती के सामने समाअ् से मुतअल्लिक़ ऐसे-ऐसे वाज़ेह दलाइल पेश किए कि क़ाज़ी और मुफ़्ती साहब उनकी तरदीद न कर सके। उनको मानना पड़ा हत्ता कि क़ाज़ी साहब बोले:हाँ-हाँ, अइम्मा की कुतुब में इसी तरह लिखा है। आप साहिबे विलायत हैं, आप हमें कोइ ऐसी दलील व बुर्हान दिखलाइए जिससे हम समाअ् के मुतक़िद होकर अहले समाअ् बन जाएँ। हज़रत क़ाज़ी साहब ने उसी वक़्त मज़ामीर को इशारा किया, तमाम मज़ामीर ख़ुद ब ख़ुद बजने लगे। मज्लिस पर कैफ़ तारी हो गया, क़ाज़ी साहब भी वज्द में आ गए। हज़रत क़ाज़ी साहब ने क़ाज़ी व मुफ़्ती साहब पर तेज़ नज़र डालते हुए फ़रमाया-"ऐ महफ़िले समाअ् में" यह फ़रमाते ही क़ाज़ी व मुफ़्ती साहब दीवानावार रक़्स करने लगे। बड़ी देर तक यह हालत रही। जब हालत दुरुस्त हुई तो क़ाज़ी शहर ने हज़रत क़ाज़ी साहब के क़दमों पर सर रखकर माफ़ी माँगी। हज़रत क़ाज़ी साहब ने फ़रमाया: अब तो चिश्तियों की दलील देख ली, अब भी समाअ् को मुबाह न कहोगे क़ाज़ी। मुफ़्ती

और दिगर उलमा हाज़िरीने मज्लिस ने इक़रार किया बिला शुब्हा समाअ् अहले समाअ् के लिए जाइज़ है। इसके बाद क़ाज़ी हमीदुद्दीन साहब बग़दाद से रुख़्सत होकर देहली रवाना हो गए।

हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन के मकान में महफ़िले समाअ्

सियरुलअक़ताब में है कि जब हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब साहब हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी के मकान में तशरीफ़ लाए तो क़ाज़ी साहब क़व्वालों को बुलाकर महफ़िले समाअ् सुनते रहे। हज़ात आदमी समाअ् सुनने जमा हो गए। जिस वक़्त महफ़िले समाअ् ख़त्म हुई लोगों ने क़ाज़ी साहब से अर्ज़ किया कि इस महफ़िल में बड़े-छोटे हर क़िस्म के लोग बड़ी तादाद में हाज़िर हैं, महफ़िले समाअ् के बाद खाना खिलाया जाता है, खाने का इन्तिज़ाम फ़रमाया जाए। हज़रत क़ाज़ी साहब ने हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब साहब से अर्ज़ किया- हज़रत क़ुत्ब साहब ने फ़रमाया कि सब हाज़िरीन से कह दो सफ़ बस्ता बैठ जाएँ । सब लोग बैठ गए। हज़रत क़ुत्ब साहब ने अपनी दोनों आस्तीनें झाड़नी शुरू कर दी। हर शख़्स के आगे दो-दो गरम-गरम काक और हलवा हाज़िर हो गया। तमाम हाज़िरीन ने सैर होकर खया। उसके बाद मौलाना मजदुद्दीन ने क़ाज़ी साहब से अर्ज़ किया कि खाने के बाद शर्बत भी होना चाहिए।

हज़रत क़ाज़ी की ख़िदमत में किसी शख़्स ने ढाइ सेर शकर नज़र की थी। आपने एक बड़े लोटे में डालकर ऊपर से प्याले पानी के डाल कर फ़रमाया: लो सब लोग शर्बत पिओ। सब हाज़िरीन ने खुब सैर होकर शर्बत पिया और लोटे शर्बत उतना रहा। उसमें कोई कमी न आई। खा-पी कर सब लोग रुख़्सत हो गए।

सुल्तान शहाबुद्दीन की ख़फ़्गी

अलग़र्ज़ ख़्वाजा क़ुत्ब साहब हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी के साथ समाअ् सुनते रहे। सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी को ख़बर मिली तो उसने ख़फ़्गी के लहज़े में कहा-"यह कौन लोग होते हैं समाअ् सुनने वाले।" यह बात हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब साहब के कानों तक पहुँच गई। हज़रत क़ुत्ब साहब ने एक आदमी को भेजकर बादशाह से कहला भेजा- "ओ संगदिल सियाह बातिन! तु समाअ् की क़द्र क्या जाने, समाअ् हमारे लिए मुबाह है, तेरे लिए हराम है। यह खुदा तआला का एक ख़्वास अतिया है जो हर किसी को नहीं मिला करता। समाअ् की क़द्र क़द्रदान ही जानते हैं।"

सुल्तान शहाबुद्दीन ने यह बात सुनकर गुस्सा की हालत में क़सम खाकर कहा कि अगर आइन्दा मुझे समाअ् के मुतअल्लिक़ कोई इत्तिला मिली तो दार पर खिँचवा दूँगा। बादशाह का ये जवाब हज़रत क़ुत्ब साहब को मालूम हुआ तो फ़रमाया : हम भी देखेंगे तू यहाँ रहेगा या हम। चुनांचे दस-बीस रोज़ के बाद ही सुल्तान शहाबुद्दीन खुरासान चला गया।

सुल्तान शम्सुद्दीन के ज़माने में उलमांए ज़ाहिर का वावेला

हज़रत ख़्वाजा क़ुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी (रह०) सुल्तान शम्सुद्दीन अलतमश के पीर थे। क़ुत्बुद्दीन ऐबक के इन्तिक़ाल के बाद जब सुल्तान मौसूफ़ तख़्ते देहली पर मुतमक्किन हुए तो हज़रत ख़्वाजा क़ुत्बुद्दीन साहब की ख़िदमत में पाबोसी के लिए हाज़िर हुआ। हज़रत क़ुत्ब साहब ने सुल्तान मौसूफ़ को नसीहत फ़रमाई कि फ़ुक़रा

और मसाकीन का ख़याल रखना। हक़ ताला तेरे दरजात में तरक़्क़ी अता फ़रमाएगा।

औलियाए अल्लाह से उलमा की मुख़ालिफ़त कोई नई बात नहीं। क़ाज़ी सादिक़ और क़ाज़ी इमाद हज़रत क़ुत्ब साहब की मुख़ालिफ़त पर कमरबस्ता हुए। बादशाह से शिकायत की कि ख़्वाजा क़ुत्बुद्दीन और क़ाज़ी हमीदुद्दीन शब व रोज़ समाअ् सुनते रहे हैं। शरीअत का हुक्म है कि समाअ् सुन्ना हराम है। ख़्वाजा क़ुत्बुद्दीन के तो अभी दाढ़ी भी नहीं निकली, ऐसी हालत में हम समाअ् की इजाज़त किस तरह दें?

चेहरे पर हाथ फेरते ही रीशे मुबारक बरामद

बादशाह ने कहा : मैं तो मना नहीं कर सकता। तुम्हें इख़्तियार है। क़ाज़ी सादिक़ और क़ाज़ी इमाद दोनों ख़ानक़ाह पहुँचे। उस वक़्त इत्तिफ़ाक़न महफ़िल समाअ् थी। क़ाज़ी हमीदुद्दीन साहब पर कैफ़ियत तारी थी। हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब साहब दस्त बस्ता खड़े थे। क़ाज़ी इमाद ने हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब साहब की तरफ़ इशारा करते हुए कहा कि आपका महफ़िले समाअ् में हाज़िर होना मुनासिब नहीं। यह बात इसलिए कही थी कि हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब साहब का रूए मुबारक बेरीश था। हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब साहब ने बिस्मिल्ला हिर्रहमानिर्रहीम पढ़कर दोनों दस्ते मुबारक चेहरे पर फेरा। तमाम चेहरे मुबारक पर दाढ़ी निकल आई। फ़रमाया : हाँ, हाँ ! बेरीश नौजवान को महफ़िले समाअ् में न आना चाहिए।

तमाम हाज़िरीने महफ़िल हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब साहब की इस हैरतअंगेज़ करामत को देखकर अंगुश्त बदन्दां रह गए। क़ाज़ी इमाद

और क़ाज़ी सादिक़ डर के मारे क़रीब न आए। दूर ही से वापिस चले गए और आपस में मशविरा करने लगे कि समाअ् का फ़ित्ना रोज़ - बरोज़ तरक़्क़ी पर है। अगर इस वक़्त इसका सद्दे बाब न किया गया तो क़ियामत तक भी न रुक सकेगा। इसके बाद ये दोनों मौलवी साहबान बादशाह के पास गए। हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब की हैरत अंगेज़ करामत का ज़िक्र किया। बादशाह ने कहा : यह दोनों बुज़ुर्ग अहले समाअ् और साहबे हाल हैं। ख़बरदार ! इनसे किसी क़िस्म की काविश न रखना, वरना इसका नतीजा अच्छा न होगा।

ये दोनों मौलवी साहबान इल्म के नशे में सरशार कहने लगे कि हम हामिले शरीअत हैं। शरीअत की रू से समाअ् सुन्ना हराम है, इसलिए हम जब तक समाअ् बन्द न कर देंगे चैन से न बैठेंगे। बादशाह ने कहा : तुम मेरी बात तो मानते नहीं अगर तुम कुछ ताक़त रखते हो समाअ् बन्द कर लो।

इसपर दोनों मौलवी साहबान ने कहा कि अगर हम ने महफ़िल समाअ् में जाकर कहा कि समाअ् बन्द करो और इन लोगों ने कहा कि तुम मना करनेवाले कौन होते हो तो हमारी किया इज़्ज़त रह जाएगी। अगर हमने कहा कि हम शहर क़ाज़ी और मुफ़्ती हैं तो बात भी है। बादशाह ने कहा : इन बातों से तुम्हारा क्या मक़्सद है, क्या चाहते हो? उइन लोगों ने कहा : आप हमें मुफ़्ती और क़ाज़ी शहर बना दें। बादशाह ने उन दोनों मौलवी साहबान की ख़्वाहिश के मुताबिक़ मुफ़्ती और क़ाज़ी साहब का ओहदा दोनों को अता कर दिया।

मुफ़्ती और क़ाज़ी साहब की शामत

सदारत और क़ज़ा का ओहदा मिलते ही मौलवी साहबान आपे से बाहर होगए। फ़ौरन एक हरकारा हज़रत ख़्वाजा कुत्बुद्दीन और ख़्वाजा हमीदुद्दीन के पास भेजा कि हमारी अदालत में हाज़िर होकर वजह जवाज़े समाअ् पेश करो, वरना समाअ् सुन्ने से तायब हो जाओ। जिस वक़्त मुफ़्ती और क़ाज़ी साहब के हरकारे हज़रत ख़्वाजा साहबान को हुक्म हाज़िरी सुनाया ---------- हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब ने फ़रमाया हुँ। क्या ज़ेरे ज़मीन जाने का इरादा है? हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन साहब ने हज़रत ख़्वाजा कुत्ब (रह०) के मुँह पर हाथ रख दिया। हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब ने फ़रामया कि अब कुछ नहीं होता। तीर कमान से निकल चुका।

हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब (रह०) और ख़्वाजा हमीदुद्दीन ने क़ाज़ी और मुफ़्ती साहब को कहला भेजा कि कल हमारे पीर का उर्स है कल हम समाअ् सुन लें, परसों हाज़िर अदालत होंगे। क़ाज़ी और मुफ़्ती साहब ने हर दो हज़रात को इस शर्त पर समाअ् सुन्ने की इजाज़त दी कि महफ़िल में सिवाए आपके दो हज़रत के तीसरा शख़्स शामिल न हो।

हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब (रह०) और क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी की ख़ानक़ाह क़िला के अन्दर थी। उस ज़माने में क़िला के सिर्फ़ दो दरवाज़े थे। शरक़ी और ग़रबी। क़ाज़ी सादिक़ और क़ाज़ी इमाद ने क़िला के दोनों दरवाज़ों पर आदमी बिठा दिए। किसी आदमी को अन्दर आने न दिया।

हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब के ख़ादिम ने अर्ज़ किया कि क़ाज़ी

शहर ने दरवाज़े पर पहरेदार बैठा दिए हैं ताकि कोई आदमी खानक़ाह में न आसके। खाना पकाऊँ या नहीं? क़ाज़ी हमीदुद्दीन ने फ़रमाया : आज खाना ज़्यादा पकाना। किसा की क्या मजाल जो आनेवालों को रोक सके। हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब ने फ़रमाया कि क़ाज़ी सादिक़ और इमाद तो अपनी जान से आजिज़.आ चुके हैं। अब वह बहुत जल्द इस दुनिया से कूच करनेवाले हैं। ख़ादिम हस्बुल हुक्म खाना पकाने में मशगूल हो गया। क़ीज़ी हमीदुद्दीन (रह०) ने दोगाना पढ़ा। मेरे भाई शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तान से तशरीफ़ ला रहे हैं। थोड़ी देर में हज़रत शैख़ मौसूफ़ मुल्तान से तशरीफ़ ले आए। पहरेदारों की आँखों पर परदा पड़ गया। वह देख न सके।इसके बाद फ़रमाया कि मेरे भाई जलालुद्दीन तबरेज़ी (रह०) भी आ रहे हैं। वह भी आ गए और पहरेदारों को पता तक न चल सका।

महफ़िल समाअ् का आग़ाज़ और मौलवी साहबान की हैरतनाक नाकामी

मुफ़्ती और क़ाज़ी साहब ने इन्तिज़म तो ऐसा किया था कि कोई शख़्स भी ख़ानक़ाह में न आ सके मगर हुआ बिल्कुल उसके बरअक्स। जिस वक़्त महफ़िल समाअ् गरम हुई और हाउहा के नारे बुलन्द हुए इस क़दर ग़लग़ला पड़ा कि कान पड़ी आवाज़ सुनाई देती थी। क़ाज़ी सादिक़ और क़ाज़ी इमाद के कानों में आवाज़ पहुँची तो एक आदमी को दरयाफ़्त के लिए भेजा। कुछ देर बाद उस ख़ादिम ने आकर बयान किया कि आज तो ख़ानक़ाह में इस क़दर मजमा है कि तिल धरने को जगह नहीं। क़ाज़ी सादिक़ व इमाद कहने लगे कि अब मौक़ा अच्छा है। इस मौक़े से फ़ायदा उठाना चाहिए। क़ाज़ी व मुफ़्ती

साहब पुलिस का एक दस्ता हमराह लेकर ख़ानक़ाह पहुँच गए। महफ़िल समाअ् हो रही थी। हज़रत कुत्ब साहब समाअ् सुन रहे थे। क़ाज़ी हमीदुद्दीन दस्तबस्ता खड़े हुए थे। जिस वक़्त क़ाज़ी साहबान सामने आकर खड़े हुए हज़रत क़ाज़ी साहब ने फ़रमायाः "तुम जहाँ खड़े हो वहीं के वहीं खड़े रहो।"

ज़मीन ने मुफ़्ती और क़ाज़ी साहब के पाँव पकड़ लिए

मुफ़्ती और क़ाज़ी साहब वहीं के वही खड़े रह गए। हर चन्द हिलने-सरकने की कोशिश की मगर बे सूद। ज़मीन ने पाँव पकड़ लिए। यहाँतक कि महफ़िले समाअ् बरख़ास्त हुई। हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब ने हरदो असीराने बला पर नज़र डालते हुए फ़रमाया : आओ हमसे आख़िरी बार मिल तो लो। आज तो तुम्हें मालूम हो गया होगा कि समाअ् क्या चीज़ है। यह बात सुनकर दोनों मौलवी साहबान रोने लगे और हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब के क़दमों में सर रखकर माफ़ी माँगने लगे कि हमें मालूम न था कि समाअ् ख़ुदा तआला के ख़ास नेमतों में से नेमत है। हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब ने फ़रमायाः अब इक़रार करने से क्या फ़ायदा। इस वक़्त तौबा करने से कोई फ़ायदा नहीं, जो होना था हो चुका।

कुछ देर बाद क़ाज़ी व मुफ़्ती साहब ख़ानक़ाह से रवाना होकर बादशाह की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हाल अर्ज़ किया। बादशाह ने उन दोनों क़ाज़ी व मुफ़्ती को ख़ूब बुरा-भाला कहा। फ़रमायाः आगे से दूर हो जाओ। मुझे अपनी सूरत न दिखाओ।

क़ाज़ी और मुफ़्ती साहब मौत की आग़ोश में

क़ाज़ी व मुफ़्ती साहब बाद हज़ार मायूसी व नाकामी अपने-अपने

घर बहालत निदामत वापिस आए और उसी रोज़ दुनिया से कूच कर गए। बादशाह को मालूम हुआ तो फ़रमाया अच्छा हुआ ये नाअहल अपनी ज़िंदगी से आजिज़ आ गए थे। उन्होंने बड़ी उगलती चाट रखी थी।

रुजुआते ख़ल्क़ स नज़र नज़राना क़बूल करने से इन्कार काकी कहलाए जाने की वजह

सियरुलअक़ताब में है कि हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब की तशरीफ़ आवरी से देहली आपके नूरे विलायत से मुनव्वर हो गई। रुजुआते ख़ल्क़ का ये आलम था कि आपकी ख़ानक़ाह में हर वक़्त लोगों का मेला लगा रहता था। लोग रोज़ाना नज़राना के तौर पर नक़द व जिन्स लेकर हाज़िर होते थे मगर हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब क़बूल न फ़रमाते थे।

हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब की हवेली के क़रीब एक बक़्क़ाल का मकान था। हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब वक़्त ज़रूरत क़र्ज़ लेकर गुज़र बसर फ़रमाते थे। इस बक़्क़ाल की बीबी की हज़रत कुत्ब साहब के ज़नानख़ाने में आमदो रफ़्त थी। एक रोज़ बक़्क़ाल की बीवी ने हज़रत कुत्ब साहब की अहलिया से कहा कि अगर हमारा घर यहाँ न होता तो तुम लोग फ़ाक़े करते-करते मर जाते। यह बात हज़रत कुत्ब साहब की अहलिया को नागवार गुज़री। इस वाक़ेआ को हज़रत कुत्ब साहब से ज़िक्र किया। हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया अब इस बक़्क़ाल के यहाँ से क़र्ज़ लेने छोड़ दो। तोहफ़े क़बूल करना भी तर्क कर दिया। उस रोज़ से ऐसा हुआ कि उस रोज़ से हज़रत ख़्वाजा साहब के मुसल्ले के नीचे से गरम काक निकल आते थें। उन्हीं से अहले ख़ाना

शिकम पूरी कर लेते थे। बक़्क़ाल से जब हज़रत क़ुत्ब साहब के घरवालों ने क़र्ज़ लेने छोड़ दिया तो उसे ख़्याल आया कि शायद हज़रत क़ुत्ब साहब मुझसे नाराज़ हो गए हैं। इसी नाराज़ी के बाइस क़र्ज़ लेने तर्क कर दिया है। बक़्क़ाल ने अपनी बीवी को भेजकर सूरते हाल मालूम करनी चाही। इज़हारे माज़ेरत भी मक़सूद था। बक़्क़ाल की बीवी से बाज़ अहले ख़ाना ने कहा कि हमें तो ग़ैब से पकी-पकाई गरम रोटी मिल जाती है। अब हमें तुझसे क़र्ज़ लेने की हाजत नहीं।

इक़्तिबासुल-अनवार में है कि हज़रत ख़्वाजा क़ुत्ब साहब ने अहले ख़ाना से हुजरा मुबारक के एक ताक़ की तरफ़ इशारा करते हुए फ़रमाया था-जिस चीज़ की हाजत हो बिस्मिल्लाह पढ़ कर इस ताक़ में हाथ डालो मिल जाएगी।

वक़्त ज़रूरत इस ताक़ में हाथ डालने से गरम-गरम काक निकल आते थे। बाज़ रिवायत में से है कि इतना बड़ा काक (यानी कुल्चा) बरआमद होता था जो तमाम अहले ख़ाना के लिए काफ़ी होता था।

हज़रत क़ुत्ब और क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी का दोस्ताना

हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन साहब के अव्वलीन उस्ताद होने के बावजूद हज़रत क़ुत्ब साहब के इस दरजे मुतक़िद और मुख़लिस थे कि उनका अक्सर वक़्त हज़रत क़ुत्ब साहब की ख़िदमत में गुज़रता था। हज़रत क़ुत्ब साहब ने फ़रमाया है कि एक रोज़ मैं और क़ाज़ी हमीदुद्दीन दोनों हमसफ़र थे। एक दरिया के किनारे पहुँचे। भूक का ग़लबा हुआ। खाने के लिए कोई चीज़ पास न थी। अचानक आलमे ग़ैब से एक बकरी नमूदार हुई। वह अपने मुँह में दो रोटी जौ की लिए हुए

थी। वह बकरी दोनों रोटी हमारे सामने रखकर चली गई। हमने ख़ुदा का शुक्र अदा करके रोटी खाई।

अभी हम रोटी खा ही रहे थे कि एक बड़ा-सा बिच्छू दरिया की तरफ़ जाता दिखाई दिया। वह बिच्छू एक दम दरिया में कूदकर तैरने लगा। हमें हैरत हुई यह बिच्छू कहाँ से आया है, कहाँ जा रहा है ! हम भी इसके पीछे - पीछे हो लिए। दरिया के किनारे पहुँचे। ख़ुदा ताला ने दरिया में रास्ता पैदा कर दिया। हम दरिया पार हो गए। देखा एक दरख़्त के नीचे एक आदमी सोया हुआ है और एक ज़हरीला साँप उसके क़रीब बैठा हुआ है। वह साँप उस सोए हुए आदमी को डसना ही चाहता था कि इस बिच्छू ने जल्दि से उस साँप को डंक मारकर हलाक कर दिया और फ़ौरन हमारी नज़र से ग़ायब हो गया। अभी हम उस आदमी के क़रीब न पहुँचे थे। हमें ख़याल पैदा हुआ शायद ये कोई बुज़ुर्ग आदमी सोया हुआ है जिसकी जान की हिफ़ाज़त के लिए हक़ ताला ने यह इन्तिज़ाम फ़रमाया है, लेकिन हमें यह देखकर हैरत की इन्तिहा न रही कि वह आदमी शराबी, नशे में मदहोश था। उसके मुँह के आगे क़ै पड़ी हुई थी। यह नज़ारा देखकर हमें शर्मिन्दगी हुई। दिल ही दिल में कहने लगा कि ऐसे बदकार और फ़ासिक़ आदमी की हिफ़ाज़त का इतना एहतमाम। इतने में ग़ैब से आवाज़ आई। ऐ अज़ीज़ ! अगर हम नेक आदमियों ही की हिफ़ाज़त करें तो बदकार आदमियों की हिफ़ाज़त कौन करेगा। उसी दौरान वह आदमी होश में आ गया। आंखें खोल दीं। हमने उस आदमी से सब हाल ज़िक्र किया। वह आदमी हमारी बात सुनकर सख़्त शर्मिन्दा हुआ। ख़ुदा तआला से तौबा की और ख़्वाजा क़ुत्व साहब की नज़र से वह शराबी आरिफ़े कामिल बन गया।

हज़रत कुत्ब साहब समाअ् के दिलदादह क्यों थे?

इक़्तिबासुल-आरिफ़ीन में बहवाला बहरुलमआनी मज़कूर है कि हुज़ूर सरवरे काएनात की रूहानियत ने आलमे मामला में हज़रत कुत्ब साहब को समाअ् का हुक्म फ़रमाया था। यही सबब था कि हज़रत कुत्ब साहब समाअ् के दिलदादह थे।

आगे लिखा है कि जब हज़रत कुत्ब साहब ने हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ के हुक्म से देहली में मुस्तक़िल इख़्तियार फ़रमाई तो उस वक़्त सैय्यद मुबारक ग़ज़नवी मुक़तदाए शहर थे। जुमा के दिन जामा मस्जिद में दोनों बुजुर्ग की बाहमी मुलाक़ात हुई। हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया कि मेरा इरादा महफ़िले समाअ् मुनअक़िद करने का है, तुम भी शिरकत फ़रमाना। सैय्यद साहब ने जवाब दिया कि मुझे जब तक हुज़ूर (सल्ल०) की तरफ़ से इजाज़त न मिलेगी, महफिल समाअ् में शरीक न होऊँगा। हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया आज रात तुम्हें इजाज़त मिल जाएगी।

रात को सैय्यद साहब को हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) की ज़ियारत हुई। हुज़ूर ने इरशाद फ़रमाया : बेटे बख़तियार समाअ् सुनेगा, तुम्हें भी उनके साथ समाअ् में शरीक होना चाहिए। इजाज़त मिलने के बाद सैय्यद साहब ने समाअ् सुना।

हज़रत सैय्यद अशरफ़ जहाँगीर समनानी (रह०) मकतूबात में तहरीर फ़रमाते हैं कि जिस वक़्त हज़रत कुत्ब साहब हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाए और मुलतान में हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया (रह०) के मेहमान हुए तो हज़रत कुत्ब साहब ने खाना खाने के बाद मुसकुराते हुए फ़रमाया : भाई बहाउद्दीन दावत तो ख़ूब की मगर खुश्क । हज़रत

मख़दूम बहाउद्दीन समझ गए कि हज़रत क़ुत्ब साहब का इशारा समाअ् की तरफ़ है। चुनांचे फ़ौरन ही क़व्वालों को तलब फ़रमाया और ख़ुद ख़नक़ाह के दरवाज़े पर लाठी लेकर खड़े हो गए। जिस वक़्त क़व्वालों ने गाना शुरू किया तो हज़रत क़ुत्ब साहब के असहाब पर हाल तारी हो गया। हायहो से आसमान गूँजने लगा।

फ़िरक़ा शहाबिया और सिलसिलए सहरवर्दिया के दुरवेशों को जब मालूम हुआ कि हज़रत बहाउद्दीन की ख़नक़ाह में क़व्वाली हो रही है तो वह सब जमा होकर ख़ानक़ाह में आए। कहने लगे सुल्तान की ख़ानक़ाह में 500 साल बाद यह क्या ख़िलाफ़े शरअ् काम हो रहा है। हज़रत ने फ़रमाया कि तुम भी अजीब आदमी हो, जिन लोगों की दरबानी बहाउद्दीन कर रहा हो उनकी निस्बत ख़िलाफ़े शरअ् काम का ख़याल हरगिज़ ज़ेबा नहीं।

ये फ़ुक़रा हज़रत मख़दूम साहब से बहस-मुबाहसा करने लगे। आख़िर मजबूर होकर मख़दूम साहब ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारे अन्दर कुछ ताक़त हो तो इन लोगों को समाअ् से रोक दो। उन लोगों के दिमाग़ में एक क़िस्म की रऊनत भरी हुई थी, सीधे ख़ानक़ाह में दाख़िल होकर महफ़िले समाअ् में पहुँचे। महफ़िले समाअ् में दाख़िल होते ही उनपर ज़ौक़ व शौक़ इस क़दर तारी हुआ कि समाअ् सुनते ही मदहोश हो गए। तन-बदन की होश न रही। याँ तो यह हालत थी कि हज़रत क़ुत्ब साहब और शुरकाए महफ़िल को समाअ् से बाज़ रखने आए थे याँ ख़ुद ही समाअ् सुनते ही समाअ् पर दिल व जान से फ़रेफ़ता हो गए और इज्तिनाब वग़ैरह सब भूल गए।

महफ़िले समाअ् के ख़तमा पर उन सब लोगों ने हज़रत क़ुत्ब

साहब से इज़्हारे अक़ीदत किया।इरादत या ख़िलाफ़त की दरख़्वास्त की हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया जो लोग कि मुझसे इस्तिफ़ादा के आरज़ूमन्द हैं, मेरे साथ चलें। चुनांचे यह जमाअत हज़रत कुत्ब साहब के साथ हाँसी तक आई। हाँसी पहुँचकर हज़रत कुत्ब साहब ने उन लोगों को दाख़िले सिलसिला फ़रमाया।

हज़रत कुत्ब साहब नज़र नज़राना क़बूल क्यों नहीं फ़रमाते थे?

सियरुलअक़्ताब में है कि एक रोज़ इख़्तियारुद्दीन साहब कुछ ज़र नक़द बतौर नज़र नियाज़ हज़रत कुत्ब साहब की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुए। हज़रत कुत्ब साहब ने क़बूल करने से इन्कार फ़रमाया इख़्तियारुद्दीन ने हज़रत कुत्ब साहब की बेहद मिन्नत व समाजत की कि किसी तरह क़बूल फ़रमा लें । कुत्ब साहब ने अपने मुसल्ला का कोना उठा कर फ़रमाया - देख क्या नज़र आ रहा है। इख़्तियारुद्दीन यह देख कर महवे हैरत रह गया कि बोरिये के नीचे सोने की नदी जारी है। हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया कि जिस शख़्स को इस क़द्र तसर्रुफ़ हासिल हो वह तुम्हारा मुहताज नहीं।

हज़रत ख़िज़्र कुत्ब साहब से मुलाक़ात के लिए आया करते थे

इसी किताब में आप पढ़ चुके हैं कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से बैअत होने से पहले हज़रत कुत्ब साहब ने हज़रत ख़िज़्र से मुलाक़ात के लिए एक अमल पढ़ा था और मस्जिद से बाहर ख़िज़्र से मुलाक़ात भी हुई थी। यह वाक़िआ हज़रत कुत्ब साहब के इबतिदाए ज़माना का था। आख़िर में तो यह हालत हो गई थी कि ख़िज़्र (अ०) बार-बार हज़रत कुत्ब साहब से मुलाक़ात के लिए तशरीफ़ लाते रहे।

हज़रत सैय्यद सालार मसऊद गाज़ी का रूहानियते कुत्ब साहब से इस्तिफ़ादा

इक़्तिबासुलअनवार में ब हवाला मिरातुलअसरार मज़कूर है कि हज़रत सैयद सालार मस्ऊद ग़ाज़ी की रूहानियत ने हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब की रूहानियत से भी इक्तिसाबे फ़ैज़ किया था। कहा जाता है कि हज़रत सालार मसऊद ग़ाज़ी की रूहानियत हज़रत कुत्ब साहब की रूहनियत की नायब है। हज़रत साहब की रूहानियत फ़ैज़ पहुँचाती है।

मीर सुल्तान (रह०) के मलफ़ूज़ात में मज़कूर है कि मीर साहब मज़कूर तवील सैरो सियाहत के बाद हज़रत अलाउद्दीन चिश्ती की इजाज़त से तक़रीबन 12 साल देहली में हौज़ शम्सी के किनारे रियाज़ात व मुजाहदात में मशगूल रहे। एक रोज़ का वाक़िआ है। मीर साहब एक क़ब्र के सिरहाने मशगूली में बैठे हुए थे कि एक आदमी बरस में मुबतला सामने से गुज़रता हुआ नज़र आया। फ़ौरन ही एक नौजवान साहबे जमाल घोड़े पर सवार हाथ में ताज़ियाना लिए हुए सामने आया। इस नौजवान साहबे जमाल ने इस बीमार आदमी के कई कोड़े रसीद किए जिससे वह ज़मीन पर गिर पड़े। निगाहे नौजवान ताज़ियाने मारता रहा यहाँ तक कि इसके जिस्म के बरस ज़दह खाल उतरकर ज़मीन पर गिर गई और वह बिल्कुल तन्दुरुस्त हो गया गोया उसे कोई तकलीफ़ थी ही नहीं।

मीर साहब इस ख़रक़े को देखकर हैरान रह गए। इस बीमार आदमी के पास जाकर हाल दरयाफ़्त किया। उस नौजवान साहबे जमाल ने कहा कि इस मरीज़ ने हज़रत कुत्ब साहब (रह०) से सेहतयाबी की इल्तिजा की थी। हज़रत कुत्ब साहब ने मुझे इस ख़िदमत पर मामूर फ़रमाया। अल्लाह तआला ने उसे शिफ़ा आता

फ़रमाई। इसके बाद मीर साहब ने उस नौजवाज से अर्ज़ किया कि आप किस सिलसिले और किस विलायत के बुज़ुर्ग हैं? उन्होंने फ़रमाया कि मेरा नाम सालार मसऊद है। मेरा मक़ाम बहराइच है। ये फ़रमाकर ग़ायब हो गए।

शहज़ादा सअदुद्दीन वली कामिल बन गया

सियरुलअक्ताब में है कि एक मरतबा ब ज़माना हयात हज़रत कुत्ब साहब देहली में इस क़द्र क़हत पड़ा कि एक समोसा उस ज़माने के 40 पैसे में भी नहीं मिलता था।: शहज़ादा सअदुद्दीन ने बहुक्म बादशाह सलामत कई मन गेहूँ का आटा रोटियाँ पकाने के वास्ते एक नानबाई के यहाँ भेजा। नानबाई रोटियाँ तनदूर में लगाकर सो गया जिसकी वजह से बहुतसी रोटियाँ जल गईं।

शहज़ादा के आदमी रोटियाँ लेने आए तो जली हुई रोटियाँ देखकर आग बगूला हो गए। नानबाई के गले में दसतार का पेच डालकर कशाँ कशाँ ले जाने लगे। रास्ते में हज़रत कुत्ब साहब मिल गए। दरयाफ़्त किया कि क्या मामला है। इस ग़रीब को कहाँ ले जा रहे हो तो शहज़ादे के मुलाज़िमों ने सारा माजरा अर्ज़ किया। हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारी रोटियाँ दुरुस्त हो जाएँ तब तो छोड़ दोगे? वह लोग कहने लगे: अजीब दिवाने से पल्ला पड़ा है। एक पागल से छुटकारा नहीं हुआ कि दुसरा दीवाना पल्ले पड़ गया। हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया: बेवक़ूफ़!अल्लाह तआला मुर्दे को ज़िन्दा कर देता है। तुम्हारी जली हुई रोटियाँ भी ठीक कर देगा। हज़रत कुत्ब साहब का रूए अनवर देखकर और बातें सुनकर उनपर हैबत तारी हो गई। उन लोगों ने कहा: ऐ शैख़! हम आपके कहने से इस नानबाई को

छोड़ देते हैं। अब आप हमारा काम कीजिए।

हज़रत साहब ने तन्दूर पर पहुँचकर सब रोटियाँ उठाकर तन्दूर में डाल दी। थोड़ी देर बाद जब रोटियाँ निकाली तो सब रोटियाँ एकसी थीं और बहुत अच्छी पकी और सिकी हुई थीं।

ये करामत देखकर वह लोग हज़रत कुत्ब साहब के क़दमों में गिर गए और निहायत आजज़ी से माफ़ी माँगने लगे। हज़रत कुत्ब साहब ने उनको माफ़ी अता फ़रमाकर रुख़सत कर दिया।

शहज़ादे के पास जाकर उन लोंगों ने सारा माजरा बयान किया। वाक़िआ सूना, नंगे पैर दौड़ा हुआ हज़रत कुत्ब साहब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। पाबोसी की। हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमायाः शहज़ादा फ़कीर के पास किस ग़र्ज़ से आया है ? शहज़ादे ने अर्ज़ किया- अक़ीदत, सिदक़ और इख़लास के साथ हाज़िर हुआ हूँ । हज़रत कुत्ब साहब ने कहा कि अगर तेरा एतिक़ाद फ़क़ीर के साथ सच्चा है तो खुदा तेरे दिल पर दुनिया की मुहब्बत सर्द कर दे और तू दुनिया को तर्क करके फ़क्रो फ़ाक़ा इख़्तियार कर ले। कुछ देर बाद शहज़ादा इजाज़त लेकर अपने महल में वापिस आया और अपने तमाम ममलूकात फ़ुक़रा को तक़्सीम करके हज़रत कुत्ब साहब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हज़रत ख़्वाजा साहब ने उसी वक़्त उसे फ़क़ीरी की तालीम दी। हिजाब उठ गए। अर्श से तहतुस्सरा तक उस पर मुनकशिफ़ हो गया और थोड़ी ही मद्दत में शैख़ और वली कामिल बन गया।

हज़रत कुत्ब साहब की मुतअह्हिलाना ज़िन्दगी

पहली बीवी को तीन रोज़ बाद तलाक़

सियरुलऔलिया में है कि हज़रत ख़्वाजा साहब रात को सोते वक़्त 3 हज़ार मर्तबा दरूद शरीफ़ पढ़ा करते थे। वह दरूद शरीफ़ यह थी- अल्लाहुम-म सल्ले अला मुहम्मदिन अबदि-क व नबिय्य-क व हबीबि-क व रसूलिकन्नबी उम्मी व आलिही व सल्लम। इस ज़माने में हज़रत कुत्ब साहब ओश में तशरीफ़ फ़रमा थे। सफ़र का इरादा था। आपकी वालिदा मुहतरमा ने एक हसीन व जमील ख़ातून के साथ आपका अक़्द कर दिया। निकाह हो जाने के बाद आप बमुक़तज़ाए बशरिय्यत नयी दुल्हन की सोहबत व रफ़ाक़त में मशग़ूल रहे। तीन शब दरूद शरीफ़ पढ़ना क़ज़ा हो गया।

तीसरे दिन आपके एक मुरीद बुज़ुर्ग रईस अहमद ने ख़्वाब में देखा कि एक निहायत आालीशान महल है। उसके इर्द-गिर्द बेशुमार मख़लूक़ जमा है। एक बुज़ुर्ग नूरानी सूरत इस महल में आ-जा रहे हैं। वह लोगों का पैग़ाम महल में पहुँचाते हैं और वहाँ से जो कुछ जवाब मिलता है उसको वापिस आकर सुनाते है।

रईस अहमद ने एक शख़्स से दरयाफ़्त किया। ये कौन बुज़ुर्ग हैं और ये आलीशान महल किसका है? आदमी ने जवाब दिया कि इस महल में हुज़ूर सरवरे कायनात (सल्ल०) रौनक़ अफ़रोज़ हैं और ये बुज़ूर्ग हज़रत अब्दुललाह बिन मसऊद हैं। ये सुनकर रईस अहमद ने आगे बढ़कर हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद से अर्ज़ किया कि मेरा पैग़ाम भी हुज़ूर (सल्ल०) की ख़िदमत में पहुँचा दीजिए। फ़्लाँ शख़्स हुज़ूर (सल्ल०) के दीदार पुर अनवार का मुतमन्नी है। हज़रत

अब्दुल्लाह बिन मसऊद महल में तशरीफ़ ले गए और जवाब लाए कि हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया है कि अभी इस शख़्स में मेरे दीदार की इस्तेदाद पैदा नहीं हुई और तू मेरा सलाम कुत्बुद्दीन ओशी को पहुँचाकर मेरी तरफ़ से कहना कि तू हर रोज़ रात को तोहफ़ा मेरे पास भेजा करता था, क्या बात है तीन रोज़ से नहीं आया।

ख़्वाब से बेदार होकर रईस अहमद ने हज़रत कुत्ब साहब की ख़िदमत में हाज़िर होकर ख़्वाब बयान किया। हुज़ूर (सल्ल०) का पैग़ाम सुनते ही आप खड़े हो गए। फ़रमाया : हाँ, क्या फ़रमाया ? रईस अहमद ने अर्ज़ किया : फ़रमाया है कि जो तोहफ़ा तुम रात को भेजा करते थे वह तीन शब से क्यों नहीं भेजा? हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया बेशक मैं तीन रात से अपनी नई बीवी के चोचले में लगा हुआ था इसी वजह से तीन रोज़ से दरूद शरीफ़ का तोहफ़ा नाग़ा हो गया। हज़रत कुत्ब साहब ने उसी वक़्त बीवी को बुलाकर मेहर अदा करके तलाक़ दे दी और बदस्तूर औरादो वज़ायफ़ में मशग़ूल हो गए। इसके बाद हज़रत कुत्ब साहब ने देहली तशरीफ़ आवरी तक कोई निकाह न किया।

औलादे अमजाद

देहली में मुस्तक़िल क़याम के बाद हज़रत कुत्ब साहब ने निकाह किया। मौलाना मुहम्मद अकरम इक़्तबासुल अनवार में लिखते हैं--

हज़रत कुत्ब साहब ने आख़िरी उम्र में देहली में शादी की थी जिससे दो साहबज़ादे पैदा हुए थे। एक साहबज़ादे का नाम ख़्वाजा अहमद था जिनका मज़ार हज़रत कुत्ब साहब के पहलू में है। ये

साहबज़ादे बड़े दरजे के बुज़ुर्ग थे जो ख़्वाजा अहमद तमाची के नाम से मशहूर थे। ये साहबज़ादे हज़रत कुत्ब साहब के विसाल के बाद सूल्तानुलमशाइख़ हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही (रह०) के ज़माने तक हयात रहे। दूसरे साहबज़ादे का नाम शैख़ मोहम्मद था जो अय्यामे सिग़रे सिनी में इन्तिक़ाल कर गए थे। ये दोनों साहबज़ादे जुड़वाँ पैदा हुए थे।

सियरुलअक्ताब में है कि जब हज़रत कुत्ब साहब के साहबज़ादे का इन्तिक़ाल हुआ लड़के की वालिदा जज़ाअ-फ़ज़अ करने लगी। गिर्या व बक़ा की आवाज़ सुनकर हज़रत कुत्ब साहब ने हज़रत शैख़ बदरुद्दीन ग़ज़नवी से दरयाफ़्त किया कि ये रोने की आवाज़ कैसी आ रही है। मौलाना ने अर्ज़ किया हुज़ूर के साहबज़ादे का इन्तिक़ाल हो गया है। उनकी वालिदा अपने बेटे के ग़म में रो रही हैं। हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया कि अफ़सोस मुझे लड़के की बीमारी तक की ख़बर न हुई। अगर ख़बर होती तो रब्बुलइज़्ज़त से उसकी ज़िंदगी और माँग लेता। मुझे उम्मीद है कि मेरी इल्तिजा क़बूल होती, मगर चुँकि उसे मरना था इसलिए मुझे इसका हाल मालूम न हो सका। इसके बाद हज़रत कुत्ब साहब अहलिया मोहतरमा को सब्र व दिलासा देकर मुराक़बे में मशगूल हो गए।

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंज शकर(रह०) ख़लीफ़ा इरादत में

हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंजशकर हज़रत कुत्ब साहब के मुरीद और ख़लीफ़ए आज़म थे। जिस ज़माने में हज़रत बाबा साहब (रह०) मुल्तान में तालीम हासिल कर रहे थे। हज़रत कुत्ब साहब मुल्तान तशरीफ़ ले गए। मस्जिद मौलाना मिन्हाजुद्दीन में क़याम

फ़रमाया। हज़रत बाबा साहब भी उसी मस्जिद में मुताला में मशगूल थे। किताब नाफ़े आपके हाथ में थी। हज़रत कुत्ब साहब की नज़र कीमिया असर उन पर पड़ी। फ़रमाया : बेटे क्या पढ़ रहे हो? बाबा साहब ने अर्ज़ किया : किताब नाफ़े। ये सुनकर हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया : इन्शाअल्लाह तुमको नाफ़े से नफ़ा होगा। हज़रत कुत्ब साहब का इरशाद सुनते ही हज़रत बाबा साहब का दिल हाथों से निकल गया। अर्ज़ किया- " ख़ादिम को हुज़ूर की ख़िदमत और नज़र सआदत से फ़ायदा होगा और मुज़तरेबाना जोश के साथ खड़े होकर हज़रत कुत्ब साहब के क़दमों में सर रख दिया।

मुल्तान में चन्द रोज़ क़याम के बाद जब हज़रत कुत्ब साहब देहली रवाना हाने लगे तो बाबा साहब ने आपके साथ देहली जाना चाहा। हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया कि अभी तुम इल्म हासिल करो। तकमीले तालीम के बाद मेरे पास देहली आ जाना। हज़रत कुत्ब साहब रवाना हो गए। हज़रत बाबा साहब आपको कई मंज़िल तक रुख़सत करने साथ-साथ आए।

हज़रत कुत्ब साहब की वापसी के बाद हज़रत बाबा साहब क़न्धार चले गए और वहाँ कुछ अरसा तालीम हासिल करने के बाद बग़दाद तशरीफ़ ले गए । वहीं दस्तारे फ़ज़ीलत हासिल की। इसके बाद मुल्तान वापस आ गए । दौरान तालीम आपने हज़रत शैख़ बहाउद्दीन ज़करिया (रह०), हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी, हज़रत शैख़ बहाउद्दीन हमवी, हज़रत शैख़ औहदुद्दीन किरमानी (रह०), हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन हज़री और दीगर मशाइख़ किराम से मुलाक़ात और इस्तिफ़ादा किया।

मुल्तान वापस आकर वलवलाए खुदा तलबी में देहली तशरीफ़ लाए और 5 रमज़ान सन् 584 हिजरी को हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब के हाथ पर बैअत हुए।

हज़रत बाबा साहब ने पीरो मुर्शिद के हुक्म से रियाज़त व मुजाहदात शुरू किए और ग़ज़नी के क़रीब एक हुजरे में रियाज़त शुरू कर दी। हफ़्ते में दो बार पीरो मुर्शिद के हुज़ूर में हाज़िर हुआ करते थे। इस दौरान आपने चिल्ला माकूस और सख़्त रियाज़तें कीं।

हज़रत बाबा साहब अपने हुजरे में चिल्ला कर रहे थे कि हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ देहली में हज़रत कुत्ब साहब के पास तशरीफ़ लाए। हज़रत कुत्ब साहब ने अपने मुरीदों को पीरो मुर्शिद के हुज़ूर में पेश किया। हर मुरीद ने अपनी हस्बे लियाक़त हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ से रूहानी नेमत हासिल की।

सरकार ग़रीब नवाज़ ने फ़रमायाः और कोई मुरीद तो नहीं रहा? हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमायाः हाँ एक फ़क़ीर चिल्ल में बैठा हुआ है। सरकार ग़रीब नवाज़ ने फ़रमायाः आओ, चलो उसे देखकर आएँ। चुनांचे ये दोनों बुज़ुर्ग हज़रत बाबा साहब की क़याम गाह पर तशरीफ़ ले गए। कसरते रियाज़त व मुजाहिदात से हज़रत बाबा साहब में खड़े होने की ताक़त न रही थी। इस दरजे ज़ईफ़ और कमज़ोर हो गए थे कि इस्तिक़बाल और ताज़ीम के लिए खड़े न हो सके। आँखों में आँसू भरकर क़दमों पर सर रख दिया।

ये हालत देखकर सरकार ग़रीब नवाज़ ने फ़रमाया- "बख़्तियार इस नौजवान को कब तक मुजाहिदों की आग में जलाओगे। आओ हम तुम दोनों मिलकर इसको कुछ अता करें।"

इसके बाद बाबा साहब का एक बाज़ू सरकार ग़रीब नवाज़

ने थामा, दूसरा बाजू हज़रत कुत्ब साहब ने पकड़कर खड़ा किया
सरकार ग़रीब नवाज़ ने आसमान की तरफ़ रूए अनवर उठाकर
फ़रमायाः या जल्लजलालुहू फ़रीद को क़बूल फ़रमा। दुरवेश कामि
का मरतबा अता फ़रमा। निदा आई-"हमने क़बूल किया।"

ये ग़ैबी आवाज़ सुनकर हज़रत बाबा साहब पर कैफ़ियत
तारी हो गई। हज़रत कुत्ब साहब ने बाबा साहब को इस्मे आज़म
तालीम फ़रमाया। तमाम उलूम लदुन्नी मुनकशिफ़ हो गए। इसके बाद
सरकार ग़रीब नवाज़ ने बाबा साहब को ख़िरक़ा ख़ास अता फ़रमाया,
हज़रत साहब ने दस्तार और दीगर लवाज़िमाते ख़िलाफ़त देकर ख़िलाफ़त
अता फ़रमाई। हज़रत बाबा साहब को चिश्त के दो बादशाहों की तरफ़
से रूहानी सल्तनत मिली। किसी शायर ने इससे मुतास्सिर होकर कहा
है -

> बख़्शिशे कौनैन अज़ शैख़ैन बगिरिफ़्ता मुरीद
> बादशाही याफ़्ता अज़ बादशाहाने जहाँ
> आलम कुन गश्त अक़्ता तू ऐ शाहजहाँ

इसके बाद सरकार ग़रीब नवाज़ ने हज़रत कुत्ब साहब को
ख़िताब फ़रमाया-"बख़्तियार! तुमने ऐसे शहबाज़ को दाम में लिया है जो
सिदरतुल मुन्तहा पर अपना आशियाना बनाएगा। ये फ़रीद शमा है
जिसकी रौशनी से दुर्वेशों का ख़ान्वादा मुनव्वर हो जाएगा।"

हज़रत कुत्ब साहब अजमेर में

अता-ए-ख़िरक़ा व सज्जादगी

हज़रत ख़्वाजा साहब देहली में क़याम पज़ीर होने के बाद
वक़्तन फ़वक़्तन पीरो दस्तगीर हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ख़िदमत

में हाज़िर होते रहते थे। सबसे आख़िरी मरतबा हज़रत कुत्ब साहब ने जब अजमेर शरीफ़ जाने का क़स्द किया तो एक अरीज़ा ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की ख़िदमत में इरसाल किया। इश्तियाक़े पा बोसी ज़ाहिर किया।

हज़रत कुत्ब साहब जवाब मिलते ही फ़ौरन रवाना हो गए और बउजलत तमाम अजमेर पहुँच कर सआदते पाबोसी हासिल की और कुछ दिनों पीरो मुर्शिद के हुजूर में सआदत हुजूरी हासिल फ़रमाई। एक रोज़ हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फ़रमाया कि अल्लाह के दोस्तों में इन तीन सिफ़ात की मौजूदगी ज़रूरी है:

(1) ख़ौफ़ – कोई गुनाह सरज़द न हो ताकि अज़ाबे दोज़ख़ से नजात मिले।

(2) रज़ा – मुहब्बत के साथ-साथ रज़ा की मौजूदगी भी ज़रूरी है-दिल में।

(3) मुहब्बत – सिवाए हक़ सुबहानहू के और कोई दुसरा ख़याल न हो।

और फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने किसा शख़्स के सफ़्हए हस्ती पर बक़ाए जावेद तहरीर नही फ़रमाया। नक़्क़ाशे सूरत अज़ल ने तमाम मुमकिनात के सफ़्हए हस्ती पर कुल्लो शैइन हालिकुन इल्ला वजहुहू तहरीर फ़रमाया है इसलिए दुनिया में हर शख़्स को सफ़रे आख़िरत दरपेश है। एक रोज़ इस दुनिया को छोड़कर दूसरी दुनिया में जाना है। अब मेरे आख़िरी सफ़र का वक़्त भी आ गया है। अहबाब मुझसे जुदा हो जाएँगे। मेरा मदफ़न अजमेर होगा। इसके बाद हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने वसीक़ा ख़िलाफ़त व सज्जादगी लिखकर अता फ़रमाया। कुलाह चार तुर्की सर पर रखकर दस्तार ख़िलाफ़त बाँधी और हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी का असा, कुरआन शरीफ़, मुसल्ला,

ख़िरक़ा, अता करते हुए फ़रमाया कि ये अमानत हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) की हमारे ख़्वाजगान को मिली थी। मैंने इस अमानत का हक़ अदा किया, अब तुम्हारा काम है कि इसका हक़ अदा करो। इसके बाद कुछ आरिफ़ाना कलमात इरशाद फ़रमाए और मेरे सर पर अपना दस्ते मुबारक रखकर फ़रमाया मैंने तुम्हें ख़ुदा के सेपुर्द किया। मंज़िल गाह कुर्ब तक पहुँचाया। जहाँ रहो ख़ैर ख़ूबी से रहो। जहाँ रहो मर्द और ख़ुदाशनास बनकर रहो। इसके बाद ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने सर मुबारक उठाकर दुआ फ़रमाई। आँखों में आँसू आगए। फ़रमायाः जाओ अब देहली चले जाओ।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का विसाल

हज़रत ख़्वाजा कुत्ब साहब अजमेर से देहली वापिस आ गए। चन्द रोज़ के बाद एक शख़्स ने अजमेर से आकर अर्ज़ किया कि अजमेर से वापसी के बीस रोज़ बाद पीर दस्तगीर हज़रत ख़्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती विसाल फ़रमा गए। ये ख़बरे वहशत असर सुनकर हज़रत कुत्ब साहब ज़ार-ज़ार रोने लगे। इस क़द्र सदमा हुआ, बयान से बाहर है। हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमायाः अल्लाह के दोस्तों को मौत नही आती। मरा नही करते, ज़ाहिर बीनों की निगाह से ग़ायब हो जाते है। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ज़िन्दा हैं। क़ियामत तक उनके तसर्रुफ़ात बाक़ी रहेंगे।

सफ़र आख़िरत की तैयारी

सुल्तानुलमशाइख़ हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही ने फ़वाइदुल फ़वाद में तहरीर फ़रमाया है कि जुमा का दिन था,

हज़रत ख़्वाजा साहब ईद की नमाज़ पढ़कर उस मक़ाम पर तशरीफ़ लाए जहाँ आपका मज़ार मुबारक है और कुछ देर क़ियाम फ़रमाया। खड़े होकर सोचते रहे। उस ज़माने में वह ज़मीन उफ़्तादा और ग़ैरआबाद थी। हज़रत के दोस्तों ने जो साथ थे अर्ज़ किया: आज ईद का दिन है। ज़ाइरीन दौलतसरा पर तशरीफ़ आवुरी के मुन्तज़िर होंगे। यहाँ ठहरने और देर फ़रमाने का क्या सबब है। हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया: जाओ इस क़िताआ ज़मीन के मालिक को बुलाओ। खुद्दाम बुला लाए। हज़रत कुत्ब साहब ने वह ज़मीन सरफ़े ख़ास से ख़रीदकर फ़रमाया कि ये जगह मेरी मदफ़न होगी।

हज़रत बाबा फ़रीद की हाँसी को रवानगी अताए ख़िलाफ़त व सज्जादगी

शैखुलइस्लाम हज़रत बाबा फ़रीद (रह०) ने फ़रमाया है कि मैं पीरो मुर्शिद हज़रत कुत्ब साहब की ख़िदमत बाबरकत में हाज़िर था। एक रोज़ हाँसी जाने के क़स्द से उठा। हज़रत कुत्ब साहब ने मेरी तरफ़ देखते हुए आबदीदा होकर फ़रमाया –

"मौलाना फ़रीदुद्दीन! मैं जानता हूँ तुम हांसी जाओगे।" मैंने अर्ज़ किया–"मैं ताबे फ़रमान हूँ।" फ़रमाया: "जाओ। क़लम क़ुदरत यूँ ही चल चुका है। तुम मेरे सफ़र आख़िरत के वक़्त मेरे पास मौजूद न होगे।" हज़रत कुत्ब साहब ने हाज़िरीन की तरफ़ मुतवज्जोह होकर फ़रमाया: "आओ – हम सब मिलकर इस फ़क़ीर की नेमते दीन – दुनिया में इज़ाफ़ा के लिए दुआ करें।" इसके बाद मुसल्ला और असा इनायत करते हुए फ़रमाया: तुम्हारी अमानत सज्जादा, ख़िर्क़ा, दस्तार और नालैन क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी को दे जाऊँगा। तुम मेरी वफ़ात के

पाँचवी रोज़ यहाँ आओगे। तुम्हारी अमानत तुम्हें मिल जाएगी। मैंने तुम्हें अपना सज्जादानशीं और क़ाइम मक़ाम मुक़र्रर किया। तुम इन तबर्रुकात को निहायत अदब के साथ रखना और जिस शख़्स को इनका अहल समझना दे देना।

हज़रत क़ुत्ब साहब की ये वसीयत सुनकर हाज़िरीन मजलिस ज़ार-ज़ार रोने लगे। शोर मातम बरपा हो गया। हाज़िरीन मजलिस ने दुआ की । इसके बाद हज़रत क़ुत्ब साहब ने मुझे अपनी आग़ोश में लेकर फ़रमायाः हाज़ा फ़िराक़ो बैनी व बैन-कुम। ये हमारी आख़िरी मुलाक़ात है। इसके बाद मुलाक़ात ज़ाहिरी नसीब न होगी। जाओ मैंने तुम्हें खुदा के सुपुर्द किया। मैंने ज़मीने ख़िदमत पर सर रख दिया और हाँसी रवाना हो गया।

हज़रत क़ुत्ब साहब का विसाल

हज़रत क़ुत्ब साहब की तारीख़े विसाल में इख़तिलाफ़ है। एक रिवायत है कि हज़रत क़ुत्ब साहब की तारीख़ विसाल 4 रबीउल अव्वल, सन् 634 हिजरी है। दूसरी रिवायत के मुताबिक़ सन् 635 हिजरी को सुल्तान शम्सुद्दीन अलतमश के अहद में विसाल फ़रमाया।

विसाल के वक़्त हज़रत क़ुत्ब की क्या उम्र थी? किसी ने पचास बरस, किसी ने बावन, किसी ने 74 और किसी ने ये लिखा है कि आप की उम्र 30 बरस भी न हुई थी।

हज़रत क़ुत्ब साहब का विसाल होते ही कोहराम मच गया। सफ़े मातम बिछ गई। जनाज़ा तैयार किया गया। सुल्तान शम्सुद्दीन औलिया, मुरीद ख़ास व ख़लीफ़ा आँहज़रत और दिगर खुलफ़ा, मशाइख़ और देहली के अवाम व ख़्वास जमा हो गए। नमाज़ जनाज़ा की तैयारी

हुई। हज़रत मौलाना अबू सईद ने एलान किया कि हमारे ख़्वाजा की वसीयत है कि मेरी जनाज़े की नमाज़ वह आदमी पढ़ाए जो कभी फ़ेले हराम का मुरतकिब न हुआ हो और जिसकी अस्र की सुन्नत और तकबीरे ऊला फ़ौत न हुई हो।

बावजूद यह कि इस मजमे में सैंकड़ों औलिया, उलमा, फ़ुज़ला और उब्बाद व ज़ुह्हाद मौजूद थे लेकिन सब हैरान थे कि हज़रत क़ुत्ब साहब की जनाज़े की नमाज़ कौन पढ़ाए। सुल्तान शम्सुद्दीन चुप व रास्त नज़र डाल रहे थे कि कौन खुदा का बन्दा नमाज़ पढ़ाने के लिए आगे बढ़ेगा। मगर सदाए बरनख़ास्त आख़िर जनाज़ा रखे-रखे जब देर हो गई तो सुल्तान शम्सुद्दीन ये फ़रमाते हुए आगे बढ़े-

"मैं नहीं चाहता था कि किसी शख़्स को मेरे हाल की इत्तिला हो लेकिन चूँकि मेरे ख़्वाजा का हुक्म है इसलिए तामीले हुक्म के सिवा चारा नहीं।" नमाज़ जनाज़ा के बाद एक तरफ़ से जनाज़े को कंधा हज़रत सुल्तान शम्सुद्दीन ने दिया और तीन तरफ़ से और मशाइख़ ने दिया। और जाए मज़ारे मुबारक पर ले जाकर आपको सुपुर्द आग़ोशे ख़ाक कर दिया। जिस रोज़ हज़रत क़ुत्ब साहब का विसाल हुआ उसी रात को हज़रत शैख़ बदरुद्दीन ग़ज़नवी (रह०) ने ख़्वाब में देखा कि हज़रत क़ुत्ब साहब जानिब आसमान परवाज़ कर रहे हैं और फ़रमा रहे हैं कि ऐ बदरुद्दीन! खुदा के दोस्त मरा नहीं करते। ख़्वाब से बेदार होकर मुझे मालूम हुआ कि हज़रत क़ुत्ब साहब विसाल फ़रमा गए।

सबए सनाबिल में ख़्वाजा हमीदुद्दीन नागौरी से मनकूल है कि वह फ़रमाते हैं कि हज़रत क़ुत्ब साहब की तदफ़ीन के बाद मैं मज़ारे मुबारक पर हाज़िर था। मैंने देखा मुन्कर नकीर हज़रत क़ुत्ब साहब के

पास आए और मोअद्दब बैठ गए। इस दरमियान में दो फ़रिश्ते आसमान से उतरकर आए। उन्होंने हक़ सुबहानहू व तआला का सलाम हज़रत कुत्ब साहब की ख़िदमत में पेश किया और एक काग़ज़ जो अंबर से लिखा हुआ पेश किया जिसमें तहरीर था-"ऐ कुत्बुद्दीन! मैं तुमसे खुश हूँ। आज तुम्हारी बरकत से उम्मते मुहम्मदी (सल्ल०) के तमाम गुनाहगारों की क़ब्रों से अज़ाब उठा दिया गया। ज़िंदा आदमियों ने तो तुमसे फ़ायदा हासिल किया था, मुरदे तुम्हारे फ़ैज़ से क्यों महरूम रहें।"

इसके बाद ये दोनों फ़रिश्ते वापस हो गए। दो फ़रिश्ते और आए और उन्होंने मुन्करनकीर से कहा-

"खुदा तआला ने फ़रमाया है कि कुत्बुद्दीन से कोई सवाल न करना। मैं खुद उनसे सवाल कर चुका हूँ। उन्होंने सवाल का जवाब सही-सही दिया है।"

हज़रत बाबा साहब को पीरो मुर्शिद के विसाल की इत्तिला और देहली में आमद

सुल्तानुल मशाइख़ हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया महबूबे इलाही ने फ़रमाया कि जिस रात हज़रत कुत्ब साहब ने विसाल फ़रमाया उसी शब हज़रत बाबा साहब ने ख़्वाब में देखा कि हज़रत कुत्ब साहब अपने हुज़ूर में तलब फ़रमा रहे हैं। ये ख़्वाब देखते ही बाबा साहब समझ गए कि हज़रत कुत्बुल अक़ताब विसाल फ़रमा गए। ज़ार-ज़ार रोते हुए जानिबे देहली रवाना हुए।

हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी ने हज़रत कुत्ब साहब के विसाल के बाद एक आदमी हज़रत बाबा साहब को इत्तिला के लिए

भेजा। हज़रत बाबा साहब हाँसी से तशरीफ़ ला रहे थे। इधर से वह आदमी हाँसी जा रहा था। क़स्बा महीम में हज़रत क़ाज़ी साहब के आदमी से हज़रत बाबा साहब की मुलाक़ात हुई। हज़रत क़ाज़ी साहब का ख़त पेश किया। ख़त पढ़ते ही हज़रत बाबा साहब रोते-रोते हाल से बेहाल हो गए। उफ़्ताँ व ख़ेज़ाँ बादल बिरयाँ व हितमे गिरयाँ देहली पहुँचे। मज़ारे अक़दस पर हाज़िर होकर टूटे हुए दिल और आँसूओं का नज़राना पेश किया।

हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी (रह०) ने तबर्रुकात सुपुर्द किए। हज़रत बाबा साहब ने दोगाना अदा करके ख़िरक़ा मुबारक ज़ेबतन फ़रमाया। पीरो दस्तगीर के सज्जादा पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए।

मुआशरत अख़लाक़े सिफ़ाते आलिया

इबादत

मिरआतुल अबरार में है कि हज़रत क़ुत्ब साहब एलावह फ़राइज़े पंजगाना के दिन-रात में तक़रीबन 3 सौ रकअत नफ़्ल पढ़ा करते थे।

हज़रत क़ुत्ब साहब हाफ़िज़े क़ुरआन थे। क़ुरआन ख़त्म करना आपका रोज़ मर्रह का मामूल था। रात को सोते वक़्त 3 हज़ार मरतबा दरूद पढ़ा करते थे।

रात-दिन तिलावते क़ुरआन में मशग़ूल रहते थे। आयत यास रहग में पढ़कर आपकी यह हालत होती थी कि रोते-रोते बुरा हाल हो जाता था। सीना को नाख़ुनों से छील डालते, कपड़े फाड़ डालते और बेहोश हो जाते थे। जब होश आता फिर तिलावत करने लगते और मुनासिबे हाल अशआर पढ़ने लगते थे।

मसालिकुस्सालिकीन में है कि एक मरतबा हज़रत कुत्ब साहब, क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी और मौलाना वदरुद्दीन ग़ज़नवी ये तीनों बुज़ुर्ग जामा मस्जिद में मोतकिफ़ थे। ये तीनों बुज़ुर्ग दिनभर में एक-एक, दो-दो कुरआन ख़त्म कर लिया करते थे। एक रोज़ इन तीनों हज़रात की राय हुई कि आज रात दो रकअत नमाज़ एक पैर पर खड़े होकर तुलूए सुब्ह सादिक़ तक अदा करें। चुनांचे ये तीनों बुज़ुर्ग वुज़ू करके एक पैर पर खड़े होकर नमाज़ में मशगूल हो गए। क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी ने इमामत फ़रामई। क़ाज़ी साहब ने एक रकअत में कुरआन ख़त्म करके 4 पारे ज़ियादह पढ़े और दूसरी रकअत में 26 पारे पढ़कर एक कुरआन और ख़त्म किया। सलाम फेरने के बाद इन तीनों बुज़ुर्गों ने एक पैर पर खड़े होकर निहायत इज्ज़ व इनकिसारी से हक़ ताला से दुआ की -

"या इलाहल आलमीन! जो इबादत तेरी शायानेशान है वह हमसे कब अदा हो सकती है, तु अपने फ़ज़्ल व करम से हमें बख़्श दे।"

निदा आई —

"ऐ दोस्तो! तुमने मेरी इबादत ख़ूब की। मैंने तुम्हें बख़्श दिया और अपने उश्शाक़ में क़बूल कर लिया। तुम अपनी मुरादों को पहुँचो।"

उज़लत और गोशा नशीनी

जवामेउलकलिम में हज़रत सैयद मोहम्मद गेसूदराज़ (रह०) ने लिखा है कि हज़रत कुत्ब साहब हर वक़्त ख़ामोश, ग़मगीन और उदास रहते थे। किसी दम आपको रोने से फ़ुर्सत न थी। दरवाज़े बन्द किए बैठे रहते थे। जब ज़ियारत करनेवालों का हुजूम होता और इश्तियाक़

दीदार बहुत पाया जाता तो ख़ादिम आपकी ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ करते कि ख़िलक़त हुज़ूर के इश्तियाक़े दीदार में मुन्तिज़र है। उस वक़्त आप सर्द आह भरकर इजाज़त देते। जब ज़ाइरीन सामने आते, आप उनपर नज़रे शफ़क़त फ़रमाते और ख़ादिम को इशारा फ़रमाते कि पानी के पियाले से सबकी तवाज़ो करो। जब तक पानी तक़्सीम होता आप खड़े रहते। लोगों को पन्दो नसीहत करते। जब पानी तक़्सीम हो लेता तो सबको रुख़सत फ़रमा देते।

मुराक़बा और इस्तिग़राक़

असरारुल आरिफ़ीन में है कि हज़रत क़ुत्ब साहब शब व रोज़ मुराक़बा में रहते थे। नमाज़ के वक़्त आँखें खोलकर ग़ुसल और ताज़ा वुज़ू करके नमाज़ अदा फ़रमाते थे। आपको हक़ ताला के साथ मशग़ूलियत की यहाँ तक नौबत पहुँच गई थी कि जब कोई शख़्स आपकी ज़ियारत के वास्ते आता तो उसे कुछ देर इन्तिज़ार करना पड़ता था। आपको इत्तिला की जाती थी तब आप होशियार होकर बात करते थे। फ़िर फ़रमाते थे: मुझे माज़ूर रखो, इसके बाद मुराक़बा में मसरूफ़ हो जाते थे।

जिस वक़्त आपके साहबज़ादे का इन्तिक़ाल हुआ और अहलिया मोहतरमा लड़के की मौत पर जज़अ्-फ़ज़अ् करने लगीं तो आपने मौलाना बदरुद्दीन से दरयाफ़्त फ़रमाया कि घर में से रोने की आवाज़ क्यों आ रही है। मौलाना ने जवाब दिया। आपके साहबज़ादे का इन्तिक़ाल हो गया है। हज़रत क़ुत्ब साहब ने फ़रमाया अगर मुझे लड़के की बीमारी की ख़बर होती तो मैं रब्बुल इज़्ज़त से उसके लिए कुछ उम्र माँग लेता। मुझे उम्मीद है कि मेरी दरख़्वास्त क़बूल होती मगर उसे तो

मरना ही था इसी लिए मुझे बीमारी की ख़बर न हुई। इसके बाद हज़रत कुत्ब साहब ने अहलिया मोहतरमा को दिलासा और तसल्ली देकर जज़अ्-फ़ज़अ् से मना किया और मुराक़बा में मश्गूल हो गए।

ज़ौक़े समाअ्

हज़रत कुत्ब साहब समाअ् के बहुत ही दिलदादा थे। समाअ् के मुतअल्लिक़ कई वाक़ेआत नाज़िरीन किराम सफ़हाते गुज़श्ता में मुताला फ़रमा चुके हैं। हज़रत कुत्ब साहब को इस क़द्र ज़ौक़ व शौक़ हासिल था कि जहाँ महबूब का ज़िक्र सुनते बेताब व बेक़रार हो जाते, कई-कई रोज़ तक आलमे बेखुदी व बेहोशी में रहते थे। नमाज़ के वक़्त होश में आकर नमाज़ अदा करते थे। नमाज़ से फ़रागत के बाद फ़िर वही बेखुदी का आलम तारी हो जाता था।

एक रोज़ हज़रत कुत्ब साहब के हुज़ूर में क़व्वालों ने ये शेर पढ़ा —

सुरूद चीस्त कि चन्दीं फ़सूने इश्क़ दरे दस्त
सुरूद महरम इश्क़ अस्त व इश्क़ महरम ऊस्त

ये शेर सुनकर आप पर हालत तारी हुई, सात दिन-रात मुसलसल बेहोश रहे। एक दाना या पानी का क़तरा पेट में न गया, मगर नमाज़ वक़्त पर अदा फ़रमाई।

फ़वाइदुस्सालिकीन में वाक़ेआ मज़कूर है कि एक रोज़ आपकी मजलिस में सीरत का ज़िक्र हो रहा था। आपने फ़रमाया कि एक रोज़ हज़रत इमामुल हरमैन (रह०) अपने एराब के साथ मस्जिद में बैटे हुए थे, एकाएक उनपर कैफ़ियत पैदा हुई। उन्हों ने ज़िक्र शुरू कर दिया। उनकी मुवाफ़क़त में हाज़िरीन ने भी ज़िक्र शुरू कर दिया।

उसी हालत में एक दिन और एक रात गुज़र गई। किसी को अपने तन-बदन की होश न रही। उसके बाद उनके हरबुने मू से ख़ून जारी हो गया। ख़ून का जो क़तरा ज़मीन पर गिरता था उस से नक़्श अल्लाह पेदा होता और उस नक़्श में से भी अल्लाह के ज़िक्र की आवाज़ आने लगती थी।

हज़रत क़ुत्ब साहब पर यह वाक़ेआ ज़िक्र फ़रमाते हुए हालत व कैफ़ियत तारी हो गई। अल्लाह-अल्लाह का ज़िक्र करने लगे। इस क़द्र ज़िक्र किया कि बेहोश हो गए। बड़ी देर बाद जब होश आया तो हज़रत क़ुत्ब साहब ने ये रुबाई पढ़ी -

ज़िक्रे खुश तू ज़हर दहन मी शनवम
शरअे ग़म अज़ ख़वीशतन मी शनवम
गर हीज ज़ेबाशद कि यके ब निशानम
ता नामे तू मी गोयद व मन मी शनवम

इसके बाद हज़रत क़ुत्ब साहब ने इस क़द्र ज़िक्र किया कि हर बुने मू से ख़ून जारी हो गया। जो क़तरह ख़ून का ज़मीन पर गिरता था उससे नक़्श सुब्हानल्लाह पैदा हो जाता था और सुब्हानल्लाह-सुब्हानल्लाह के ज़िक्र की आवाज़ आती थी।

हक़ सुबहानहू तआला से इश्क़

मसालेकुस्सालिकीन में है कि जिस महफ़िल में समाअ् में आप पर वह हालत तारी हुई थी जिसमें हज़रत क़ुत्ब साहब की वफ़ात हुइ , उसी कैफ़ियत के चौथे रोज़ हकीम शम्सुद्दीन तबीबे हाज़िक़ भी हाज़िरे मज्लिस थे।

इस कैफ़ियत व हालत को देखकर उन्होंने नब्ज़ देखकर कहा

कि ख़्वाजा साहब मरज़े इश्क़ में मुब्तला हैं। इश्क़ की आग से हज़रत कुत्ब साहब का दिल व जिगर सोख़्ता हो चुका है। अब ख़्वाजा साहब का बचना मुश्किल है और उनकी हालत लाइलाज है।

तवक्कुले हक़ीक़ी

शैख़ुलइस्लाम हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंज शकरी (रह०) ने फ़रमाया है कि हज़रत कुत्ब साहब 30 बरस तक आलमे तवक्कुल में रहे। ख़िलक़त से उज़लत इख़्तियार किए रहे। नज़रो नज़राना क़बूल न फ़रामते थे। बावरचीख़ाने के लिए ख़र्च की ज़रूरत होती। ख़ादिम ज़मीन बोस होकर अर्ज़ करता। आप मुसल्ले का कोना उठाकर फ़रमाते कि जिस क़द्र ख़र्च की ज़रूरत हो ले लो। मेहमान के लिए ख़र्च की ज़रूरत होती तो आप मुसल्ले के नीचे से एक मुट्ठी दीनार उठाकर दे देते थे जिससे सुबह से शाम तक का ख़र्च पूरा हो जाता था। कोई मुसाफ़िर और ज़रूरतमन्द आपके यहाँ से ख़ाली न जाता था।

शोहरत और नामवरी से तनफ़्फ़ुर

हज़रत कुत्ब साहब शोहरत और नामवरी से सख़्त मुतनफ़्फ़िर थे इसलिए आप अपना हाल छिपाने की बेहद कोशिश करते थे। मुरीदों को भी यही हिदायत थी कि शोहरत और नामवरी फ़क़ीरों के लिए सामाने आफ़त है।

देहली पहुँचकर जब हज़रत बाबा फ़रीद ने हज़रत कुत्ब साहब से चिल्लाकशी की इजाज़त चाही तो आपने फ़रमाया कि चिल्लाकशी की ज़रूरत नहीं। इन बातों से शोहरत होती है। हमारे

पीरों ने कभी ऐसा काम न किया जिससे उनको शोहरत और नामवरी हासिल हो।

उमरा और सलातीन का नज़राना क़बूल करने से इनकार

मसालिकुस्सालिकीन में है कि एक मरतबा सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश का वज़ीर छ: गाँव का फ़रमान और एक किश्ती अशर्फ़ियों की लेकर हाज़िर ख़िदमत हुआ कि हज़रत सुल्तान ने ख़ुद्दामे आसताना के लिए ये नज़राना भेजा है और आजिज़ी के साथ अर्ज़ किया है कि हुज़ूर इस हक़ीर नज़राना को क़बूल फ़रमाकर इज़्ज़त अफ़ज़ाई फ़रमाएँ।

हज़रत क़ुत्ब साहब ने जवाब दिया। ये काम तो मेरे पीरों ने भी नहीं किया, जाओ इसे वापस ले जाओ। अगर मैंने ये नज़राना क़बूल कर ली तो कल क़ियामत के दिन उनको क्या मुँह दिखलाउँगा।

वज़ीर ने हरचन्द मिन्नत समाजत की मगर हज़रत क़ुत्ब साहब ने एक बात न सुनी।

उसरत और फ़क़रो फ़ाक़ा की ज़िन्दगी

सियरुल अक़ताब और मसालिकुस्सालिकीन में है कि हज़रत क़ुत्ब साहब ज़ोह्द व क़नाअत में दरजा कमाल रखते थे। फ़क़रो फ़ाक़ा में यगानए वक़्त थे। आपके घर में अक्सर फ़ाक़ा रहता था, लेकिन किसी मुरीद या किसी शख़्स पर ज़ाहिर न होता था कि आपके घर में खाना नहीं पका। और अगर कभी इत्तिफ़ाक़ी तौर पर किसी पर ज़ाहिर हो जाता कि आपके घर में फ़ाक़ा है तो उस बात से आपको सख़्त मलाल होता था। एक मरतबा ऐसा इत्तिफ़ाक़ हुआ कि आपके घर में तीन रोज़ से फ़ाक़ा था। आपके साहबज़ादे ने ये बात बवजह कमसिनी

के किसी दोस्त से कह दी। उसने अपने बाप से जाकर बयान किया। चुनांचे फ़ौरन खाना पकवाया गया और खाने का ख़्वान हुजूर में लाकर माज़ेरत करने लगा। मुझे मालूम न था। आपके घर में फ़ाक़ा है। हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमायाः तुमसे किस गरदन टूटे ने मेरा फ़क़रो-फ़ाक़ा ज़ाहिर किया। आपकी ज़बाने मुबारक से ये अलफ़ाज़ निकले ही थे कि आपका साहबज़ादा जो खेल रहा था, खेलता-खेलता गिर पडा और उसकी गरदन की हड्डी टूट गई और वहीं मर गया।

लोगों से छिपकर ज़िक्र इलाही

सिलसिलतुल ज़हब में शैख़ नूर बख़्शी ने लिखा है कि ख़िलवत और गोशा नशीनी आपकी आदत थी। आप कम सोते थे। कम बोलते थे। लोगों की नज़रों से छुपकर इबादत और ज़िक्र इलाही किया करते थे और हत्तल इमकान अपना हाल छिपाने की कोशिश किया करते थे।आप फ़रमाते थे कि-

''मर्द का कमाल चार चीज़ों में है-कम ख़ाने में, कम बोलने में, कम सोने में और लोगों से बहुत कम मिलने में।

हज़रत ख़्वजा कुत्ब साहब फ़रमाया करते थे कि ग़ज़नी में एक दुर्वेश था। उसकी तजरीद की ये हालत थी कि अगर उसको कोई चीज़ अज़ क़िस्म फ़ुतूह मयस्सर होती थी तो वह शाम होने तक उसके पास न रहती थी। फ़ौरन फ़क़ीरों को तक़सीम कर देता था। उसके पास से अमीर व ग़रीब व फ़क़ीर कोई शख़्स क्यों न हो, कभी ख़ाली हाथ वापस न आता था हत्ता कि अगर कोई बरहना शख़्स उनके पास आता तो वह अपने कपड़े उतारकर उसे पहना देते थे। ग़र्ज़ यह है कि वह दुरवेश बड़ा साहिबे नेमत था। मुझे उस दुरवेश की सोहबत नसीब हुई।

उस दुरवेश ने मुझसे फ़रमाया कि मैं 40 बरस तक इबादत-रियाज़त में मशगूल रहा, मगर इस क़द्र इबादत करने के बाद मुझमें रौशनी पैदा न हुई। मगर जब इन चार चीज़ों को इख़्तियार किया तो मुझमें इस क़द्र रौशननी पैदा हो गई कि अर्श से तहतुस्सरा तक कोई चीज़ मुझसे पोशीदा न रही। आज इस बात को 30 बरस गुज़र गए हैं। ये फ़रमा कर मेरी तरफ़ मोतवज्जह होकर फ़रमाया-

"ऐ दुरवेश जब तक तू कम खाना, कम बोलना, कम सोना और लोगों से इख़्तिलात तर्क न करेगा उस वक़्त तक दुरवेशी का जौहर नुमायाँ न होगा।"

हज़रत क़ुत्ब साहब के मकान में दस्तरख़्वान, रकाबी, प्याला तक मौजूद न था

शैख़ुलइस्लाम हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन (रह०) फ़रमाया करते थे कि इब्तिदाए अहवाल में हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब के मकान में दस्तरख़्वान-रकाबी-प्याला तक मौजूद न था। आपकी ज़िन्दगी निहायत उसरत और तलख़ी से गुज़रती थी।

हज़रत क़ुत्ब साहब रात को कमर बिस्तर से न लगाते थे

सियरुलअक़ताब में है कि हज़रत ख़्वाजा साहब ने ख़ुदा ताला के साथ मशगूली की वजह से सोना बिल्कुल तर्क कर दिया था। शुरू-शुरू में नींद के ग़ल्बे के वक़्त घंटा-आधा घंटा सो भी जाते थे लेकिन आख़िर में तो ये हालत हो गई थी कि आप 24 घंटे मुराक़बा फ़रमाते रहते थे, बिस्तर को कमर लगाना नसीब न होता था।

******

पहली मज्लिस

मलफ़ूज़ात हज़रत ख़्वाजा कुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी (रह०)

(मुरत्तिबा शैखुलइस्लाम हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊद गंजशकर रह०) हज़रत फ़रीदुद्दीन गंजशकर ने फ़रमाया है कि माह रमज़ान 584 हिजरी को इस दुआगो ने दौलत पाबोसी हासिल की। उसी वक़्त कुलाह चार तुरकी मेरे सर पर रखी और बहुत शफ़क़त फ़रमाई। उस दिन मैं और क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी (रह०) मौलाना अलाउद्दीन किरमानी, सैयद नूरुद्दीन ग़ज़नवी (रह०) , शैख़ निज़ामुद्दीन अबुलमुईद (रह०), मौलाना शम्सुद्दीन तुर्क, ख़्वाजा महमूद मौइना दोज़ और दिगर असहाब हाज़िरे ख़िदमत थे। औलिया अल्लाह की कशफ़ व करामत का ज़िक्र छिड़ गया।

शैख़ कामिल की तारीफ़

हज़रत कुत्बुलअक़ताब ने फ़रमाया कि शैख़ में इतनी कुव्वते क़ल्बी होनी चाहिए कि जब कोई शख़्स बैत को आए तो शैख़ पहले ही नज़रे बातिन से इसके सीने को जो दुनिया की आलूदगी से सियाह हो रहा है, साफ़ कर दे ताकि आलाइशे दुनिया की कोई चीज़ उसके दिल के किसी कोने में बाक़ी न रहे। फिर उसका हाथ पकड़कर ख़ुदा तक

पहुँचा दे। अगर पीर में इतनी क़ुव्वत न हो तो यक़ीन जानो कि पीर और मुरीद दोनों गुमराही के जंगल में टामक टोइयाँ मार रहे हैं।

बदख़्शाँ के एक बुज़ुर्ग का तज़किरा

इसी मौक़े पर हज़रत क़ुत्ब साहब ने फ़रमाया कि असरारुल आरिफ़ीन में हज़रत ख़्वाजा अबू बक्र शिबली (रह०) ने लिखा है कि मैं एक मरतबा बदख़्शाँ का सफ़र कर रहा था। दौराने सफ़र एक बुज़ुर्ग से मुलाक़ात हुई। उनकी बुज़ुर्गी की तारीफ़ व तौसीफ़ तक़रीर व तहरीर से ख़ारिज है। मैंने उस बुज़ुर्ग को सलाम किया। सलाम का जवाब देकर उन्हों ने मुझे अपने पास बिठा लिया। मैं कई रोज़ तक उनकी ख़िदमत में हाज़िर रहा। वह बुज़ुर्ग सौमे दवाम रखते थे। शाम को इफ़्तार के वक़्त दो रोटियाँ आलमे ग़ैब से आती थीं।एक रोटी मुझे अता फ़रमा देते, एक रोटी खुद तनावुल फ़रमा लेते थे। एक रोज़ उन बुज़ुर्गवार ने हाकिमे शहर को बुलाकर फ़रमाया कि हमारे लिए 100 ख़ानक़ाहें तामीर करा दे। हाकिम ने तामील की। चन्द रोज़ में ख़ानक़ाहें तामीर हो गईं। तामीर मुकम्मल होजाने के बाद उन बुज़ुर्गवार ने फ़रमाया: अच्छा अब रोज़ाना एक ग़ुलाम ख़रीदकर लाया करो। चुनांचे रोज़ाना एक ग़ुलाम उनके पास आता रहा। वह बुज़ुर्ग उस ग़ुलाम का हाथ पकड़कर ख़ानक़ाह में ले जाते और सज्जाद पर बैठाकर फ़रमाते कि मैंने तुझे खुदा के सेपुर्द किया। इस तरह तमाम ख़ानक़ाहें आबाद होगईं। वह ग़ुलाम उन बुज़ुर्ग की तवज्जोह और इनायत से खुदा रसीदा बन गए। पानी पर बिला तकल्लुफ़ चलते थे। जो बात ज़बान से कह देते उसी तरह वक़ूअ् में आता।

मुझे उनके हालात से बड़ी हैरत हुई और तअज्जुब हुआ तो

उन बुज़ुर्ग ने मुझसे फ़रमायाः ऐ शिबली ! तअज्जुब की क्या बात है। साहबे सज्जादा वही है कि जिसका हाथ पकड़े उसे भी साहबे सज्जादा बना दे। जिसमें ये कुव्वत नहीं वह शैख़ ही कहलाने का मुस्तहिक़ नहीं, बल्कि अहले सुलूक के नज़दीक मुदई और काज़िब है। इसके बाद हज़रत कुतुबुल अक्ताब ने फ़रमाया कि मर्द में कमाल चार चीज़ों से पैदा होता है-:

(1) कम खाने से,
(2) कम सोने से,
(3) कम बोलने से, और
(4) लोगों से कम मिलने से।

ग़ज़नी के एक दुरवेश का किस्सा

फिर फ़रमाया कि ग़ज़नी में एक दुरवेश साहब तजरीद थे। दिन में जो कुछ फुतूह आती थी शाम तक ख़र्च कर डालते थे और जो शख़्स उनके पास आता ख़्वाह अमीर हो या ग़रीब उनके पास से ख़ाली हाथ वापस न जाता था। अगर कोई बरहना आ जाता तो वह अपने कपड़े उतारकर उसे पहना देते थे। ग़र्ज़ यह कि वह दुरवेश बड़े साहिबे दिल थे। मुझे उनकी सुहबत में रहने का इत्तिफ़ाक़ हुआ। एक रोज़ उन्हों ने मुझसे फ़रमाया कि मैंने 40 साल मुजाहदा किया। दिन-रात इबादत में मुब्तला रहा मगर मुझे कोई रौशनी और नूर अपने अन्दर नज़र न आया लेकिन जब मैंने उन चार चीज़ों को इख़्तियार किया जिनका ज़िक्र उपर आ चुका है तो मुझे इस क़द्र रौशनी हासिल हुई कि अगर आसमान की तरफ़ नज़र करता हूँ तो अर्श तक साफ़ दिखाई देता है और कोई हिजाब हायल नहीं होता और अगर ज़मीन पर नज़र डालता

हूँ तो तह्तुस्सरा तक बिला हिजाब हर चीज़ साफ़ नज़र आती है। आज तीस बरस होने को आए, होंठ बंद किए बैठा हूँ।

उसूले दुरवेशी

हज़रत बाबा फ़रीद फ़रामते हैं कि ये हिकायत बयान फ़रामकर हज़रत कुत्बुल अक्ताव ने मेरी तरफ़ मुतवज्जोह होकर फ़रमायाः ऐ दुरवेश! जब तक तू कम ना खाएगा, कम बात चीत न करेगा, कम न सोएगा, और मख़लूक़ से मिलना-जुलना कम न करेगा हरगिज़ तुझे दुरवेशी हासिल नहीं हो सकती। दुरवेश का तो वह गरोह है जिसने अपने उपर नींदें हराम कर रखी हैं। बोलचाल से ज़बान गूंगी बना ली है। खाने के लिए घास-पात मुक़र्रर कर रखी है। मख़लूक़ से मिलने को ज़हरे क़ातिल तसव्वुर करते हैं। इन बातों को इख़्तियार करने के बाद ही उन्हें मुक़ामे कुर्ब नसीब होता है।

फिर फ़रमाया कि अगर कोई दुरवेश अच्छा कपड़ा इस ग़र्ज़ से पहने कि लोगों की नज़र उसपर पड़े और उसको शोहरत व नामवरी हासिल हो तो समझ लो और यक़ीन जानो कि वह दुरवेश नहीं है बल्कि राहे सुलूक का ठग है। जो दुरवेश ख़्वाहिशे नफ़सानी से या शिकमसैर होकर खाना खाता है वह भी दुरवेश नहीं बल्कि राहे सुलूक से ख़ारिज है। जो दुरवेश बहुत सोता है वह भी दुरवेश नहीं बल्कि राहे सुलूक का मुद्दई झूठा और खुदपरस्त है और जो शख़्स मख़लूक़ के इख़्तिलात से नहीं बचता वह भी ऐसा ही है। हज़रत कुत्बल अक्ताब ने फ़रमायाः ऐ दुरवेश : इन नेमतों के बराबर कोई नेमत नहीं।

फ़िर फ़रमाया मैं एक मरतबा सफ़र में था। एक दुरवेश से मुलाक़ात हुई। वह दुरवेश बहुत ही बुज़ुर्ग और साहबे नेमत था। इबादत

व रियाज़त करते-करते उसके जिस्म पर सिवाए हड्डी और खाल के गोश्त का नाम तक बाक़ी न रहा था। चाश्त की नमाज़ के बाद उनके आगे दस्तरख़्वान बिछाकर हज़ार मन के क़रीब खाना चुन दिया जाता था। चाश्त से ज़ुहर तक वह खाना आने-जानेवाले खाया करते थे लेकिन वह खुद रोज़े से रहते थे। अगर कोई नंगा आता था उसे कपड़े पहना देते थे। ग़र्ज़ ये कि सुबह से शाम तक दरियाए सख़ावत मौजें मारता रहता था। वह फ़रमाया करते थे कि अगर किसी शख़्स की कोई हाजत हो तो मेरे पास आए। चुनांचे जब कोई हाजतमन्द आता तो मुसल्ला के नीचे से मुट्ठी भरकर रुपये देते थे। मैं कई रोज़ तक उनकी ख़िदमत में रहा। शाम को इफ़्तार के वक़्त ग़ैब से चार खुरमे आते थे। दो खुद खा लेते थे, दो मुझे अता फ़रमा देते थे। वह बुज़ुर्ग मुझसे फ़रमाया करते थे कि जब तक दुरवेश कम न खाए, कम न सोए, लोगों से मेल-जोल कम न करे वह हरगिज़ हरगिज़ मुराद पर नहीं पहुँच सकता।

ये हिकायत बयान करने के बाद हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब ने एक और हिकायत बयान फ़रमाई कि जब हज़रत ईसा (अलै०) चौथे आसमान पर पहुँचे तो हुक्म हुआ कि यहीं रहने दो। इनके पास अभी आलाइशे दुनिया बाक़ी है। हज़रत ईसा (अलै०) मुतअज्जिब हुए। फिर देखा तो एक सूई और एक प्याला लकड़ी का मौजूद था। अर्ज़ किया: इलाही इसका क्या करूँ? हुक्म हुआ कि तूने अपने पाँव पर कुल्हाड़ी खुद मारी। तुझसे ये न हो सका कि उसे वहाँ फेंककर आता, बस अब यहीं रहो।

हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया: ऐ दुरवेश! ग़ौर करने का मक़ाम है कि हज़रत ईसा (अलै०) एक बेहक़ीक़त मताअ् की वजह से चौथे आसमान पर रोक दिए गए और उनके आगे की तरक़्क़ी रुक

गई तो जो लोग दुनिया की आलाइश में आलूदा हैं, वह हाशा व कल्ला कभी दोस्त की बारगाह तक नहीं पहुँच सकते।

दुरवेश को तजरीद इख़्तियार करनी चाहिए

इसके बाद फ़रमाया कि दुरवेश को चाहिए कि तजरीद इख़्तियार करे क्योंकि वह हर रोज़ एक मक़ाम से दुसरे मक़ाम और एक मुल्क से दुसरे मुल्क में जाता है। तरक़्क़ी के मदारिज तय करता है। एक दुरवेश का ज़िक्र है कि वह हर वक़्त तहय्युर और बहरे तफ़क्कुर में ग़ोताज़न रहता था। किसी शख़्स ने उससे पुछा कि तुम्हारे इस तफ़क्कुर और तहय्युर से क्या फ़ायदा है? दुरवेश ने जवाब दिया: जों-जों मेरी नज़र बढ़ती है मैं देखता हूँ कि अगर मैं एक मुल्क को छोड़ता हूँ तो उससे सौ हिस्से ज़्यादा और मुल्क नज़र आते हैं और हर मुल्क दूसरे मुल्क से निराला पाता हूँ। जब इससे गुज़रता हूँ तो एक और आलम नज़र आता है, वहाँ जा पहुँचता हूँ।

ये हिकायत बयान फ़रमाकर हज़रत क़ुत्बुल अक़्ताब की आँखों में आँसू भर आए और ज़िक्र फ़रमाने लगे कि एक दफ़ा मैंने एक दुरवेश से ये अश्आर सुने थे-

हर आं मुल्के कि दाइस मी गुज़ारम
दो सद मुल्के व गर दरपेश दारम
मक़ाम सलतनते दुरवेश दारद
न सद सुलतान फ़रागत पेश दारम

फिर फ़रमाने लगे कि अहले सलूक और ताइफ़ा मुतहैयराँ फ़रामते हैं कि दुरवेश और राह-रवी वह है कि हर रोज़ सौ हज़ार मुल्क से गुज़र कर क़दम आगे बढ़ाए और उसी में सरगर्म रहे। इसलिए जिस दुरवेश को आलमे ग़ैब की ख़बर नहीं वह दुरवेश नहीं है।

असरारे ख़ुदावन्दी का इख़फ़ा

इसके बाद फ़रमाया कि औलिया अल्लाह ऐसे हैं जो ग़लबा हालाते शौक़ व सुक्र में कुछ असरार ज़ाहिर कर देते हैं। और बाज़ अहले कामिल हैं जो ज़र्रा बराबर ज़ाहिर नहीं होने देते। पस इस राह सुलूक में अहले सुलूक का हौसला वसीअ् होना चाहिए ताकि असरार उनमें मुतमक्किन हों क्योंकि इख़फ़ाए असरारे महबूब में जो कामिल है वह कभी असरार को ज़ाहिर न करेगा।

फिर फ़रमाया: मैं कई बरस से पीर दस्तगीर हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी (रह०) की ख़िदमत में रहा। मैंने कभी नहीं देखा कि उन्हों ने कभी कोई असरार मुहब्बत दोस्त ज़र्रा बराबर बयान किया हो या जो अनवार उनपर नाज़िल होते थे उनमें से एक हिस्सा बराबर भी किसी से बयान किया हो।

मनसूर हल्लाज का ज़िक्र

फिर मेरी तरफ़ रूए मुबारक उठाकर फ़रमाया: ऐ मुरीद कामिल! हाल ऐसे होने में जो कभी दोस्त के असरार को ज़ाहिर नहीं करते ताकि उनको मुरीद असरार पर आगाही हासिल हो। फिर फ़रमाया कि ऐ मुरीद! तूने देखा अगर मनसूर कामिले हाल होता तो असरारे दोस्त को ज़ाहिर न करता। मनसूर ने असरारे दोस्त में से एक ज़र्रा बराबर ही ज़ाहिर किया था कि सर दे बैठा और दुनिया से सफ़र कर गया।

फिर फ़रमाया: ख़्वाजा जुनैद बग़दादी (रह०) जब आलमे सुक्र में होते तो सिवाए इस बात की उनकी ज़बान से और कोई बात

नहीं निकलती थी कि -

उस आशिक़ पर हज़ार अफ़सोस जो दोस्ती का दम भरे और जो ख़ैर व असरार आलमे ग़ैब से उसपर नाज़िल हो वह दूसरे लोगों के सामने कहता फिरे।

फिर फ़रमाया कि मैंने हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी की ज़बाने मुबारक से सुना है कि एक बुज़ुर्ग थे। उन्होंने कई सौ बरस ख़ुदा की इबादत और मुजाहदा का हक़ अदा किया था। एक दिन उनपर असरारे मुहब्बत में से एक सर तजल्ली रेज़ हुआ। वह बुज़ुर्ग चूँकि तंग हौसला थे, उसकी बरदाश्त न कर सके। फ़ौरन ज़ाहिर कर दिया। दूसरे रोज़ नेमत उनसे छीन ली गई। वह दुरवेश उसी ग़म में दीवाने और अक्ल से ख़ारिज हो गए। उसी वक़्त हातिफ़ ने आवाज दी: "ऐ ख़्वाजा! अगर तू इस भेद को ज़ाहिर न करता तो तू असरार के अता किए जानक के लाइक़ होता। जब हमने देखा कि अभी हफ़्ताद हिजाब में है तो वे नेमत हमने तुझ से लेकर और को दे दी।"

इसके बाद फ़रमाया कि एक बुज़ुर्ग ने दुसरे बुज़ुर्ग को ख़त लिखा। उस शख़्स के बारे में क्या राए है जो मुहब्बत की शराब का एक प्याला पीकर अज़कारे रफ़्ता हो गया हो? उन्होंने जवाब में तहरीर किया-वह शख़्स बहुत ही कम हिम्मत और कम हौसला है। मर्द वह लोग हैं जो दरियाए अज़ल व अबद नोश करने के बाद भी हल मिम मज़ीद की फ़रमाईश करते हैं।

मैं तुमको मना करता हूँ। तुम हरगिज़ ऐसा न करना क्योंकि जिस शख़्स ने पीरो मुर्शिद का राज़ फ़ाश किया, उसने कुछ नहीं पाया। कभी ऐसा न करना वरना हमें शर्मिन्दगी होगी।

फिर फ़रमाया कि जब तक दुरवेश सबसे बेगाना और आलमे तजरीद में न हो और दूनिया की अलाईशों को तर्क न करे कभी मक़ामे क़रीब पर न पहुँचेगा।

इसके बाद फ़रमाया जब हज़रत ख़्वाजा बायज़ीद बुसतामी (रह०) को सत्तर बरस के बाद मक़ामे क़रीब में बारयाबी हुई तो हुक्म हुआ कि वापस लौट जाओ। अभी उसमें दुनिया की अलाइश बाक़ी है। ख़्वाजा साहब ने कहा - मेरे पास दुनिया की क्या चीज़ है? ख़याल किया तो मालूम हुआ कि उनके पास एक फटा हुआ पोसतीन और एक टूटा हुआ प्याला है। इसके सिवा और कोई चीज़ नहीं। आपने अपने उन दोनों चीज़ों को जुदा कर दिया तो मक़ामे क़रीब में जगह अता हुई।

हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया: ऐ भाई निहायत गौ़र का मक़ाम है कि जब ऐसे शख़्स एक बे हक़ीक़त चीज़ के सबब बारयाब न हो सके, तो तेरा कहाँ ठिकाना है। तु तो दुनियावी अलाइश में गिरफ़्तार है। ऐ दुरवेश! दुरवेशी और चीज़ है और माल-दौलत को जमा करना और चीज़। या तो दुरवेशी ही है या ज़ख़ीरा करना।

दुरवेश कामिल वही है जो कहे वही हो जाए

इसके बाद हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया कि दुरवेश कामिल वही है जो कहे वही हो जाए। ज़र्राभर तफ़ावुत न हो। इसके बाद फ़रमाया कि एक दफ़ा मैं और क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी सफ़र को चले। हमने अजाएबाते कुदरत का मुशाहदा किया जिसका बयान नहीं हो सकता। दरिया के पास एक मक़ाम था। मैं और क़ाज़ी दोनों वहाँ बैठे हुए थे। भूख के मारे बुरी हालत हो रही थी। इधर जंगल बियाबाँ,

उधर दरिया का किनारा। यहाँ बैठे हुए हमें थोड़ी देर गुज़री थी कि एक बकरी दो रोटी जौ की मुहँ में लिए हुए सामने आई और हमारे आगे रखकर चली गई। हम दोनों रोटी खाते जाते थे और ये कहते जाते थे कि ये बकरी न थी मरदाने ग़ैब में से था। ये रोटियाँ आलमे ग़ैब से आई हैं।

हम अभी ज़िक्र कर रहे थे कि एक बिच्छू ऊँट के बराबर नमूदार हुआ और लपककर दरिया में कूदकर तैरने लगा। इस बिच्छू को देख कर मै क़ाज़ी को देखने लगा और क़ाज़ी मेरे मुँह की तरफ़ देखने लगे। हम दोनों कहने लगे कि इसमें ज़रूर कोई भेद है जो ये इस क़दर तेज़ दौड़ा चला जा रहा है। ये ख़याल कर के हम ने इरादा किया कि दरिया पार होकर देखें क्या मामला है ओर ये देखें कि बिच्छू कहाँ जा रहा है। दरिया किनारे न कोई कश्ती थी न जहाज़। हम दोनों ने हाथ दुआ के लिए उठाए और कहा: "ख़ुदावन्द! अगर तूने हमको दुरवेशी में कोई कमाल अता फ़रमाया है तो हमारे लिए दरिया में रास्ता पैदा कर दे ताकि हम इस बिच्छू को जाकर देखें कि ये लपका हुआ कहाँ जा रहा है।"

ख़ुदा तआला के हुक्म से दरिया ख़ुश्क हो गया और बीच में ज़मीन ख़ुश्क निकल आई। हम दोनों दरिया पारकर गए। वह बिच्छू आगे-आगे था और हम उसके पीछे-पीछे चलते चले। वह बिच्छू एक दरख़्त के पास पहुँचा। हमने देखा कि उस दरख़्त के नीचे एक आदमी पड़ा सो रहा है और एक बड़ा ज़बरदस्त साँप दरख़्त से उतरकर डसना ही चाहता है। इतने में उस बिच्छू ने साँप को काटकर हलाक कर दिया और फ़ौरन ही नज़रों से ग़ायब हो गया। हम इस मुर्दा साँप के पास

पहुँचे तो वह ग़ालिबन एक हज़ार मन से कम न होगा। हमने ख़याल किया कि ये आदमी ज़रूर कोई बुज़ुर्ग होगा जिसके लिए हक़ तआला ने इतनी हिफ़ाज़त फ़रमाई है। चलो उस बुज़ुर्ग को जाकर देखें मगर उस आदमी को देखकर हमारी हैरत की हद न रही। वह कोई शराबी था। उसके आगे कै पड़ी हुई थी। शराबी का तअफ़्फ़ुन फुट रहा था, मुँह से झाग निकल रहा था। मक्खियाँ भनक रही थीं। ये देखकर शर्मिन्दगी हुई और अफ़सोस करने लगे कि हम नाहक़ आए। ये ख़तरा हमारे दिल में गुज़रा ही था कि अजीब मामला हुआ कि ये शख़्स शराबख़ोर और नाफ़रमान और इस क़द्र हिफ़ाज़त खुदावन्दी। हातिफ़ ने आवाज़ दी "ऐ मेरे पयारे! अगर हम नेक और सालेह की हिफ़ाज़त करें तो मुफ़्सिदीन और गुनाहगारों की कौन हिफ़ाज़त करेगा।"

हम दोनों आदमी इसी बात में थे कि वह आदमी भी जाग उठा। साँप को आगे मरा हुआ देखकर बहुत मुतअज्जिब हुआ। हमने सारी कैफ़ियत बयान कर दी। वह आदमी बहुत शर्मिन्दी हुआ। खुदा तआला से तौबा की। फिर वह शख़्स वली कामिल बन गया। सत्तर हज पापयादा किए। ये क़िस्सा बयान करके हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया-देखो जब मेहरबानी की हवा चलती है तो हज़ारों मस्त ख़राब लत को साहब सज्जादा बना देती है और अगर खुदा न ख़्वास्ता क़हर की हवा चले तो हज़ारों साहब सज्जादा को ख़राबात में डालदे। ऐ भाई! इस राह में बेगम न होना चाहिए। अकसर कामिलीन इस राहे सुलूक में बरसों रात-दिन बीमो फ़राक़ से मुतहैयर और ग़मगीन रहते हैं। आक़िबत का हाल मालूम नहीं, क्योंकर अंजाम बख़ैर होगा।

इबलीस का घमंड और उसका अंजाम

फिर फ़रमाया कि अगर इबलीस लईन अपने अंजाम से वाकिफ़ होता तो बेशुबहा आदम को सजदा कर लेता। जब उसने अपनी आकिबत को न जाना, अपनी इताअत और इबादत पर घमंड किया और उसके नफ़्स में गुरूर पैदा हुआ तो फ़ौरन कह उठा कि में इस इन्साने ख़ाकी को सज्दा न करूँगा। आख़िरकार नाफ़रमान हुआ। खुदा का हुक्म न माना तो रान्दए दरगाह हो गया। सारी उम्र की इताअत और इबादत अकारत हो गई और इसके मुँह पर मार दी गई।

आलमे तहैयुर में मुब्तला बन्दागाने खुदा का ज़िक्र

फिर फ़रमाया कि अगर इबलीस लईन अपने अंजाम से वाकिफ़ होता तो बेशुबहा आदम को सजदा कर लेता। जब उसने अपनी आकिबत को न जाना, अपनी इताअत और इबादत पर घमंड किया और उसके नफ़्स में गुरूर पैदा हुआ तो फ़ौरन कह उठा कि में इस इन्साने ख़ाकी को सजदा न करूँगा। आख़िरकार नाफ़रमान हुआ। खुदा का हुक्म न माना। रान्दए दरगाह हो गया। सारी उमर की इताअत और इबादत अकारत हो गई और इसके मुँह पर मार दी गई।

आलमे तहैयुर में मुब्तला बन्दगाने खुदा का ज़िक्र

इसके बाद हज़रत कुतुबुल अक़ताब ने फ़रमाया कि एक दफ़ा मैं एक शहर में पहुँचा। सालिहीन का एक गिरोह आलमे तहैयुर में खड़ा हुआ नज़र आया। उन लोगों की आँखें खुली हुई थीं,दरियाए हैरत में ग़र्क़ थे। नमाज़ के वक़्त ये लोग होशियार होकर नमाज़ पढ़ लेते थे। नमाज़ के बाद फिर उनपर आलमे हैरत तारी हो जाता था।

एक रोज़ उन लोगों में से चन्द आदमी होशियार नज़र आ
तो मैंने उनसे इस आलम की कैफ़ियत दरयाफ़्त की। वह फ़रमाने लगे
कि 60–70 बरस की बात है, हमने इबलीस के क़िस्से का मुताला किया
था कि इसने छः हज़ार फ़रिशतों के साथ खुदा की इबादत की थी। वह
अपने अन्जाम की तरफ़ से ग़ाफ़िल हो गया। उसके दिमाग़ में गुरूर
समा गया। आदम (अलै०) को सज्दा न किया रांदए दरगाह हो गया
और उसके तमाम आमाल ख़ब्त हो गए। इस वाक़िआ से हम पर ऐसी
हैबत तारी हुई कि हम आलमे तहैयुर में फँसे रह गए।

ये क़िस्सा बयान फ़रमाकर हज़रत कुत्बुल अक़ताब बहुत रोए।
फ़रमाने लगे- ये हाल तो कामिलीन का है कि वह खुद मुतहैयर हैं। वह
नहीं जानते कि हम कौनसे गिरोह में से हैं। ये फ़रमाकर हज़रत कुत्बुल
अक़ताब आलमे तहैयुर में मशगूल हो गए और दुआगो रुख़्सत होकर
अपने मकान आया और मशगूल हो गया।

दुसरी मज्लिस

इश्क़ की बारिश

शैखुलइस्लाम हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन गंजशकर फ़रमाते हैं कि सआदते पाबोसी हासिल हुई। क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी (रह०), मौलाना अलाउद्दीन किरमानी, मौलाना शम्सुद्दीन और दूसरे सूफ़ी भी हाज़िरे ख़िदमत थे। सुलूक और अहले सुलूक का ज़िक्र निकला। हज़रत क़ुत्बुल अक़्ताब ने फ़रमाया कि सालिकाने राहे सुलूक वह लोग हैं जो सर से पैर के नाख़ून तक दरियाए मुहब्बत में ग़र्क़ हैं। कोई साअत एक सी नहीं गुज़रती कि उनपर आलमे मुहब्बत से इश्क़ का मेंह नहीं बरसता।

आलमे तहैयुर

फिर फ़रमाया कि आरिफ़ वह है जिस पर आलमे असरार से हर लहज़ा और हर लम्हा हज़ारों हालात पैदा हों और वह आलमे सुक्र में ऐसा ग़र्क़ हो कि अगर उस वक़्त 18 हज़ार आलम उसके सीने में उतर जाएँ तो उसको ख़बर तक न हो। इसके बाद ये हिकायत बयान फ़रमाई कि एक रोज़ मैंने समरक़न्द में एक दुरवेश को आलमे तहैयुर में ग़र्क़ देखा। मैं ने लोगों से दरयाफ़्त किया - ये दुरवेश कितने अर्से से इस हाल में हैं? उन्हों ने जवाब दिया कि 20 बरस से हम इन्हें इसी

तरह देख रहे हैं। ख़ैर मैं कुछ मुद्दत तक उनके पास रहा। एक वक़्त मैंने उनको आलमे होशियारी में पाया। उनसे मुलाक़ात की और पूछा आप कितने अर्से से इस आलम में हैं। किसी के आने-जाने की आपको ख़बर होती है या नहीं? उन्होंने जवाब दिया - "ऐ नादान जिस वक़्त दौर व असर और दरियाए मुहब्बत में ग़रकाबी होती है उस वक़्त असरारे तजल्ली ज़ाहिर होते हैं उस वक़्त ख़बर नहीं रहती कि क्या हुआ, क्या हो रहा है, कौन आया, कौन गया। अगर इस हालत में टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाएँ तो मुतलक़ ख़बर नहीं हुई।"

सुलूक जाँबाज़ी का नाम है

इसके बाद हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया: ऐ दुरवेश ये (सुलूक) राह जाँबाज़ी है। जिसने इस राह में क़दम रखा वह सलामत नहीं रहा। फिर फ़रमाया कि जब हज़रत यहया (अलै०) के गले पर छुरी चलने लगी तो उन्हों ने फ़रियाद करनी चाही। हुक्म हुआ: ऐ यहया! ज़रा भी दम मारा तो अपने दोस्तों की फ़ेहरिस्त में से तेरा नाम ख़ारिज करदुँगा और ऐसे ही जब हज़रत ज़करीया (अलै०)के सर पर आरा चलने लगा तो आपने भी फ़रियाद करनी चाही। इतने में हज़रत जिबरईल (अलै०) आए। फ़रमाने लगे: खुदा का हुक्म है कि अगर तूने ज़रा भी आह की तो पैग़म्बरों में से तेरा नाम ख़ारिज करदुँगा।

मुहिब्बे सादिक़

ये फ़रमाकर हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब की आँखों में आँसू भर आए और फ़रमाने लगे की जो कोई मुहब्बत का दावा करे और मुसीबत व बला के वक़्त फ़रियाद व ज़ारी करे वह आदमी फ़िलहक़ीक़त मुहिब्बे

सादिक़ नहीं, बल्कि वह कज़्ज़ाब है और दरोग़ गो है। दोस्त वही है कि उस पर दोस्त की तरफ़ से जो कुछ आए उस पर राज़ी रहे और सद हज़ार बार शुक्र करे और कहे। ख़ैर उसने इस बहाने मुझे याद तो किया।

फिर फ़रमाने लगे कि हज़रत राबिया बसरी को जिस दिन रंज व ग़म या तकलीफ़ पहुँचती थी उस रोज़ वे पायाँ मुसर्रत का इज़हार करती थीं। फ़रमाया करती थीं: आज मेरे महबूब ने इस ज़ईफ़ा को याद किया है और जिस दिन कोई रंज व ग़म का सामना न होता उस रोज़ रो-रो कर कहा करती कि आज मुझसे क्या ख़ता सरज़द हो गई कि मेरे दोस्त ने मुझे याद नहीं किया।

फिर फ़रमाया कि मैंने पीर-दस्तगीर हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी (रह०) की ज़बान मुबारक से सुना है कि वह फ़रामया करते थे- ऐ अज़ीज़! तरीक़े सुलूक ये है कि जो कोई मुहिब्ब हो और मुहब्बत का दावा करता हो और दोस्त की तरफ़ से बिला आरज़ू के साथ ख़्वाहिशमन्द न हो वह अहले मारफ़त के नज़दीक बलाए दोस्त रज़ाए दोस्त है। फिर फ़रमाने लगे कि जिस रोज़ मुझ पर बला नाज़िल नहीं होती मैं समझ जाता हूँ कि मुझसे नेमत छीन ली गई क्योंकि राहे सुलूक में बलाए दोस्त ही नेमत है।

मरदाने ग़ैब

इसके बाद मरदाने ग़ैब का ज़िक्र होने लगा। हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया कि मर्द ग़ैब उस शख़्स को कहते हैं जो दरजा कमाल को पहुँचकर उसमें रासिख़ हो गया हो और इस आवाज़े ग़ैब पर मुकाशफ़ा न करता हो। फिर उसको बुलाकर अपने मजमें में बिटा लेते

हैं। फिर आपने फ़रमाया कि शैख़ उस्मान संजरी मेरे दोस्त और पीर भाई थे। जब उनकी मशगूलियत हद को पहुँची, मरदाने ग़ैब ने उनसे मुलाक़ात शुरू की। एक रोज़ का क़िस्सा है कि वह अपने दोस्तों के मजमे में बैठे हुए थे। ये फ़क़ीर भी उनके बराबर बैठा हुआ था। एकाएक मरदाने ग़ैब की आवाज़ आई - "शैख़ उस्मान आओ। हम जा रहे हैं।"

ये आवाज़ सुनते ही वह उठ खड़े हुए और फ़ौरन आवाज़ की सिम्त चल दिए और हमारी नज़रों के सामने से ही ग़ायब हो गए। हमे कुछ पता न चल सका कि किधर गए।

इसके बाद हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया कि अगर अल्लाह तआला के रास्ते का चलनेवाला तरक़्क़ी पर है तो वह यक़ीनन राहे सुलूक का सालिक है। अगर कमाल रखता है तो उम्मीद है उसे दर्जा कमाल नसीब होगा।

फ़रमायाः एक दफ़ा मैं और क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी (रह०) दोनों ख़ाना काबा का तवाफ़ कर रहे थे। हमें एक बुज़ुर्ग नज़र आए। उनका नाम भी उस्मान था। वह हज़रत ख़्वाजा अबू बक्र शिबली (रह०) के मुरीदों में से थे। हम उनके पीछे-पीछे हो लिए। जिस जगह और जिस तरफ़ वह बुज़ुर्ग जाते थे हम और क़ाज़ी हमीदुद्दीन उनके नक़्शेक़दम पर चलते थे। वह बुज़ुर्ग चुँकि रौशन ज़मीर थे फ़ौरन इस बात पर मुत्तला हो गए और पलट कर हमसे कहा कि ज़ाहिरी तौर पर नक़्शे क़दम पर चलने से क्या हासिल। मैं जो कुछ करता हूँ तुम भी वही करो। हम दोनों ने दरियाफ़्त किया कि आप क्या करते हैं? उन्होंने जवाब दियाः मैं रोज़ाना हज़ार क़ुरआन शरीफ़ ख़त्म करता हूँ। हम ये

बात सुनकर हैरान रह गए और अपने दिल में सोचने लगे कि ये बुज़ुर्ग आलमे ख़याल में हज़ार कुरआन शरीफ़ पढ़ लेते होंगे। ये ख़तरा हमारे दिल में गुज़रा ही था कि उन्होंने सर ऊँचा कर के फ़रामया- "हरफ़न बाद हरफ़िन मी ख़ानम" यानी एक-एक हरफ़ कर के पढ़ता हूँ, कोई हरफ़ नहीं छोड़ता। मौलाना अलाउद्दीन बोले: हज़रत! जो बात समझ से बाहर है वही करामत है। अक़्ल को इसमें गुन्जाइश नहीं होती। एक दिन में हज़ार कुरआन पढ़ लेना यक़ीनन उनकी करामते ख़ास है। उस वक़्त हज़रत कुत्बुल अक़्ताब की आँखों में आँसू आ गए। फ़रमाया: जिस शख़्स को जो कुछ मिला हुस्ने अमल से मिला अगरचे फ़ैज़े खुदावन्दी आम है लेकिन जिद्दोजुहद शर्त है।

आदाबे मज्लिस पीरो मुर्शिद

फिर मज्लिस और पीर की ख़िदमत में आने और बाअदब बैठने का ज़िक्र आ गया। हज़रत कुत्बुल अक़्ताब ने फ़रमाया कि आदमी जब मज्लिस में आए, जहाँ जगह पाए बैठ जाए। आनेवाले की जगह वही है। फिर इसी मौक़े पर आपने फ़रमाया कि एक बार ये दुआगो और हज़रत शैख़ मुईनुद्दीन अजमेरी मौलाना नासिरुद्दीन की मज्लिस में बैठे हुए थे कि मौलाना सलाहुद्दीन ने फ़रमाया कि एक दफ़ा पैग़म्बरे खुदा (सल्ल०) एक मक़ाम पर बैठे हुए थे। असहाब आपके गिर्द-गिर्द बैठे थे। इतने में तीन आदमी आए। एक आदमी इस दायरे में जगह दिखाकर बैठ गया, दूसरे को इस दायरे में जगह न मिली। वह पीछे बैठ गया। तीसरा मुँह फेरकर चल दिया। इस वाक़िआ को कुछ देर न गुज़री थी कि हज़रत जिबरईल (अलै०) आए और कहा: या रसूल अल्लाह खुदा तआला ने फ़रमाया है कि जो शख़्स आकर दायरे में बैठ गया हमें

भी उससे शरम आई, क़ियामत के दिन उनको रुस्वाई न होगी। और जो मुँह फेरकर चल दिया हमने उसके लिए अपनी रहमत से मुँह फेर लिया।

क़ाज़ी हमीदुद्दीन आनेवाले की निस्बत पुछने लगे कि उसे क्या करना चाहिए। हज़रत कुत्बुल अक़्ताब ने फ़रमायाः मतलब ये है कि आनेवाले को जहाँ जगह मिले वहीं बैठ जाना चाहिए क्योंकि आनेवाले की वही जगह है, लेकिन दायरे के अन्दर बैठने की कोशिश न करे क्योंकि इमाम अबुल्लैस समरक़न्दी ने लिखा है कि हदीस में आया है कि जो शख़्स मज्लिस में आकर दरमियान में बैठे वह मलऊन है।

सैफ़ ज़बानी

फिर ज़िक्र पीर के नफ़्स की निसबत हुआ। हज़रत कुत्बुल अक़्ताब ने फ़रमाया कि पीर का नफ़्स दो क़िस्म का है। एक नफ़्स नेक, दूसरा नफ़्स बद। खुदा न करे कि वह किसी पर नफ़्स बद करे। फिर फ़रमाया कि एक बार दुआगो हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी की ख़िदमते बाबरकत में हाज़िर था। आप फ़रमाने लगे कि मैं एक रोज़ हज़रत शैख़ उस्मान हारूनी की ख़िदमत में खड़ा हुआ था कि शैख़ बुरहानुद्दीन नामी-दुरवेश जो मेरा हम फ़िरक़ा था हमसाया से शिकायतमन्द होकर हज़रत शैख़ उस्मान हारून की ख़िदमत में आया। आपने फ़रमायाः क्या बात है? परेशान ख़ातिर मालूम होते हो। उन्होंने आदाब बजा लाकर अर्ज़ किया कि मैं हमसाया से सख़्त तकलीफ़ में हूँ। उसने अपने मकान पर ज़ीना बनाया है। मेरे घर की बेपर्दगी होती है। शैख़ बुरहानुद्दीन इतना ही अर्ज़ कर पाए थे कि ख़्वाजा साहब ने फ़रमाया कि

वह तुम्हारे मुतअल्लिक़ इस बात को जानता है कि तुम्हारा तअल्लुक़ हमारे साथ है। उन्होंने अर्ज़ किया: हाँ। ये सुनकर हज़रत क़ुत्बुल अक़्ताब ने साँस भरकर फ़रमाया कि वह कोठे के ऊपर से गिरकर नहीं मरा, उसकी गरदन नहीं टूटी। शैख़ बुरहानुद्दीन कुछ देर बाद आदाब बजा लाकर वापस हो गए। अपने मुहल्ले के क़रीब पहुँचकर लोगों की ज़बानी सुना कि वह ज़ालिम हमसाया कोठे के ऊपर से गिरकर हलाक हो गया।

ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ की करामत

इस मौक़े पर ये भी फ़रमाया कि एक दफ़ा मैं अजमेर में हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी की ख़िदमत में हाज़िर था। राजा पृथवी राज इस फ़िक्र में था और अक्सर कहा करता था कि ये दुरवेश यहाँ से चला जाए तो अच्छा है। ये ख़बर हज़रत ख़्वाजा बुज़ुर्ग के गोशे मुबारक तक पहुँची। उस वक़्त हज़रत ख़्वाजा साहब और दूसरे दुरवेश हालते सुक्र में थे। हज़रत ख़्वाजा साहब ने फ़रमाया कि हमने राए पिथौरा को ज़िंदा मुसलमानों के हाथ गिरफ़्तार करा दिया। इस बात को थोड़े ही दिन गुज़रे थे कि सुल्तान शम्सुद्दीन ने राजा पर हमला कर के ज़िन्दा गिरफ़्तार कर लिया। इसके बाद फ़रमाया कि ये बात जानने और याद रखने की है कि दुरवेश के एक कलमे में आग है, दूसरे में पानी।

नज़राना क़बूल करने से नफ़रत

अभी यही ज़िक्र हो रहा था कि मलिक इख़्तियारुद्दीन हाकिमे परगना हाज़िर होकर आदाब बजा लाया और कुछ नक़द बतौर नज़र

हज़रत कुत्बुल अक्ताब के हुज़ूर में पेश किया। उस वक्त हज़रत कुत्बुल अक्ताब के हुज़ूर में और लोग भी हाज़िर थे। हज़रत कुत्बुल अक्ताब ने फ़रमाया कि हमारे बुज़ुर्गों की ये रस्म नहीं है कि किसी से कुछ लें। चीज़ उसे देनी चाहिए जो उसका मालिक हो। उसके तालिब बहुत हैं। उस वक्त हज़रत कुत्बुल अक्ताब बोरिये पर तशरीफ़ फ़रमा थे। आपने बोरिये का कोना उठा कर मलिक इख़्तियारुद्दीन और हाज़िरीन से फ़रमाया-

"देखो!" बोरिये के नीचे ख़ज़ाने बह रहे थे। हज़रत कुत्बुल अक्ताब ने फ़रमाया जिसके पास खुदा के ख़ज़ाने इस क़द्र हों वह तुम्हारे माल की तरफ़ नज़र उठाकर क्यों देखे। जाओ इसे वापस ले जाओ और शम्सुद्दीन से कह दो कि आइन्दा ऐसी गुस्ताख़ी न करना, वरना नुक़्सान उठाएगा।

बादशाही की पेशनगोई

फिर हज़रत कुत्बुल अक्ताब फ़रमाने लगे कि एक दफ़ा हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती, शैख़ औजद किरमानी, शैख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी और दुआगो एक जगह बैठे हुए थे। औलियाए मुतक़द्देमीन का ज़िक्र था कि इतने में सुल्तान शम्सुद्दीन इस तरफ़ से हाथ में पियाला लिए गुज़रे। उस वक्त उनकी उम्र तक़रीबन 12 साल होगी। इस लड़के पर सब बुज़ुर्गों की नज़र पड़ी। हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने एक लम्बा साँस लेकर फ़रमाया कि ये लड़का दिल्ली का बादशाह होगा और बादशाह होने से पहले न मरेगा। कहकर हज़रत कुत्बुल अक्ताब ने फ़रमाया कि ये लोगों का सामना क्या चीज़ है।

अगर मुरीद से लग़ज़िश हो जाए

इसके बाद बैअत का ज़िक्र होने लगा। हज़रत कुत्बुल अक़्ताब ने फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स बैअत से फिर जाए या उसकी तौहीन या लग़ज़िश हो जाए तो उसकी बैअत की तजदीद करनी चाहिए। जब तक वह दोबारा पीर से बैअत न करेगा बैअत दुरुस्त न होगी। ये फ़रमाकर हज़रत कुत्बुल अक़्ताब ने इसके मुनासिबे हाल ये हिकायत बयान फ़रमाई कि शैख़ुलइस्लाम बुरहानुद्दीन ने रौज़ा में बरवायत हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी के मैंने लिखा देखा है कि हज़रत (सल्ल०)ने फ़तहे मक्का से पहले हज़रत उसमान ग़नी(रज़ि०) को सफ़ीर बनाकर अहले मक्का के पास भेजा। दुश्मनों ने ये ख़बर उड़ा दी कि उसमान ग़नी शहीद कर दिए गए। हुज़ूर (सल्ल०) ने ये ख़बर सुनी तो सहाबा को तलब कर के फ़रमाया कि जाओ जदीद बैअत करो ताकि हम सब मिलकर मक्कावालों पर चढ़ाई करें। उस वक़्त आप एक दरख़्त के मस्नद से टेक लगाए बैटे थे। आपने सहाबा किराम से ताज़ा बैअत ली। इस बैअत को बैअते रिज़वान कहते हैं। सहाबा किराम में एक सहाबी का नाम इब्ने उकुअ् था। हाज़िरे ख़िदमते अक़्दस हो कर अर्ज़ सरे नौ बैअत की। आपने फ़रमाया तुने तो बैअत कि थी। अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! चुँकि मैं जा रहा हुँ इस लिए तजदीदे बैअत के लिए हाज़िर हुआ हुँ। हज़रत कुत्बुल अक़्ताब ने फ़रमाया कि इस रिवायत में तजदीदे बैअत का सुबूत मौजूद है। इस आजिज़ ने अर्ज़ किया कि अगर उस वक़्त पीर मौजूद न हों तो क्या किया जाए? फ़रमाया कि उसका कपड़ा ही आगे रख ले और बैअत कर ले और फ़रमाया अजब नहीं शैख़ मुईनुद्दीन चिश्ती भी इसी तरह बैअत करते हों। इसी सबब से दुआगो भी इसी तरह बैअत करता है।

मुरीद का हुस्ने एतिक़ाद

इसके बाद मुरीदों के हुस्ने एतिक़ाद का बयान शुरू हो गया। हज़रत कुत्बुल अक़्ताब ने फ़रमाया कि एक मरतबा एक दुरवेश किसी तोहमत की बिना पर बग़दाद में गिरफ़्तार हो गया। क़त्लगाह पर लाया गया। ख़लीफ़ा का हुक्म था कि मुजरिम को क़िबला रू खड़ा कर के गरदन मारी जाए। जिस वक़्त जल्लाद ने तलवार उठाई फ़ौरन उसकी नज़र पीर की क़ब्र पर जा पड़ी। उस दुर्वेश ने फ़िलफ़ौर क़िबला की तरफ़ पुश्त करके अपने पीर की क़ब्र की तरफ़ मुँह फेर लिया। जल्लाद ने पुछा कि तूने क़िबला की तरफ़ से मुँह क्यों फेरा। उसने जवाब दिया कि मैने अपने क़िबला की तरफ़ मुँह फेर लिया है, तू अपना काम कर। तुझे हुज्जत करने से क्या ग़र्ज़। अभी ये बात हो रही थी कि हाकिम का हुक्म आया कि इस मुल्ज़िम को फ़ौरन रिहा कर दो। ये हिकायत बयान फ़रमा कर हज़रत कुत्बुल अक़्ताब की आँखों में आँसू भर आए और फ़रमाया: देखो सच्चा अक़ीदा ये चीज़ है कि इसके बदौलत वह दुर्वेश क़त्ल होने से बच गया।

अदब पीरो मुर्शिद

फिर फ़रमाया कि एक दफ़ा हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती अपने चारों यारों के साथ बैटे हुए थे। सुलूक की तालीम दे रहे थे। किसी को दम मारने की मजाल न थी। आपने कई बार ऐसा ही किया। अलग़र्ज़ जब सब लोग चले गए तो हज़रत के ख़ादिम ख़ास ने अर्ज़ किया कि आप दाहनी तरफ़ देखकर क़याम क्यों फ़रमाते थे? हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फ़रमाया कि इस तरफ़ मेरे शैख़ हज़रत ख़्वाजा

उसमान हारून की क़ब्रे मुबारक थी। जब मेरी नज़र उसपर पड़ती थी तो मुझ पर क़याम करना फ़र्ज़ हो जाता था, इसलिए मैं इस तरफ़ क़याम करता था।

हज़रत कुत्बुल अक़्ताब ने फ़रमाया कि मुरीद को चाहिए कि अपने पीर को हाज़िरो ग़ायब यकसाँ तसव्वुर करे, जिस तरह हालते हयात में अपने पीर का अदब व एहतिराम करता था वैसा ही अदब व एहतिराम वफ़ात के बाद भी करे। बल्कि उससे भी ज़्यादा।

इसके बाद फ़रमाया एक दफ़ा मैं और क़ाज़ी हमीदुद्दीन एक शहर में पहुँचे। वहाँ हमने बारह आदमी देखे जो आलमे तहैयुर में आँखें खोले खड़े थे। मगर उन्हें किसी बात का होश न था। रात-दिन इस्तिग़राक़ी हालत तारी रहती थी। नमाज़ के वक़्त उन्हें होश आ जाता था। नमाज़ के बाद फिर वही कैफ़ियत हो जाती थी। हज़रत कुत्बुल अक़्ताब ने फ़रमाया कि बिला शुबहा अंबियाए किराम मासूम हैं और औलियाए अल्लाह महफ़ूज़। यही सबब है कि दिन-रात इस्तिग़राक़ में रहने के बावजूद उनकी नमाज़ क़ज़ा नहीं होती।

दुरवेशों की ख़िदमत

फिर फ़रमाया एक दफ़ा हज़रत मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी के साथ सफ़रे हज में था। हज बैतुल्लाह से फ़ारिग़ होकर हम एक शहर में गए। वहाँ हमने एक बुज़ुर्ग को देखा जो ग़ार में खड़ा हुआ था। दोनों आँखें आसमान की तरफ़ खुली हुई हैं, वह बुज़ुर्ग सूखकर काँटा हो गए थे। ऐसा मालूम होता था जैसे सूखी लकड़ी है। ये हालत देखकर शैख़ ने मेरी तरफ़ देखकर फ़रमाया कि अगर कहो तो चन्द रोज़ यहाँ क़याम किया जाए। मैंने आदाब बजा लाकर अर्ज़ किया: बहुत ख़ूब! अलग़र्ज़

हम दोनों एक महीने तक उस बुज़ुर्ग की ख़िदमत में रहे। इस अरसे वह बुज़ुर्ग सिर्फ़ एक दिन होश में आए। हमने खड़े होकर सलाम किया सलाम का जवाब देते हुए बुज़ुर्ग ने कहा: दोस्त! तुमने बड़ी तकलीफ़ उठाई। लेकिन तुम्हारी इस तकलीफ़ की मुकाफ़ात ज़रूर होगी क्योंकि दुरवेशों की ख़िदमत करता है उसे ज़रूर बुलन्द मरतबा मिलता है। इस गुफ़्तुगू के बाद उस बुज़ुर्ग ने हमसे कहा कि बैठ जाओ। हम बैठ गए और उन्होंने बातें करनी शुरू कीं। कहने लगे कि मैं शैख़ मुहम्मद असलम तूसी (रह०) के फ़रज़न्दों में से हूँ। तीस बरस से आलमे तहैयुर में मुस्तग़रक़ हूँ, न दिन को दिन जानता हूँ न रात को रात। आज खुदा तआला ने तुम्हारे सबब से मुझे होश अता फ़रमाया है। ऐ अज़ीज़ तुम लौट जाओ। खुदा तआला तुम्हारी इस तकलीफ़ का बेहतरीन अज्र अता फ़रमाएगा लेकिन एक बात इस दुरवेश की याद रखना, चूँकि तुमने बिसाते तरीक़त पर क़दम रखा है, दुनिया और हवाए नफ़सानी की तरफ़ कभी ख़्वाहिश न करना और ख़िलाफ़त से हमेशा उज़लत (किनाराकशी) और जो चीज़ तुम्हारे पास तोहफ़ा आए या मयस्सर हो उसे अपने पास न रखना। राहे खुदा में दे देना और खुदा के सिवा गैर से मशगूल न होना। ये नसीहत फ़रमाकर वह बुज़ुर्ग फिर आलमें तहैयुर में मुस्तग़रक़ हो गए। हम वहाँ से चले आए। यह बातें बयान फ़रमाने के बाद हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब आलमे सुक्र में मशगूल हो गए। ये दुआगो वहाँ से वापस आकर अपने मक़ाम पर मश्गुल हो गया।

तीसरी मज्लिस

बरोज़ शम्बा, माह शव्वाल, सन 584 हिजरी दौलत पाबोसी हासिल हुई। उस वक़्त चन्द दुरवेश हाज़िरे महफ़िल थे। सुलूक का ज़िक्र हो रहा था कि औलयाए तरीक़त और मशाइख़े किबार और उसके राह के चलनेवाले अदाए दरजाते सुलूक में एक तरीक़ पर नहीं हैं, बल्कि मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर हैं जहाँ तक कि सुलूक के 155 मरतबे मुक़र्रर किए गए हैं। तबक़ा जुनैदिया ने सौ दरजे, तबक़ा बसरिया ने अस्सी और ताइफ़ा जुन्नून हसरी, तबक़ा इब्राहीम और बिशरानी ने 55 और तबक़ा ख़्वाजा बायज़ीद और अबदुल्लाह बिन मुबारक और सुफ़्यान सौरी ने 45 और ख़्वाजा समनून मुहिब्बुल्ला और ख़्वाजा मुरअशी ने 29 दरजे मगर तबक़ा ख़्वाजगाने चिश्त ने 15 मरतबे रखे हैं।

दरजाते सुलूक

इसके बाद फ़रमाया कि हर एक अहले तबक़ा ने मरातिबे सुलूक मुरत्तब करके उनकी मिसालें क़ायम की हैं चुनाँचे अव्वल तबक़ा अहले सुलूक ने जो एक सौ अस्सी मरातिब मुक़र्रर किए हैं उनमें नम्बर 80 का मरतबा कश्फ़ व करामत का है। सालिक को चाहिए कि जब उस मरतबा को पहुँचे तो कश्फ़ व करामात में मुब्तला न हो बल्कि अपने

आपको कश्फ़ो करामात से बचाए रखे वरना आगे तरक़्क़ी न कर सकेगा। हाँ, जब सौ मरतबे और तै हो जाएँ तो फिर कोई मुज़ाइक़ा नहीं लेकिन मर्द कामिल वही है जो आख़री मरतबा पर पहुँचने के बाद भी कश्फ़ो करामात के दरपै न हो।

तबक़ा जुनैदिया ने जो सौ मरतबे रखे हैं उसके यहाँ मरतबा नम्बर 70 कश्फ़ो करामात का है। अगर सालिक इसमें मश्गूल हो जाए तो सौ के मरतबा पर न पहुँच सकेगा। तबक़ा बसरिया में अस्सी मरतबे हैं और बीसवाँ मरतबा कश्फ़ो करामात का है। अगर सालिक इसमें मुब्तला होगया तो बक़ीया मरातिब से महरूम रह जाएगा। बाज़ मशाइख़ जिन्होंने इस मक़ाम पर आकर कश्फ़ो करामात को ज़ाहिर किया है तो वह उसी मरतबा पर रह गए, आगे रिसाई न हो सकी। वह अपने आपको कामिल न बना सके। जो मशाइख़ कामिलुलहाल हैं वह कश्फ़ो करामात से एक बात भी ज़बान से नहीं निकालते। अगर ज़रा-सी बात ज़बान से निकाली तो फ़ौरन वही हो जाए लेकिन चुंकि नुफ़ूसे औलिया में तफ़ावुत होता है इसी सबब से वह शुरू ही से कश्फ़ो करामात में पड़ जाते हैं और दिगर मरातिब को हाथ से खो बैठते हैं।

तबक़ा इमामाने शरिअत में 30 मरतबे हैं। बीसवाँ मरतबा कश्फ़ो करामात का है। वह जब तक पूरे मरतबे को नहीं पहुँचते ज़ाहिर नहीं करते और तबक़ा शाह शुजाअ् किर्मानी और समनून मुहिब्बुल्लाह और ख़्वाजा मुहम्मद मुरअशी में बीस मरतबे हैं और दसवाँ मरतबा कश्फ़ो करामात का है। पस जो सालिक इस मरतबा में कश्फ़ करेगा वह हरगिज़ दुसरे मरतबे को न पहुँच सकेगा। तबक़ा ख़्वाजागाने चिश्त में 15 मरतबे हैं और पाँचवाँ मरतबा कश्फ़ो करामात का है। अगर कोई

सालिक इस मक़ाम पर पहुँच कर अपने को ज़ाहिर करेगा बाक़ी दस मरतबे उससे रह जाएँगे। मर्द कामिल वही है जो पन्दरहवीं मक़ाम पर पहुँचने के बाद भी अपने आप को ज़ाहिर न करे। हज़रत कुत्बुल अक़ताब की आँखों में ये फ़वाइद बयान कर के आँसू भर आए। रोने लगे और मेरी तरफ़ मुख़ातिब होकर फ़रमाया कि दायरा मुहम्मदिया में ऐसे मर्द हैं जो मरतबा सुलूक से गुज़रकर सौ हज़ार दरजे आगे हैं और एक ज़र्रा भी कश्फ़े असरार नहीं करते। वह नहीं जानते हम कौन हैं, क्या हैं? ऐ फ़रीद! जब आदमी दसवीं मरतबा सुलूक से गुज़रकर आगे क़दम बढ़ाता है तो आलमे तहैयुर में आ जाता है। ये फ़वाइद बयान फ़रमाकर हज़रत कुत्बुल अक़ताब आलमे तहैयुर में मश्गूल हो गए और यह दुआगो अपनी जगह पर आकर मश्गूल हो गया।

चौथी मज्लिस

बरोज़ दोशंबा,माह ज़ीक़ादा, 584 हि० सआदते पाबोसी हासिल हुई। मौलाना अलाउद्दीन किर्मानी, शैख़ महमूद मोइना दोज़ हाज़िरे ख़िदमत थे। दुरवेशों की तकबीर कहने का ज़िक्र हो रहा था कि जिस गली और कूचे में जाते हैं तकबीर कहते हैं। दुरवेश ये तकबीर क्यों कहते हैं?

दुरवेश की तकबीर

हज़रत क़ुत्बुल अक़्ताब ने फ़रमाया कि इस तरह तकबीर कहते फिरना कहीं मनकूल नहीं कि हर जगह तकबीर कहते फिरें। तकबीर महल्ले शुक्र है। जब आदमी को कोई नेमत दीन या दुनिया की मिले तो ज़ियादती नेमत के लिए तकबीर कहना रवा है। हर जगह तक्बीर कहते फिरना रवा नहीं। हज़रत क़ुत्बुल अक़्ताब ने फ़रमाया कि तकबीर भी हम्द के मानों में है।

इसके बाद से हिकायत बयान फ़रमाई कि मैं हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन सहरवर्दी की मज्लिस में हाज़िर था। कई रोज़ तक उनके साथ इफ़तार में शामिल रहा। मैंने उनकी मश्ग़ूलियत अजब देखी। मैंने आलमे सियाहत में हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन जैसा कोई आदमी मश्ग़ूल नहीं देखा। एक रोज़ का ज़िक्र है एक फक़ीर ख़िरक़ा पोश उनकी

ख़िदमत में आया। सलाम किया और उसने हाथ पकड़कर फ़िलफ़ौर तकबीर कही। हज़रत शैख़ साहब को दुरवेश का ये तर्ज़ पसन्द न आया और उन्होंने ये हिकायत बयान फ़रमाई कि एक रोज़ हुज़ूर सरवरे आलम (सल०) तशरीफ़ फरमा थे। इर्द-गिर्द सहाबा किराम बैठे हुए थे। हुज़ूर (सल्ल०) ने उनकी तरफ़ मुँह फेरकर फ़रमाया: मुझे उम्मीद है कि क़ियामत के दिन तुम्हें बहिश्त की चौथाई मिलेगी और तीन हिस्से बक़िया दुसरी उम्मतों को। ये सुनकर हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) और दिगर असहाब ने इज़दियादे नेमत के लिए तकबीर कही। दूसरी मरतबा फ़रमाया कि एक तिहाई तुम्हें मिलेगी और दो तिहाई दूसरी उम्मतों को। ये सुनकर हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) और मौला अली (रज़ि०) और दूसरे असहाब खड़े होकर तकबीर कहने लगे। तीसरी मरतबा आपने फ़रमाया आधी जन्नत तुम्हें मिलेगी और आधी दूसरी उम्मतों को। ये सुनकर हज़रत उस्मान ग़नी (रज़ि०) और मौला अली (रज़ि०) और दूसरे सहाबा ने उठकर नारे तकबीर बुलन्द किया। चौथी मरतबा हुज़ूर ने फ़रमाया कि अव्वल मेरी उम्मत बहिश्त में जाएगी उसके बाद और उम्मत के लोग जाएँगे। हज़रत मौला आली (रज़ि०) और सब असहाब मिलकर तकबीर कहने लगे। हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन ने ये हिकायत बयान करके फ़रमाया कि चारों तकबीर जो दुरवेश कहा करते हैं उनमें से एक उन्ही मानों में है लेकिन हर महल पर तकबीर कहना दुरुस्त नहीं।

पीर की इताअत

फिर इस बात का ज़िक्र आया कि अगर मुरीद नफ़्ल नमाज़ पढ़ता हो और पीर उसको आवाज़ दे तो उसे क्या करना चाहिए। नमाज़

नफ़्ल तोड़कर जावाब दे या न दे? हज़रत कुत्बुल अक़्ताब ने ज़बान मुबारक से इरशाद फ़रमाया: बेहतर ये है कि नमाज़ नफ़्ल तर्क करके जवाब दे। इसमें सवाब ज़्यादा है। हज़रत कुत्बुल अक़्ताब फ़रमाने लगे कि मैं एक मरतबा नमाज़ नफ़्ल में मशगूल था। हज़रत शैख़ ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती ने मुझे पुकारा। मैंने फ़ौरन नीयत तोड़ दी। हाज़िरे ख़िदमत हुआ। पूछा: तुम क्या कर रहे थे? मैने अर्ज़ किया कि नफ़्ल की नमाज़ पढ़ रहा था। मैंने आपकी आवाज़ सुनकर नियत तोड़ दी। हज़रत पीर दस्तगीर ने फ़रमाया बहुत अच्छा किया। ये नमाज़ नफ़्ल से ज़्यादा अफ़ज़ल है। क्योंकि पीर के काम में मुस्तइद और मशगूल होना दीन के कामों में मशगूलियत है।

एतिक़ाद का इम्तेहान

फिर फ़रमाने लगे कि एक रोज़ मै हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की ख़िदमत में हाज़िर था। दुसरे दुरवेश भी हाज़िरे ख़िदमत थे। औलिया अल्लाह का ज़िक्र हो रहा था। इतने में एक शख़्स ने हाज़िरे ख़िदमत होकर बैअत के लिए पाबोसी की। हज़रत ख़्वाजा आज़म ने उसको बैटा लिया। उस आदमी ने अर्ज़ किया: हज़रत मैं आपसे मुरीद होने आया हूँ। आपने फ़रमाया: एक शर्त है, अगर बजा लाओ तो मुरीद कर लूँगा। जो कुछ मैं कहूँ वह तुम्हें करना होगा। तलबे सादिक़ थी। अर्ज़ किया: मुझे मंजूर है। हज़रत ख़्वाजा आज़म ने फ़रमाया: बता तू कलिमा किस तरह पढ़ता है? उसने पढ़ सुनाया-ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह। हज़रत ख़्वाजा आज़म ने फ़रमाया। यूँ नहीं, इस तरह पढ़ो- ला इलाहा इल्लल्लाह चिश्ती रसूलुल्लाह। वह शख़्स रासिख़ुल अक़ीदा था। उसने इसी तरह कलिमा पढ़ लिया। हज़रत ख़्वाजा साहब

ने बैअत के लिए हाथ बढ़ाया सआदते बैअत से शर्फ़ अन्दोज़ हो गया। हज़रत ख़्वाजा आज़म ने उसको बहुत कुछ नेमत अता फ़रमाई। फ़रमाया कि मैंने तो फ़क्त तेरा इम्तेहान लिया था, तुझे मुझसे किस क़द्र अक़ीदत है। मेरा क़स्द ये न था कि तू कलिमा उसी तरह पढ़ा कर। मैं कौन और क्या चीज़ हूँ, मैं हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) के ग़ुलामों का अदना तरीन ग़ुलाम हूँ। इस बात से मालूम हो गया कि तेरी अक़ीदत सच्ची है, तू आज से मेरा मुरीद सादिक़ है। मुरीद को ऐसा ही होना चाहिए, अपने पीर की ख़िदमत सादिक़ और रासिख़ हो।

तौबा करने के बाद

इसके बाद ये ज़िक्र होने लगा कि जब आदमी तौबा कर ले तो फिर उन हरीफ़ों में जाकर न बैठे जिनकी सोहबत से उसने तौबा की है। ऐसा न हो कि उन लोगों से मेल-जोल की वजह से फिर कहीं गुनाह में मुब्तला हो जाए। आदमी के लिए सोहबते बद बलाए अज़ीम है, क्योंकि सोहबत का असर ज़रूर होता है। अफ़आले बद से तौबा करने के बाद इस क़िस्म के अफ़आल में मुरतकिब लोगों से बचे रहना निहायत ज़रूरी है। इसी मौक़े पर हज़रत कुत्बुल अक़्ताब ने ये हिकायत बयान फ़रमाई कि जब ख़्वाजा हमीदुद्दीन नायब हुए तो उनके बारह हमनशीन उनके पास आए और उनपर ज़ोर दिया कि आओ पुराना शग़ल करें। ख़्वाजा हमीदुद्दीन ने उन्हें धुतकारते हुए फ़रमाया: जाओ अपना रास्ता लो। मुझसे बात न करो। मैं सब बुरी बातों से तौबा कर चुका हूँ और अपने इज़ारबन्द को ऐसा कसा कि वह क़ियामत के बाद हूराने बहिश्त से ख़लवत में भी न खोलेंगे।

आदाबे मज्लिसे तआम

ये ज़िक्र हो ही रहा था कि खाना आ गया। हज़रत कुत्बुल अक्ताब और दूसरे दुरवेश खाने में मश्गूल हो गए। इतने में हज़रत शैख़ निज़ामुद्दीन अबुल मोईद (रह०) ने हाज़िर होकर सलाम किया। हज़रत कुत्बुल अक्ताब ने उनके सलाम का जवाब दिया और न उनकी तरफ़ इलतिफ़ात फ़रमाया। खाने से फ़रागत के बाद हज़रत निज़ामुद्दीन ने अर्ज़ किया- हज़रत! आप खाना खा रहे थे। मैंने सलाम किया था, मगर आपने जवाब क्यों नहीं दिया। हज़रत कुत्बुल अक्ताब ने जवाब दिया कि हम इताअते इलाही में थे, जवाब कैसे देते। दुरवेशों को खाना महज़ कुव्वते इबादत के लिए होता है और यही उनकी नीयत होती है। खाना खाना गोया उनकी इबादत है। पस जब वह इताअत व इबादत में मशगूल हैं तो उनको इस हालत में जवाब देना और उन्हें आनेवालों को चाहिए कि सलाम कहकर बैठ जाए और खाने में शरीक हो और खाने से फ़ारिग़ होकर वह दोबारा सलाम करे। इसके बाद हज़रत कुत्बुल अक्ताब ने ये हिकायत बयान फ़रमाई कि एक दफ़ा शैख़ अबुल क़ासिम नसीराबादी (रह०) जो हज़रत शैख़ अबू सईद अबुल ख़ैर के पीर व मुर्शिद थे अपने दोस्तों के साथ खाना खा रहे थे। इतने में इमामुलहरमैन हज़रत इमाम ग़ज़ाली (रह०) के उस्ताद आए, सलाम किया। मगर किसी ने उनकी तरफ़ इलतिफ़ात न किया। ये बात उन्हें नागवार महसूस हुई। खाने से फ़रागत के बाद इमामुलहरमैन ने कहा कि मैंने आप लोगों को सलाम किया मगर किसी ने जवाब न दिया, ये क्या बात है। हज़रत शैख़ अबुल क़ासिम ने फ़रमाया कि अदब यही है कि जो शख़्स जमाअत में आए और वह जमाअत खाने में मशगूल हो तो वह सलाम करके बैठ जाए और खाने से फ़रागत के बाद वह दोबारा सलाम करे। इमामुल

हरमैन बोले: ये बात तुमने कहाँ से अख़्ज़ की। अक़्ल से या नक़्ल से। हज़रत शैख़ ने जवाब दिया कि अक़्ल से क्योंकि जब दरुवेशें का खाना महज़ कुव्वते इबादत के लिए होता है और यही उनकी नीयत होती है तो वह खाना खाते हुए भी ऐन ताअते इलाही में होते हैं। बस इसी हालत में जबकि वह इताअत में मशगूल हो सलाम का जवाब क्योंकर दे सकता है।

इसके बाद हज़रत कुतुबुल अक़्ताब आलमे सुक्र में मशगूल हो गए। दुआगो अपने मक़ाम पर वापस आकर मशगूल हो गया।

पाँचवीं मज्लिस

ज़िलहिज्जा सन् 584 हिजरी में दौलत व सआदत पाबोसी नसीब हुई। हज का ज़िक्र छिड़ गया। क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी, मौलाना अलाउद्दीन किरमानी, सैयद नूरुद्दीन मुबारक ग़ज़नवी, सैयद शरीफ़ुद्दीन महमूद मुईनादोज़, मौलाना फ़क़ीह ख़ुदादाद और दिगर हज़रात तशरीफ़ फ़रमा थे। ये सब हज़रात मिसरी कामिल थे। अर्श से लेकर तहतुस्सरा तक कोई चीज़ इनके दरमियान हायल न थी। बड़े-बड़े साहबे कश्फ़ व करामात थे। ख़ाना काबा के मुसाफ़िरों का ज़िक्र होने लगा। हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब ने फ़रमया कि जो अल्लाह के ख़ास बन्दे हैं, जब वह अपने मक़ाम पर होते हैं तो ख़ाना काबा को हुक्म दिया जाता है कि उनके गिर्द तवाफ़ करे। ये फ़रमाते-फ़रामते आप और सब हाज़िरीन खड़े हो गए और आलमे तहैयुर में ऐसे मश्गूल हो गए कि अपने आपकी ख़बर न रही। ये दुआगो भी आलमे तहैयुर में मश्गूल था। फिर सब लोगों ने इस तरह तकबीरें कहनी शुरू कर दीं जिस तरह तवाफ़े काबा के वक़्त कहा करते हैं। ग़र्ज़ यह है कि सब लोग तकबीरें कह रहे थे, हर एक के अज़ाए जिस्म से ख़ून टपक रहा था। जो क़तरा ज़मीन

पर गिरता था उससे तकबीर का नक़्श बहता चला जाता था। बड़ी देर के बाद जब हम होशियार हुए तो हमने काबा को अपने आगे देखा। चुनांचे हमने इसका वही आदाब व ताज़ीम किया जो होना चाहिए। इसके बाद हमने चार बार तवाफ़ किया। ग़ैब से निदा आई-

"ऐ दोस्तो! हमने तुम्हारा हज, तवाफ़ और नमाज़ क़बूल की और उन लोगों की भी जो तुम्हारी पैरवी करें, - तुम्हारे नक़्शे क़दम पर चलें।"

घर बैठे तवाफ़े काबा

फिर फ़रमाने लगे कि शैख़ुल इस्लाम हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती हर साल ज़ियारत ख़ाना काबा के लिए जाया करते थे। जब उनको दर्जा कमाल हासिल हो गया तो हाजियों का बयान है कि हमने ख़्वाजा साहब को ख़ाना काबा का तवाफ़ करते देखा, हालाँकि हज़रत ख़्वाजा अजमेर शरीफ़ में मुतकिफ़ होते थे। इसके बाद ये बात मालूम हुई कि पीर-दस्तगीर हर शब ख़ाना काबा के तवाफ़ को जाया करते हैं और रात भर वहीं रहते हैं और सुबह फ़ज्र से पहले वापस तशरीफ़ लाकर नमाज़ जमाअत अदा फ़रमाते हैं। हज़रत क़ुत्बुल अक़्ताब ने फ़रमाया कि मैंने हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती से सुना और उन्होंने हज़रत ख़्वाजा उसमान हारून से। वह फ़रमाया करते थे कि जब हज़रत ख़्वाजा मसऊद चिश्ती को ख़ाना काबा की ज़ियारत का इश्तेयाक़ ग़ालिब होता तो फ़रिश्तों को हुक्म होता था कि ख़ाना काबा को चिश्त पहुँचा दें।फरिश्ते ख़ाना काबा को हज़रत ख़्वाजा के सामने पहुँचा देते। हज़रत ख़्वाजा मसऊद चिश्ती ख़ाना काबा को देखकर तवाफ़ करते, नमाज़ पढ़ते। तवाफ़ और नमाज़ के बाद फ़रिश्ते ख़ाना काबा को उसकी

जगह पहुँचा देते थे।

फिर फ़रमाया कि हज़रत ख़्वाजा हुज़ैफ़ा मरअशी ने सत्तर बरस तक घर से बाहर तक क़दम नहीं निकाला लेकिन हिजाज़ और मशायख़ का बयान है कि हमने ख़्वाजा साहब को ख़ाना काबा में तवाफ़ करते देखा। कोई कहता हमने ख़्वाजा साहब को बैतुल मक़्दिस में देखा।

क़ुरआन याद करने का तरीक़ा

इसके बाद कुरआन मजीद याद करने का ज़िक्र होने लगा। हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया कि मुझे इब्तिदा में क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ नहीं होता था जिसकी वजह से मैं सख़्त मुतरद्दिद था। एक रोज़ मैंने जनाब रिसालत मआब (सल्ल०) को ख़्वाब मे देखा। मैंने अपनी आँखें हुज़ूर (सल्ल०) के पाए अक़दस पर मलीं, रोना शुरू किया। अर्ज़ किया - हुज़ूर मैं क़ुरआन शरीफ़ हिफ़्ज़ करना चाहता हूँ मगर हिफ़्ज़ नहीं होता। हुज़ूर मुझे हाफ़िज़ा अता हो, ताकि कुरआन शरीफ़ हिफ़्ज़ करूँ। हुज़ूर (सल्ल०) ने मेरी गिरया व ज़ारी पर शफ़क़त फ़रमाई। फ़रमया सर उठा! मैंने सर उठा लिया। फिर फ़रमाया- "अच्छा सूरह यूसुफ़ याद कर ले। खुदा चाहे तो तुझे कुरआन याद हो जाएगा।" ख़्वाब से बेदार होकर बमूजिब फ़रमाने रसूल (सल्ल०) सूरह यूसुफ़ याद करनी शुरू की। सूरह यूसुफ़ याद होते ही मुझे सारा क़ुरआन शरीफ़ हिफ़्ज़ याद हो गया।

हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स क़ुरआन शरीफ़ हिफ़्ज़ करना चाहे, उसे चाहिए कि पहले सूरह यूसुफ़ हिफ़्ज़ कर ले। क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ याद हो जाएगा। उसके बाद फ़रमाया कि हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती को भी कुरआन मजीद याद

न होता था। वह भी मुतरद्दिद थे। एक रात उन्होंने अपने पीर को ख़्वाब में देखा। वह फ़रामने लगे: क्या बात है? किस बात का तरद्दुद है? अर्ज़ किया: कुरआन मजीद याद नहीं होता। उन्होंने फ़रमाया: इस बार सूरह इख़लास कुरआन मजीद हिफ़्ज़ हो जाने की नीयत से पढ़। अल्ला तआला कुरआन मजीद याद करा देगा और फ़रमाया कि जो शख़्स सौ बार सूरह इख़लास इसी नीयत से पढ़ेगा, उसे भी कुरआन मजीद हिफ़्ज़ हो जाएगा। ख़्वाब से बेदार होकर मैंने हस्बे इरशाद पीरो मुर्शिद सूरह इख़लास पढ़नी शुरू की। हक़ तआला के फ़ज़ल व करम से सारा कुरआन शरीफ़ याद हो गया। और आख़िर उम्र में यहाँ तक नौबत पहुँची कि हज़रत ख़्वाजा अबू यूसुफ़ दिन-रात में पाँच कुरआन शरीफ़ ख़त्म कर लिया करते थे।

ये फ़ायदा इरशाद फ़रामने के बाद हज़रत कुत्बुल अक़्ताब आलमे तहैयुर में मश्गूल हो गए। दुआगो अपनी जगह वापस आकर मश्गूल हो गया।

छठी मज्लिस

हौज़े शम्सी

बरोज़ जुमा दौलत व सआदत क़दमबोसी हासिल हुई हज़रत कुत्बुल अक़ताब की ख़िदमत में दुरवेश बा सफ़ा मौजूद थे हज़रत कुत्बुल अक़्ताब ने फ़रमाया कि सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तम को हौज़ बनाने की ज़रूरत थी। वह अरकाने दौलत के साथ उम्द जगह तलाश में था। तलाश करते-करते उसे वह जगह पसन्द आई जहां हौज़े शम्सी वाक़े है। वापस आ गया। सुल्तान शम्सुद्दीन वासिलाने हक़ में था। रात को मुसल्ले पर सोया हुआ था। ख़्वाब में देखा कि हौज़ के चबूतरे के पास जहाँ अब चबूतरा मौजूद है एक निहायत हसीन व जमील सरोक़द घोड़े पर सवार है और चन्द आदमी उसके साथ हैं। उस नौजवान सवार ने सुल्तान शम्सुद्दीन को अपने रू-बरू बुलाकर कहा कहो क्या नीयत है? सुल्तान ने अर्ज़ किया कि मैं इस जगह हौज़ तामीर कराना चाहता हूँ। ये बात-चीत हो रही थी कि किसी शख़्स ने सुल्तान शम्सुद्दीन से कहाः ऐ शम्स! ये रसूले खुदा (सल्ल०) हैं, इनसे अपने मुराद की दरख़्वास्त कर ताकि बर आजाए और तेरा मक़सूद जल्द हासिल हो। सुल्तान शम्सुद्दीन ने हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) के

क़दमो में सर रखकर मुद्दआए वली ज़ाहिर किया। सुल्तान शम्सुद्दीन ने सर उठाया तो हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) के घोड़े ने ज़मीन पर लात मारी। पानी जारी हो गया। हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०)ने फ़रमाया: ऐ शम्स! इस जगह हौज़ बनाना। यहाँ से इतना शीरीं पानी निक्लेगा कि दूसरी जगह इतना शीरीं पानी दस्तयाब न होगा। ख़्वाब से बेदार होकर घोड़ा दौड़ाता हुआ उस मक़ाम पर पहुँचा। वाक़ई उस जगह हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) के घोड़े ने लात मारी थी और जिसके सुम का निशान मौजूद था। पानी जारी था। सुल्तान शम्सुद्दीन ने वह पानी पिया। पानी पीकर कहने लगा कि इससे ज़्यादा शीरीं पानी आज तक मैंने नहीं पिया था। हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया ये शीरीनी हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) के क़दमे मुबारक की है। दूसरे वहाँ बड़े-बड़े औलियाए अल्लाह सोते हैं और अभी मालूम नहीं और कौन-कौन सोएगा। ये फ़रमाकर हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब की आँखों में आँसू भर आए। फ़रमाने लगे: मुझे उम्मीद है कि मेरा मस्कन व मदफ़न भी इसी हौज़ के किनारे होगा।

सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश के हालात

इसके बाद हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब सुल्तान शम्सुद्दीन के हालात बयान करते हुए फ़रमाने लगे कि वह बड़ा ही ख़ुश एतिक़ाद था। रात भर इबादत में लगा रहता था। किसी शख़्स ने उसे रात को सोते नहीं देखा। वह रात भर जागता रहता था। आलमे तहैयुर में खड़ा रहता था। अगर किसी वक़्त ज़रा आँख लग गई तो फ़ौरन बेदार होकर हुज़ूर के मुसल्ले पर आ जाता। न किसी ख़िदमतगार को जगाता, न किसी से काम लेता।

• सुल्तान मौसूफ़ रात को गुदड़ी पहनकर शहर का गश्त लगाया करता था ताकि किसी को पता न चल सके कौन जा रहा है। सुल्तान के साथ गश्त शब में एक महरम राज़ हमराह था। एक थैली रुपयों की उसके हाथ में होती थी। मुसलमानों के घरों पर जाकर एक-एक का हाल पूछना और ज़रूरतमन्दों की ज़रूरत पूरी करना उसका रोज़मर्रा का मामूल था। शहर के गश्त से फ़ारिग़ होकर मस्जिदों, बाज़ारों और इबादतगाहों में जाकर दुरवेशें और मुसाफ़िरों का हाल दरयाफ़्त करता और उनकी हस्बे हाजत इमदाद करता था। उन लोगों को ख़सूसी हिदायत थी कि इस बात का किसी से चरचा न करें। दिन को सुल्तान मौसूफ़ ऐसे लोगों को दरबार में बुलाकर दरयाफ़्त हाल के बाद उनको रुपया-पैसा अता फ़रमाता था और उन ग़रीबों-मुफ़लिसों को क़सम देकर कहता था कि जिस वक़्त तुम्हें तंगदस्ती का सामना हो या कोई शख़्स तुमपर ज़ुल्म या सख़्ती करे तुम फ़ौरन मेरे पास चले आया करो मैं तुम्हें ख़र्च दूँगा, तुम्हारी ख़िदमत और निगहदाश्त ही के लिए मैं तख़्त पर बैठा हूँ।

सुल्तान शम्सुद्दीन ने महल के दरवाज़े पर ज़ंरीरे अदल लटका रखी थी। मज़लूम दादरसी के लिए उस ज़ंजीर को हिलाते सुल्तान उसी वक़्त बाहर तशरीफ़ लाकर मज़लूम की दादरसी करते हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया कि एक शब सुल्तान मौसूफ़ मेरे पास आया। आते ही मेरे पाँव पकड़ लिए। मैंने कहाः तू मुझे क्यों तकलीफ़ देता है? जो तेरा मक़सद हो बयान कर। सुल्तान ने अर्ज़ किया कि मेरी हाजत बस यही कि आपने रब्बुल इज़्ज़त की मेहरबानी से ये मुल्क मुझे दिलवाया है। इतना ख़याल रखिएगा कि क़यामत को जब

रब्बुल इज़्ज़त मुझसे हिसाब-किताब लेगा तो आप मुझे ने भूल जाइएगा। मैंने कहा: बहुत अच्छा। इसके बाद वह रुख़्सत हो गया। फिर फ़रमाया: मैं एक दफ़ा बदायूँ गया हुआ था। सुल्तान शम्सुद्दीन भी इत्तिफ़ाक़ से वहाँ मौजूद थे। शम्सुद्दीन चौगान बाज़ी में गया हुआ था। एक बूढ़े और ज़ईफ़ नहीफ़ आदमी ने आकर सवाल किया: सुल्तान ने उसे कुछ न दिया। जब आगे बढ़ा, एक नौजवान हट्टा-कट्टा सामने खड़ा था। सुल्तान शम्सुद्दीन ने थैली में से मुट्ठी भरकर उस नौजवान को रुपये दिए और आगे को रवाना हो गया। सुल्तान शम्सुद्दीन ने अपने साथियों से कहा: तुमने देखा उस बूढ़े ने मुझसे सवाल किया था, मैंने उसे कुछ नहीं दिया और उस नौजवान को मैंने बेमाँगे बहुत-से रुपये दे दिए। तुम समझ लो कि मैं अपनी ख़्वाहिश से देता तो उस बूढ़े साइल को देता, उस हट्टे-कट्टे नौजवान को न देता। वह बूढ़ा वाक़ई अताए बख़शिश के लायक़ था मगर यहाँ तो बात ही कुछ और है। जिसको खुदा देता है, मुझसे दिलवाता है और जिसे देना नहीं चाहता किसी की मजाल नहीं कि उसे कोई एक पैसा भी दे सके।

शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी (रह०) का ज़िक्र

मुल्ला और सूफ़ी की चश्मक

इसके बाद हज़रत कुत्बुल अक़्ताब ने देहली के शैखुल इस्लाम और शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी का ज़िक्र शुरू फ़रमाया। आपने फ़रमाया कि शैखुल इस्लाम ने हज़रत जलालुद्दीन तबरेज़ी पर तोहमत लगाई कि वह अमरद (बेरीश) लड़कों से मुहब्बत रखते हैं और दुरवेशी का दावा भी करते हैं। ये बात बढ़ते-बढ़ते यहाँ तक बढ़ी कि शैखुलइस्लाम ने

उनके ख़िलाफ़ अगले दिन पेशी के लिए मुक़र्रर कर दिया और सुल्तान को भी हालत से मुत्तला कर दिया। शैख़ जलालुद्दीन ने शैखुलइस्लाम को कहला भेजा कि इस मामले के तसफ़िया के लिए कोई मुनसिफ़ होना चाहिए। उन्होंने जवाब दियाः जिसको तुम पसन्द करो हम उसे मुनसिफ़ बनाने को तैयार हैं। शैख़ जलालुद्दीन तबरेज़ी ने फ़रमाया कि मेरे ख़याल में इस काम के लिए हज़रत मख़दूम बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी ज़्यादा मुनासिब हैं। शैखुलइस्लाम ने लिखा कि हज़रत मख़दूम साहब देहली से दूर दराज़ मक़ाम पर रहते हैं। कल पेशी के वक़्त तक वह देहली न पहुँच सकेंगे। शैख़ जलालुद्दीन ने तहरीर कियाः इत्मिनान रखो, कल पेशी के वक़्त से पहले-पहले आ जाएँगे।

ग़र्ज़ ये कि दूसरे दिन एक बड़ा भारी मजमा इकट्ठा हो गया। बड़े-बड़े अइम्मा और मशाइख़ जमा हो गए। ये दुआगो भी हाज़िर था। सुल्तान शम्सुद्दीन भी आए। शैख़ जलालुद्दीन आए और जूतियाँ उतारने की जगह बैठ गए। हर चन्द लोगों ने शैख़ साहब से इसरार किया सुल्तान ने भी इसरार किया कि आप ऊपर बैठें, मगर उन्होंने उस जगह से उठकर किसी दूसरी जगह बैठना पसन्द न किया। फ़रमाया कि मैं इस वक़्त मुद्दआ अलैह और मुल्ज़िम की सूरत में हूँ, मेरे लिए बैठना मुनासिब नहीं है।

इसके बाद अइम्मा, मुफ़्ती साहबान और शैखुलइस्लाम ने हदीसें और रिवायतें मुनासिबे हाल पढ़नी शुरू कीं, शैख़ जलालुद्दीन चुपचाप सुनते रहे। थोड़ी देर में हज़रत मख़दूम बहाउद्दीन ज़करिया मुल्तानी भी तशरीफ़ ले आए। तमाम हाज़िरीन हैरान थे। देखें इस मुक़द्दमा का क्या नतीजा निकलता है। हज़रत मख़दूम साहब जूतियों

उतारने की जगह आकर खड़े हो गए और शैख़ जलालुद्दीन की नालैन उठाकर अपनी आँखों से मलकर आस्तीन में रख लीं। सुल्तान शम्सुद्दीन ने ये नज़ारा देखकर बआवाज़ बुलन्द फ़रमायाः हमें शैख़ जलालुद्दीन की बुज़ुर्गी मालूम हो गई। जब ऐसा कामिल शख़्स और मुक़तदाए ज़माना उस शख़्स की नालैन बोसी करता है तो वह ख़ुदा के नज़दीक न मालूम किस दरजा और मरतबा का आदमी होगा। शैख़ जलालुद्दीन के ख़िलाफ़ दावा सरासर इत्तेहाम और बोहतान है। इसके बाद सुल्तान शम्सुद्दीन और दिगर हाज़िरीने मज्लिस ने बहुत-बहुत माज़ेरत और माफ़ी चाही। मज्लिस बरख़्वास्त हो गई। इसके बाद हज़रत शैख़ जलालुद्दीन और मख़दूम बहाउद्दीन ये दोनों बुज़ुर्ग जमना के किनारे आए। रात वहीं बसर की। सुबह को शैख़ बहाउद्दीन तो मुल्तान रवाना हो गए और शैख़ जलालुद्दीन देहली छोड़कर जानिबे लखनऊ (बंगाल) चले गए। वहीं एक अर्से के बाद इन्तिक़ाल फ़रमया। हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया कि इस बात को थेड़े ही दिन हुए कि शैखुलइस्लाम के पेट में दर्द उठा और वहीं एड़ियाँ रगड़ते-रगड़ते मर गया।

दुनिया हिजाबे अकबर है

इसके बाद दुनिया का ज़िक्र होने लगा। हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाया कि बन्दे के लिए दुनिया से ज़्यादा कोई हिजाब नहीं। जिस क़द्र दुनियिा में मुब्तला हो जाता है उसी क़द्र ख़ुदा से दूर और जुदा हो जाता है। हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने जिस वक़्त दुनिया की मुहब्बत को यहाँ भेजा तमाम फ़रिश्ते रो पड़े, मगर शैतान ख़ुश होकर कहने लगाः अच्छा हुआ औलादे आदम में फ़ित्ना तो पैदा हुआ। उसकी मोहब्बत की वजह से

भाई-भाई·को मार डालेगा और अपनों में मोहब्बत न रहेगी। शहर के शहर उसी की मुहब्बत में ख़राब और वीरान हो जाएँगे, एक दुसरे में जुदाई और अदावत पैदा होगी और आख़िरकार खुद ही हलाक हो जाएँगे, मगर दुनिया बरक़रार रहेगी।

अलग़रज़ इस दुनिया की मोहब्बत को शैतान ने सर आँखों पर रखा। बड़ी ताज़ीम व तकरीम की। फ़रमाने खुदावन्दी हुआः "इबलीस तूने दुनिया की मुहब्बत की हद से ज़्यादा ताज़ीम की!" इबलीस ने कहाः मैंने इसलिए इस दुनिया की ताज़ीम की कि जो कोई इसे दोस्त रखेगा वह मेरे दोस्तों में से होगा। मैं उसको यार बनाकर फ़रेब दूँगा और मुरदार दुनिया में उसे फँसाकर तमाम इबादात और ख़ैरात से अलग रखूँगा। पस जब दुनियादार मेरे पास होगा जल्द हलाक होगा और उसका माल दूसरों को नसीब होगा। हज़रत कुत्बुल अक़ताब फ़रमाने लगेः हाए क्या मक्कार दुनिया है जो उसके जाल में फँसा, वह हलाक ही हुआ। और फिर वह ऐसी ही की ऐसी ही रही। फिर फ़रमायाः दुनिया से सब लोग दोस्ती व मुहब्बत ररखते हैं, मगर दुरवेश इस पर लात मार चुका है। उसे अपने पास तक आने नहीं देता। हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया कि हज़रत ख़्वाजा अबू यूसुफ़ चिश्ती (रह०) ने फ़रमाया है कि दीने मुहम्मदी (सल्ल०) में ऐसे भी मर्द हैं कि अगर उनके पास हज़ार-हज़ार बार दुनिया आए और आकर अर्ज़ करे ऐ ख़्वाजा ख़्वाजगान अगर तुम मुझे क़बूल नहीं करते तो एक ही नज़र देख तो लो, वह कभी भी उसकी बातों पर मुतवज्जेह न हों और यही कहें ख़बरदार! इधर न आना, अगर अब की मरतबा यहाँ आई तो तूही जानेगी।

इसके बाद आपने फ़रमाया कि हज़रत ईसा (अलै०) ने एक

रोज़ बदसूरत बुढ़िया औरत को देखा। पूछाः तू कौन है? उसने कहाः मैं दुनिया हूँ। हज़रत ईसा (अलै०) ने फ़रमायाः तूने कितने ख़ाविन्द किए। दुनिया ने जवाब दियाः बेशुमार। अगर शुमार में आ सके तो बयान करूँ। आपने फ़रमायाः तुझे किसी ने तलाक़ भी दी। दुनिया ने जवाब दियाः नहीं कोई मुझे क्या तलाक़ देता, मैं सबको चित कर गई। वह मर गए मैं ज़िन्दा हूँ।

ये बयान फ़रमाकर हज़रत कुत्बुल अक़ताब बहुत रोए। फ़रमाया कि दुरवेशी में राहत बहुत है और दुनिया की आफ़तों से पनाह है, लेकिन बड़ी सख़्ती दुरवेशी में ये है कि फ़क़ीर को कभी रात फ़ाक़ा से भी काटनी पड़ती है, मगर फ़क़ीर के लिए वह रात शबे मेराज है। अहले सुलूक व तसव्वुफ़ का क़ौल है मेराजुल फ़क़ीर फ़ी लैलतिल फ़ाक़ा (जो रात फ़क़ीर की फ़ाक़ा में बसर होती है वह रात फ़क़ीर की मेराज की होती है।) कोई नेमत दुरवेशी से ज़्यादा नहीं है। दुरवेशी में ममलकत दुरवेश के हाथ में दे दी जाती है। उसे इख़्तियार है अपनी ममलकत में जिस तरह चाहिए तसर्रुफ़ करे। वह अगर चाहे तो खुद भी खा-पी सकता है। मगर बेहतर यही है कि फ़क्रो-फ़ाक़ा से वक़्त गुज़ार दे ताकि उसका काम दोबाला हो और उसके मदारिज में तरक़्क़ी हासिल हो। ये फ़वायद बयान करने के बाद हज़रत कुत्बुल अक़ताब चश्म पुर आब होकर आलम तहैयुर में मशगूल हो गए और ये दुआगो अपने मक़ाम पर चला आया।

सातवीं मज्लिस

हरबुने मू से ख़ून जारी

दौलत पाबोसी हासिल हुई। इस मज्लिस में क़ाज़ी हमीदुद्दीन, मौलाना शहाबुद्दीन ऊशी, शैख़ मुहम्मद मोईना दोज़, ख़्वाजा ताजुद्दीन गज़नवी, मौलाना खुदादाद, सैयद नूरुद्दीन, मुबारक ग़ज़नवी, सैयद शरफुद्दीन, मौलाना शम्सुद्दीन तुर्क, अलाउद्दीन किरमानी, क़ाज़ी इमादुद्दीन ज़ाहिद ये सब साहब कशफ़ व करामात हज़रात हाज़िर थे। सुलूक का ज़िक्र हो रहा था। हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया कि एक दफा इमामुल हरमैन अपने दोस्तो के साथ बैठे हुए थे कि इमामुलहरमैन ने ज़िक्र अल्लाह शुरू कर दिया। उनकी मुवाफ़्क़त में सब बुज़ुर्ग ज़िक्र करने लगे और यहाँ तक ज़िक्र इलाही में मशगूल हो गए कि किसी को किसी की ख़बर न रही, फिर उन सबके रोगंटे से खून बहना शुरू हो गया। जो क़तरए ख़ून ज़मीन पर गिरता था उससे नक़्श अल्लाह पैदा हो जाता था और इसके गिरने की आवाज़ से इस मज्लिस में भी सब हुज़ुर्ग पर एक हालत तारी हो गई और ऐसे ज़िक्र इलाही में मशगुल हुए कि बेहोश हो गए।

सब लोग ज़िक्र इलाही में ऐसे मशगूल हुए कि उनके हर बुनेमू

से ख़ून बहने लगा, जो क़तरह ज़मीन पर गिरता था उससे नक़्श सुबहानल्लाह बन जाता था और इसके गिरने की आवाज़ से ज़िक्र इलाही मफ़हूम होता था। जब इस ज़िक्र से फ़ारिग़ हो गए सब अपनी जगह बैठ गए। ये दुआगो उठा और आदाब बजा लाया। मेरी नीयत वहाँ से जाने की थी। हज़रत कुत्बुल अक़ताब की नज़र मेरे ऊपर पड़ी, आँखों में आँसू भर लाए। मैं सब कुछ कहने न पाया था कि हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया : मौलाना फ़रीद मैं जानता हूँ कि तुम चले जाओगे। मैं फिर आदाब बजा लाया और ज़मीने ख़िदमत को बोसा दिया और अर्ज़ किया कि अगर हुक्म हो? फ़रमायाः अच्छा जाओ, तक़दीर में ऐसा ही लिखा है कि सफ़र आख़िरत के वक़्त तुम मेरे पास न होगे। फिर आपने सबकी तरफ़ मुतवज्जोह होकर फरमाया कि मैं इस दुरवेश की ज़्यादती नेमत के लिए फ़ातेहा इख़लास पढ़ता हूँ। सबने हाथ उठाकर और दुआए ख़ैर की।

अताए ख़िदमत व सज्जादगी

उस वक़्त आपके पास मुसल्ला था, वह मुझे अता किया और एक असा भी मरहमत फ़रमाया और फरमायाः दोगानए शुक्र आदा करो और बैठो, कल चले जाना। मैंने आपके हुक्म के मुताबिक़ दोगाना पढ़ा और मुसल्ला पर बैठा, फिर ख़्वाजा कुत्बुल अक़ताब ने मेरी तरफ़ मुख़ातब होकर फ़रमाया : मैं तुम्हारी अमानत यानी सज्जादा,नालैन, दस्तार और ख़िरक़ा क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी को दे जाऊँगा। तुम मेरी वफ़ात के 4 या 5 रोज़ बाद आओगे, उस अमानत को ले लीजयो। ये कलेमात आपके ज़बान से निकलते ही मज्लिस में शोर व मातम बरपा हो गया। फिर सबने हज़रत कुत्बुल अक़ताब के

लिए दुआ की। हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया तुम आज़ुर्दा क्यों होते हो, मैं भी अपने ख़्वाजा शैखुलइस्लाम मुईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी कुद्दस सिर्रहू के वफ़ात के वक़्त हाज़िर था उन्होंने भी मुझे उस वक़्त ख़िरक़ा नहीं दिया सज्जादा से रुख़्सत कर दिया था जैसा कि दुआगो ने तुम्हारे साथ किया। फिर आपने फ़रमाया कि मुरीद को चाहिए कि अपने पीर की सुन्नत पर क़ायम रहे और एक ज़र्रा बराबर उससे तजावुज़ न करे ताकि क़ियामत के दिन उनके रू-बरू शर्मिन्दा न होना पड़े।

ख़ौफ़

इसके बाद ख़ौफ़ का जिक्र हाने लगा। आपने फ़रमाया कि हर बेअदब के लिए ख़ौफ़े हक़ का एक ताजियाना है ताकि जो बन्दा बेअदबी का मुरतकिब हो उसको इस ताजियाना से सीधा कर दिया जाए तो वह सँवर जाए। फिर आपने फ़रमाया कि जिस दिल में ख़ौफ़े इलाही होता है उसके दिल का शीशा ज़र्रा-ज़र्रा हो जाता है। फिर फ़रमाया कि एक दफ़ा हज़रत सुफ़यान सौरी बीमार थे । हारून रशीद ने किसी यहूदी तबीब को इलाज के लिए भेजा। वह बड़ा हाज़िक़ तबीब था। जब उसने ख़्वाजा सुफयान सौरी की नब्ज़ देखी और हाथ सीना पर रखा, एक नारा मार कर बेहोश होकर गिर पड़ा। कहने लगाः सुबहानल्लाह दीने मुहम्मदी में ऐसे मर्द भी हैं जिनका दिल खुदा के खैफ़ से ज़र्रा-ज़र्रा हो गया है। उसने फौरन कलिमा पढ़ा और मुसलमान हो गया।

फिर आपने फ़रमाया कि दुरवेश तवंगरी का तालिब है तो उसको चाहिए कि ज़ुहद व ताअत बहुत करे और अगर फ़क़ीरी का तालिब है तो नामुरादी को इख़्तियार करे और अगर कुर्ब का तालिब हो तो नाउम्मीदी को अपनाकर पूरी तरह ताअत और इताअत में मसरूफ़

हो। अगर ऐसा न करेगा तो उसे मक़ामात पर रिसाई हासिल न होगी। उसके बाद मेरी तरफ़ मुख़ातब होकर फ़रमाया: ऐ फ़रीद! तू मेरा दुनिया व आख़िरत में यार है, ये बात अच्छी तरह सुन ले, ग़ाफ़िल न हो जाना। अहले सुलूक फरमाते हैं कि राहे तरीक़त एक पुरख़तर राह है, जो कोई इस राह में क़दम रखेगा वह ग़फ़लत से मन्ज़िल गाहे इज़्ज़त पर नहीं पहुँचता मगर उस तरीक़े से जिस तरीक़े से उसके अह्ल ने मुकर्रर फ़रमया है। पस जब आदमी ख़ुदा के दरवाज़े पर पहुँचे तो जब तक वह दस्त बला से दरवाज़ा न खोले और कुछ ग़म न उठाए और ज़िल्लत न हासिल करे मन्ज़िले इज़्ज़त पर न पहुँचेगा। फिर फ़रमाया: मुझे रियाज़त करते 30 बरस गुजर गए। जब तक ऐसा न कर लिया मन्ज़िले गाहे इज़्ज़त पर न पहुँचा। ये फ़वाइद तमाम हुए तो तमाम हाज़िरीन आदाब बजा लाए और रुख़्सत हो गए । जब मेरी नौबत आई हज़रत कुत्बुल अक्ताब ने मुझे आगोश में लिया, रोने लगे और फ़रमाया: हाज़ा फिराकु बैनी व बैनक (आज का दिन हमारे तुम्हारे दरमियान जुदाई का है, आज के बाद फिर हमारा तुम्हारा मिलना नसीब न होगा।)

इसके बाद फ़रमाया कि इरादते हक़ पीर के साथ बड़ी ज़बरदस्त चीज़ है। जाओ मैंने तुम्हें ख़ुदा के सुपुर्द किया और मकामे कुर्ब व इज़्ज़त पर पहुँचा दिया। आप आलमे तहैयुर में मशग़ूल हो गए और दुआगो वहाँ से लौट आया।

मुन्तख़ब व मुजर्रब अमलियात-हज़रत कुत्बुद्दीन

दुआ मासूरा बराए दफ़ए रंजो बला

अगर कोई शख़्स किसी रंज व बला में गिरफ़्तार हो और उससे ख़लासी की होई सूरत न हो तो जुमआ को अस्र की नमाज़ के बाद से मग़रिब तक इन तीन असमा के ज़िक्र में मशगूल रहना चाहिए। खुदा चाहे रंज व बला से नजात मिल जाएगी। वह अस्मा ये हैं: या अल्लाह, या रहमान, या रहीम।

बराए दफअए तंगीये मईशत

रोज़ाना रात को सुरए जुमुआ तिलावत करनी चाहिए। तंगीये मईशत दूर हो जाएगी, बिगड़े हुए काम बन जाएँगे।

दुआ हालते इज़्तिरार

जब आदमी की हालत इस दरजा को पहुँच जाए कि मौत सर पर नज़र आने लगे, हिरमान और मायूसी की घटा दिल पर छा जाए तो सूरह या०सीन० 40 मरतबा पढ़कर हक़ तबारक व तआला से ख़लासी व निजात की दुआ करे,मुजर्रब है।

अमल सूरह फ़ातिहा

क़ज़ाए हाजत के लिए ये अमल अकसीर व तीर ब हदफ़ है। जब कोई मुश्किल काम या कोई सख़्त मुहिम दरपेश हो तो सूरह फ़ातिहा इस तरकीब से पढ़ें- अव्वल बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़ें और आख़िर के मीम को अलहम्द के लाम के साथ मिलाएँ और अर्रहमानिर्रहीम

3 मरतबा पढ़ें। सूरह ख़त्म करने के बाद 3 बार आमीन कहें।

अमल बराए कमाले रूह

अस्र की नमाज़ के बाद सूरह वन्नाज़िआत जो शख़्स पढ़ा करेगा वह आदमी एक वक़्त की नमाज़ से ज़्यादा क़ब्र में न रहेगा, यानी उसकी रूह दरजा कमाल तक को पहुँच जाएगी और वह जिस्म को जज़्ब करेगी।

क़ुरआन याद करने का अमल

जो शख़्स सोते वक़्त ये दो आयतें पढ़ेगा, उसे क़ुरआन शरीफ़ याद रहेगा, वे आयतें ये हैं :

وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ۔ اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ
الَّیْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّعْقِلُوْنَ

कोई कुछ बिगाड़ न सकेगा

एक ज़ालिम बादशाह ने खुदाई का दावा किया। वज़ीर से मशविरा किया कि मुझे इस दावा पर इस्तिक़ामत की तदबीर बता। वज़ीर बड़ा मक्कार आदमी था। उसने राय दी कि दो तरकीबें बताता हूँ, अगर उस पर अमल कर सको तो तुम्हारी खुदाई में किसी को शक व शुब्हा न रहेगाः (1) इस शहर में जितने आलिम व फ़ाज़िल और आबिद व ज़ाहिद हैं उन सबको शहर बदर कर दें, न ये लोग रहेंगे न इस्लाम का ख़याल किसी के दिल में आएगा। बादशाह ने इस मशविरा पर अमल कर के तमाम औलिया और उलमा को शहर बदर कर दिया। (2) जितने भी तालिबे उलूमे दीन हैं उन सबको क़त्ल कर डाल। बादशाह

ने तमाम तलबा को तहे तेग़ करा दिया। पीर-दस्ततबीर हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी (रह०) के पोते भी इसी शहर में रहा करते थे। जिस वक़्त पुलिस का आदमी उनको बादशाह की पेशी में ले गए तो उन्हें देखते ही बादशाह ने तख़्त से उतरकर ताज़ीम की और ख़िलअते ख़ास अता करके रुख़्सत किया। बादशाह ने वज़ीर के सवाल पर जवाब दिया कि जिस वक़्त ये बुज़ुर्ग मेरे सामने आए उनके दाएँ-बाएँ दो बड़े-बड़े अज़दहे मुँह खोले हुए थे और मुझे निगलने के लिए दौड़ रहे थे, बड़ी मिन्नत-समाजत से उन बुज़ुर्ग से रिहाई की शर्त पर उन अज़दहों ने मुझे छोड़ा। इसके बाद लोगों ने उन बुज़ुर्ग से पूछा कि तुम्हे रिहाई क्योंकर मिली तो उन्होंने जवाब दिया : मैं हस्बियल्लाहु व नेमल वकील नेमल मौला व नेमन्नसीर बहुत पढ़ा करता था। इन कलिमात की ख़ासियत ये है कि पढ़नेवाले का कोई कुछ नहीं कर सकता।

लोगों के मकरो फ़रेब से हिफ़ाज़त का अमल

अगर किसी शख़्स को दुश्मनों के मकरो फ़रेब का ख़तरा हो तो उसे इस आयत का दौर करना चाहिए :

اُفَوِّضُ اَمْرِیْٓ اِلَی اللّٰہِ اِنَّ اللّٰہَ بَصِیْرٌ بِالْعِبَادِ۔

हर मुसीबत के दूर होने का अमल

अगर कोई शख़्स किसी ऐसी मुसीबत में गिरफ़्तार हो जिससे रिहाई की कोई सबील नज़र न आती हो तो उसे बिला तादाद आयते करीमा या आयतुलकुर्सी का विर्द करना चाहिए।

दराज़िए उम्र, ज़ियादतीए माल व दौलत

फ़र्जों के बाद 3 बार दरूद शरीफ़ और एक बार ये आयत पढ़कर आसमान की तरफ़ फूंकनी चाहिए :

وَمَن يَتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَل لَّهُ مَخْرَجًا وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ وَمَن يَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهُ إِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ أَمْرِهِ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا

मुफ़्लिसी दूर करने का अमल

जो शख़्स आयतुलकुर्सी पढ़कर मकान में दाख़िल होगा हक़ तआला उसके घर से मुफ़्लिसी दूर फ़रमाएगा, उसमें चोर दाख़िल न हो सकेंगे।

बिगड़े हुए काम सुधारने का अमल

बरिवायत हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़ हुज़ूर (सल्ल०) मरवी हैं कि अगर कोई काम क़ाबिले इस्लाह न हो या रंज व ग़म पेश आए तो सुबह की नमाज़ पढ़कर मुसल्ला पर बैटे-बैठे 100 दफ़ा لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ يَا فَرْدُ يَا وِتْرُ يَا اَحَدُ يَا صَمَدُ

पढ़ें, बीमारी से सिहतयाबी के लिए ये दुआ 100 मर्तबा बाद नमाज़ फ़ज्र पढ़कर दम करनी चाहिए।

अमले कुशाइशे रिज़्क़

कुशाइशे रिज़्क़ के लिए ये दुआ 101 या 113 मर्तबा पढ़ी जाती है :

بسم الله الرحمن الرحيم. يا دائم العز والبقاء يا ذا المجد والعطايا يا ودود ذو العرش المجيد فعال لما يريد.

दुनिया व आख़िरत की तंगी और दोज़ख़ की आग से निजात का अमल

हज़रत ख़्वाजा कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया है कि जो शख़्स ये चाहे कि दुनिया व आख़िरत की तंगी और दोज़ख़ के अज़ाब से ख़लासी हासिल हो तो उसे इस दुआए मुतबर्रक का विर्द रखना चाहिए :

رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

सब्र, साबित क़दमी और दुश्मनों पर फ़तह पाने के लिए

इस आयत का विर्द रखना चाहिए

رَبَّنَا أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكَافِرِينَ

दिल को ईमान व अमान के साथ मुत्मइन रखने के लिए

दिल को ईमान व अमान के साथ मुत्मइन रखने के लिए इस आयत का विर्द मुजर्रब है :

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ

ख़ुदा के दोस्तों से मुलाक़ात के लिए दुआ

अगर कोई शख़्स चाहे कि मुझे ख़ुदा के दोस्तों की मुलाक़ात नसीब हो तो उसे ये दुआ पढ़नी चाहिए :

رَبَّنَا إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيهِ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيعَادَ

हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया है कि जो शख़्स इस आयत का विर्द रखेगा वह ख़ुदा के दोस्तों के साथ मिल जाएगा।

अगर लाइक़ फ़रज़न्द की तमन्ना हो

तो इस आयत का विर्द रखना चाहिए :

رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَاءِ

ये दुआ हज़रत ज़करिया(अलै०) पढ़ा करते थे। हक़ तआला ने उनको हज़रत यह्या फ़रज़न्द अता फ़रमाया।

नेक लोगों के मरतबे पर पहुँचने की दुआ :

अगर किसी शख़्स की ख़्वाहिश हो कि मैं नेक लोगों के मरतबे पर पहुँचूँ और मैदाने क़ियामत में अमन व अमान से रहूँ तो उसे ये आयत पढ़नी चाहिए :

رَبَّنَا آتِنَا مَا وَعَدتَّنَا عَلَىٰ رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۗ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيعَادَ

तफ़सीर कश्शाफ़ में है कि जो शख़्स ये आयत सिदक़ दिल से पढ़ेगा, क़ियामत के दिन उसका हश्र नेक मरदों के साथ होगा।

ज़ालिमों की सुहबत से निजात पाने की दुआ

इस आयत को पाबन्दी के साथ पढ़ना चाहिए :

رَبَّنَا اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ اَهْلُهَا وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ وَلِيًّا وَاجْعَلْ لَنَا
مِنْ لَدُنْكَ نَصِيْرًا

इस दुआ की बरकत से हक़ तआला उसे अपनी दोस्ती की नेमत अता फ़रमाएगा, दुश्मनों पर मुज़फ़्फ़र व मंसूर रहेगा।

फ़राख़िए रिज़्क़ के लिए मुजर्रब दुआ

ये आयत पढ़ें :

ربنا انزل علينا مائدة من السماء تكون لنا عيدا لاولنا واخرنا
وارزقنا وانت خير الرازقين-

ख़ुदा तआला की बरकत व रहमत नाज़िल होगी , रिज़्क़ में फ़राख़ी होगी और किसी का मुहताज न रहेगा।

ज़िन्दगी ख़ैर और सलामती के साथ गुज़ारने की दुआ

इस मक़सद के लिए इस आयत का विर्द निहायत मुअस्सिर है

ربنا افرغ علينا صبرا وثبت اقدامنا وانصرنا على القوم الكافرين

अगर कोई शख़्स किसी ज़ालिम के हाथ में गिरफ़्तार हो तो इस आयत के विर्द से हक़ तआला रिहाई फ़रमाएगा :

ربنالا تجعلنا فتنة للقوم الظالمين ونجنا برحمتك ياارحم الراحمين۔

इस्लाम पर ख़ात्मा और नेकियों में मिल जाने की दुआ

अगर कोई शख़्स ये चाहे कि मैं हालते इस्लाम में मरूँ और मैं नेकों में शामिल हो जाऊँ तो उसे इस आयत का विर्द करना चाहिए:

فاطر السمٰوٰت والارض انت ولیّ فی الدنیا والاخرة توفنی مسلمًا والحقنی بالصالحین۔

देव, परी, ज़ालिम और बुतपरस्ती से बचने की दुआ

इस मक़सद के लिए ये आयत कसरत से पढ़नी चाहिए :

رب اجعل ھذا بلدا امنا واجنبنی وبنی ان نعبد الاصنام۔

इस आयत की बरकत से पढ़नेवाला बुतपरस्तों के शर्र और फ़साद से अमन में रहेगा।

दिल में नूरे ईमान कामिल हो जाने की दुआ

ये आयत कसरत से पढ़नी चाहिए :

ربنا اتمم لنا نورنا واغفرلنا انك على كل شی قدیر

सारी बलाएँ दूर हो जाएँ, ज़हर तक का असर ज़ाइल हो जाए

बनी इसराईल में एक बहुत बड़ा बुज़ुर्ग था। उसके पास एक नौजवान कनीज़ थी ,जो अपने बूढ़े आक़ा से तंग रहती थी, किसी हमसाया औरत के मशविरे से उस कनीज़ ने उस मर्द बुज़ुर्ग को ज़हर पिला दिया। ज़हर का कुछ भी असर न हुआ, कनीज़ ने हाथ जोड़कर अर्ज़ किया : मैंने तुम्हें हलाहल ज़हर पिलाया, तुमपर ज़हर का असर क्यों नहीं हुआ?

उस मर्द बुज़ुर्ग ने जवाब दिया कि मैं एक दुआ पढ़ता हूँ,ज़हर की हक़ीक़त क्या है, सारी बलाएँ उससे दूर हो जाती हैं :

بسم الله الرحمن الرحيم بسم الله خيرا لا بسماء رب الارض ورب السماء

بسم الله الذی لا یضر مع اسمه شئ فی الارض ولا فی السماء وهو السمیع العلیم

ख़्वास्स बाज़ सूरह क़ुरआन

सूरह फ़ातिहा : गुज़श्ता सफ़हात में बिसमिल्लाह के मीम को अलहम्द के लाम के साथ अस्ल करके सूरह फ़ातिहा पढ़ने की तरकीब बयान की जा चुकी है। ये ख़त्म हर मक़सद में कामयाबी, बीमारी की सिहतयाबी, मुक़द्दमा में फ़तहयाबी और हर दीनी व दुनियावी मक़सद के लिए पढ़ा जाता है। ये ख़त्म शरीफ़ 41 बार पढ़ा जाता है।

सूरह बक़रह : दिन में एक बार पढ़ी जाती है। जो शख़्स फ़ज्र की सुन्नत और फ़र्ज़ के दरमियान 3 रोज़ तक जिस नीयत से

पढ़ेगा, खुदा तआला उसकी नीयत पूरी फ़रमाएगा।

सूरह आले इमरान : फ़राख़िए दीन व दुनिया के लिए सूरह आले इमरान का ख़त्म एक दिन में 10 मर्तबा पढ़ना चाहिए।

सूरह निसा : दीन व दुनिया के अज़ाबों से निजात व अमन के लिए दिन में सूरह निसाअ् का ख़त्म 7 मर्तबा पढ़ना चाहिए।

सूरह माइदा : जो शख़्स रोज़ाना सूरह माइदह 7 मर्तबा पढ़ेगा, उस शहर में क़हत और गिरानी नहीं होगी।

सूरह अनआम : हर मक़्सद के बर आने के लिए सूरह अनआम का ख़त्म 7 बार पढ़ना चाहिए।

सूरह अअ्राफ़ : तौबा क़ुबूल होने के लिए सूरह अअ्राफ़ का ख़त्म पढ़ना चाहिए। इसकी तरकीब अव्वल 7 मर्तबा इस्तिग़फ़ार पढ़ें, फिर दो रकअत पढ़ें। पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार और सूरह काफ़िरून 100 बार और दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा एक बार और सूरह इख़्लास 100 बार, इसके बाद सूरह मज़कूर पढ़ें।

सूरह अनफ़ाल : ख़लासी असीरान के लिए दिन में 4 बार पढ़ना चाहिए।

सूरह तौबा : आक़िबत बख़ैर होने के लिए 40 बार पढ़नी चाहिए।

सूरह हूद : दुश्मनों और काफ़िरों पर मुज़फ़्फ़र व मंसूर होने के लिए सूरह हूद दस मर्तबा पढ़ें।

सूरह इबराहीम : गुनाहों की बख़शिश, क़ुरआन पढ़ने और याद करने के लिए 10 बार पढ़ें।

सूरह रअ्द : दुश्मनों से ख़ौफ़ व हिरास के वक़्त 7 बार पढ़ें।

सूरह हज : मसरूअ् व मजनू के लिए 70 बार पढ़कर मरीज़

पर दम करें और पानी पर दमकर के पिलाएँ।

सूरह नहल : जो शख़्स रोज़ाना 10 बार पढ़ेगा, जो ख़ुदा से माँगेगा, मिलेगा।

सूरह कहफ़ : जुम्ला मुहिमात के लिए बाद नमाज़े जुमा 41 बार पढ़नी चाहिए।

सूरह मरयम : कुशूद कार और फ़राख़ी नेमत के लिए रोज़ाना 20 बार पढ़ा करें।

सूरह ताहा : जो शख़्स जुमा की शब की 3 मर्तबा पढ़ेगा, उसको हक़ तआला से हमकलामी का शर्फ़ नसीब होगा।

सूरह रूम : तमाम बलाओं के दूर होने के लिए सूरह नूर का ख़त्म निहायत मुअस्सिर है, रोज़ाना 7 बार पढ़ें।

सूरह यासीन : सूरह यासीन का ख़त्म हर मक़्सद के लिए तीर ब हदफ़ है।

सूरह मुहम्मद : असरारे इलाही के ज़ूहूर के लिए 41 बार पढ़ा जाता है।

आरिफ़ाना इरशादात

दुरवेशी हासिल करने का तरीक़ा

दुरवेशी परदापोशी का नाम है। दुरवेशी के मानी यही है कि बन्दगाने खुदा की परदापोशी की जाए। दुरवेश को इन चार बातों की पाबन्दी लाज़मी है :

(1) अपनी आँखों, कानों को आधा कर ले, ताकि किसी की ऐब दिखाई न दे।

(2) अपने कानों को बहरा कर ले, ताकि जो बात सुनने के क़ाबिल न हो, वह न सुने।

(3) ज़बान को गूँगा कर ले, ताकि नागुफ़्तनी बात ज़बान से न निकले।

(4) पाँवों को लंगाड़ा बना ले, ताकि जो जगह न जाने की हो वहाँ न जा सके।

जिस शख़्स में ये चारों ख़सलतें मौजूद हैं वह दुरवेश है, वरना मुद्दई और काज़िब।

खुदा तआला से ग़फ़लत इनसान की मौत है

दुनिया की दोस्ती तमाम बुराइयों की जड़ है। अहले मारफ़त का क़ौल है : जिसने दुनिया छोड़ी, वह फ़रिश्ता बन गया और जिसने दुनिया से दोस्ती की, वह हलाक हो गया। आदमी जिस क़द्र दुनिया में मशगूल रहता है उतना ही खुदा से दूर रहता है। आदमी जब दुनिया

में फँसेगा, खुदा से ग़ाफ़िल हो जाएगा। खुदा से ग़फ़लत इनसान की मौत है।

क़ल्ब की मौत

जिस वक़्त आदमी का दिल दुनिया की लज़्ज़त, शहवात, माकूलात व मशरूबात में मशगूल होता है। ग़फ़लत उसमें असर कर जाती है और ख़्वाहिश उसपर आ जाती है। सिवाय खुदा के ख़याल के सब तरह के ख़यालात व अफ़कार पैदा होकर दिल को स्याह कर देते हैं।

हुज़ूरी क़ल्ब

असल राहे सुलूक में दिल की हुज़ूरी है। दिल की हुज़ूरी उस वक़्त मयस्सर होती है जब हराम लुक़्मा और दुनियावालों की सोहबत से परहेज़ की जाए।

मुरीद कब करना रवा है

हदीस में है कि मोमिन का क़ल्ब अल्लाह का अर्श है। जो दुरवेश सत्तर हिजाब में हो और उसकी ज़र्रा बराबर रौशनी हासिल न हुई हो अगर वह लोगों को मुरीद करना शुरू कर दे तो खुद भी गुमराह और दूसरों को भी गुमराह करेगा।

दुनियावालों की सोहबत

दुनियावालों की सोहबत फ़क़ीर के दिल को परेशन कर देती है।

रज़ा बिलक़ज़ा

सालिक को चाहिए कि अपने परवदिगार की मर्ज़ी पर क़ायम रहे, जो तक्लीफ़ या मुसीबत पहुँचे उसको ख़याल करे कि ये भी दोस्त की तरफ़ से है।

अल्लाह तआला का ज़िक्र

जब अल्लाह तआला किसी शख़्स को दोस्त बनाना चाहता है तो ज़िक्र का दरवाज़ा खोल देता है और सराए हैरत व दहशत में दाख़िल कर देता है। जो उसका महले अज़मत व जलाल है, फिर वह ख़ुदा तआला की हिफ़ाज़त व हिमायत में रहता है।

हिकमत

जिस दिल में ये चार ख़सलतें होती हैं, उसमें हिक्मत क़रार नहीं पकड़ती :

(1) दुनिया की हिर्स,
(2) ग़मे फ़र्दा, कल क्या होगा,
(3) मुसलमानों के साथ बुग्ज़ व हसद रखना,
(4) हुब्बे जाह व शर्फ़।

अगर दिल में इन चारों बातों में से एक बात भी मौजूद होगी, वह दिल हिक्मत से ख़ाली रहेगा।

दुरवेशी क्या है?

दुरवेशी और ज़ुहूद इन तीन चीज़ों का नाम है, जिसमें ये बातें नहीं वह ज़ाहिद नहीं :

(1) दुनिया को पहचानना और उससे दस्तबरदार रहना।
(2) मौला की ख़िदमत करनी और अदब का निगाह रखना।
(3) आख़िरत की आरज़ू और उसकी तलब।

दुनिया तमाम बुराइयों की कुंजी है

तमाम बुराइयाँ एक घर में जमा हैं और उसकी कुंजी दुनिया है। जो आदमी अक़्लमन्द है उसे इस घर के पास न जाना चाहिए, न इसकी कुंजी को हाथ लगाना चाहिए। सारी बदी और बला दुनिया ही से है।

ईमान की निशानी

अल्लाह का ज़िक्र ज़बान पर जारी रहना ईमान की निशानी है और निफ़ाक़ से बेज़ारी, देव और शैतान से हिसार और आतिशे उन दोनों में खिँचातानी शुरू हो जाती है। अगर दुआ में कुव्वत है तो वह बला को लौटा देती है, वरना बला उतर आती है। जिस वक़्त तातारियों ने नेशापुर पर चढ़ाई की तो वहाँ के बादशाह ने हज़रत शैख़ फ़रीदुद्दीन अत्तार(रह०) की ख़िदमत में आदमी भेजा। दुआ फ़रमाइए कि ये बला दूर हो जाए। आपने फ़रमाया : दुआ का वक़्त निकल गया,अब तो रज़ा का वक़्त है। बला खुदा की तरफ़ से नाज़िल हो गई है, अब उसकी रज़ा पर राज़ी रहना चाहिए।

सालिक की तारीफ़

जब तक सालिक सर से पैर तक बहरे मुहब्बत में ग़र्क़ न हो और कोई साअत ऐसी न हो जिसमें इसके सर पर आलमे मुहब्बत

से बारिश न बरसती हो,वह शख़्स सालिक कहलाने का मुस्तहिक़ नहीं।

मुहब्बत का मेयार

जो शख़ मुहब्बत का दावा करके बला व तक्लीफ़ के वक़्त फ़रियाद करे वह अपने दावा में झूठा है।

दुरवेश की मेराज

दुरवेशी राहत नहीं है, दुनियावी आफ़त में मुबतला होने का नाम है। हद ये है कि दुरवेश को रात फ़ाक़े से बसर करनी पड़ती है। फ़ाक़े में रात बसर करने से दुरवेश को मेराज नसीब होती है।

तारीफ़े करामत

जो बात अक़्ल व समझ से ख़ारिज हो, जहाँ तक अक़्ल की रसाई न हो उसका नाम करामत है।

हिजाबे अकबर

सालिक के लिए कोई हिजाब दुनिया से बढ़कर नहीं। दुनिया हिजाबे अकबर है। दुनिया में मशग़ूल और मुलव्विस रहते हुए खुदा तक रसाई दुश्वार है।

तालीमात व हिदायात

रियाज़ात व मुजाहदात इसलिए किए जाते हैं कि बन्दा को सिफ़ते एहसान हासिल हो जाए। एहसान की तशरीह नबी(सल्ल०) ने इस तरह फ़रमाई है-

"यानी इबादत की हालत में ऐसी कैफ़ियत तारी हो जाए कि यह मालूम होने लगे कि गोया मैं आँखों से खुदा को देख रहा हूँ और खुदा मेरे सामने मौजूद है, और अगर यह बात पैदा न हो तो इतनी बात और इतना एहसास ज़रूर होना चाहिए कि खुदा तो मुझे देख रहा है। इसी चीज़ का नाम इसतिलाहे तसव्वुफ़ में मक़ाम हुज़ूरी है।"

हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) के ज़माने में ये सआदत हुज़ूर की मुहब्बत और हुज़ूर (सल्ल०) की मजलिस में बैठकर हासिल हो जाती थी। ज़माना माबाद में यह सआदत हासिल करने के लिए मुहब्बत व रियाज़त दरकार है। इबादत का असल मक़सद हुज़ूरी मअल्लाह और शक्ल व सूरत में हुज़ूर (सल्ल०) का इत्तिबा है। इस मक़सद के लिए सिलसिला नक़्शबन्दिया में ज़िक्र ख़फ़ी और लिताफ़ते क़ल्ब की बेदारी पर ज़ोर दिया जाता है। क़ादरिया और चिश्तिया सिलसिले में ज़िक्र जली पर क़ल्ब को गुदाज़ और हरारते इश्क़ से मुतास्सिर किया जाता है। सहरवर्दिया में वज़ायफ़ व नवाफ़िल से, शाज़िलिया में दरूद शरीफ़ के विर्द से। बहरहाल माहसल उन चारों तरीक़ों का ये है कि कैफ़ियत हुज़ूरी हासिल हो जाए। जिस वक़्त यह

कैफ़ियत पैदा हो जाएगी और दिल बेदार हो जाएगा तो घड़ी भर को भी ख़ुदा से ग़फ़लत न होगी।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हज़रत कुत्बुल अक़ताब को जो तालीमात का दर्स दिया था और जिनपर पाबन्दी की ताकीद की थी वह यह था कि सुबह को सोकर उठो तो दाएँ करवट से उठो और ये दुआ पढ़ो- الحمد لله الذی نزل الرحمة والبركة

फिर वुज़ू करके दोगाना पढ़ो। इससे फ़ारिग़ होकर मुसल्ले पर रूए क़िबला बैठकर चन्द आयात सूरह बक़रा, सतरह आयात, सूरह अनआम, तीस आयात सूरह यूसुफ़ की पढ़ा करो। फिर सौ मरतबा कलिमा तैयबा पढ़ना चाहिए। फिर 33 आयात सूरह अनआम की।

30 आयात सूरह यूसुफ़ की पढ़ो। फ़ज्र की सुन्नतों में पहली रकअत में फ़ातेहा के बाद अलम नशरह, दूसरी में अलम त-र-कैफ़ा पढ़ो, फिर 100 बार- سبحان الله وبحمده سبحان الله العظيم وبحمده استغفر الله ربي من كل ذنب واتوب اليه

फ़र्ज़ व सुन्नत के दरमियानी वक़्फ़ा में पढ़ो। इसके बाद फ़र्ज़ की नमाज़ पढ़कर रूए क़िबला बैठे रहो और दस मरतबा यह पढ़ो-

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ
الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَّا يَمُوْتُ بِيَدِهِ
الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ-

फिर तीन मरतबा पढ़ो-

اشہد ان لا الٰہ اللہ وحدہٗ لاشریک لہ واشہد ان محمداً عبدہٗ ورسولہٗ۔

फिर तीन मरतबा पढ़ो- اللھم صل علی محمد ما اختلف للوان وتعاقب العصران وتکور الجدیدان واستحب الفرقدان الفران بلغ علی روح محمد منی التحیۃ والسلام۔

फिर तीन मरतबा पढ़ो- یاعزیز یاغفور

फिर तीन मरतबा पढ़ो-

سبحان اللہ والحمد للہ ولا الٰہ الا اللہ واللہ اکبر ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم۔

फिर तीन मरतबा- استغفر اللہ من کل ذنب واتوب الیہ

इसके वाद पढ़ो- سبحان اللہ وبحمدہٖ سبحان اللہ العظیم وبحمدہٖ استغفر اللہ الذی لا الٰہ الا ھو الحی القیوم غفار الذنوب وستار العیوب کشاف الکروب مقلب القلوب واتوب الیہ

फिर तीन मरतबा- یاحی یا قیوم یاحنان یامنان یادیان یاسبحان یاسلطان یاغفران ذوالجلال والاکرام برحمتک یاارحم الراحمین

फिर तीन मरतबा- لاحول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم یاقدیم یادائم یاحی یا قیوم یااحد یاصمد یاعلیم یاعظیم یاعلی یانور یافرد یاوتر یاباقی یاحی یاقیوم اقض حاجتی بحق محمد والہٖ واصحابہٖ اجمعین

इसके वाद खुदा तआला के 99 नाम पढ़ो और फिर 99 नाम पैगम्बर (अलै०) के और वे ये हैं-

مُحَمَّدٌ۔ اَحْمَدُ۔ حَامِدٌ۔ مَحْمُودٌ۔ قَاسِمٌ۔ عَاقِبٌ۔ فَاتِحٌ۔ خَاتِمٌ۔ حَاشِرٌ۔ مَاحٍ
دَاعٍ۔ سِرَاجٌ۔ رَشِيدٌ۔ مُنِيرٌ۔ نَذِيرٌ۔ هَادٍ۔ مَهْدِيٌّ۔ رَسُولٌ۔ نَبِيٌّ۔ طٰهٰ۔ يٰسٓ
مُزَّمِّلٌ۔ مُدَّثِّرٌ۔ شَفِيعٌ۔ خَلِيلٌ۔ كَلِيمٌ۔ حَبِيبٌ۔ مُرْتَضٰى۔ مُجْتَبٰى۔ مُخْتَارٌ
نَاصِرٌ۔ مَنْصُورٌ۔ قَائِمٌ۔ حَافِظٌ۔ شَهِيدٌ۔ عَادِلٌ۔ حَكِيمٌ۔ نُورٌ۔ بُرْهَانٌ
اَبْطَحِيٌّ۔ مُؤْمِنٌ۔ مُطِيعٌ۔ مُذَكِّرٌ۔ وَاعِظٌ۔ اَمِينٌ۔ صَادِقٌ۔ مُصَدِّقٌ۔ نَاطِقٌ
صَاحِبٌ۔ مَدَنِيٌّ۔ عَرَبِيٌّ۔ هَاشِمِيٌّ۔ تِهَامِيٌّ۔ حِجَازِيٌّ۔ نِزَارِيٌّ۔ قُرَشِيٌّ
مُضَرِيٌّ۔ اُمِّيٌّ۔ عَزِيزٌ۔ حَرِيصٌ۔ رَحِيمٌ۔ يَتِيمٌ۔ غَنِيٌّ۔ جَوَادٌ۔ فَتَّاحٌ
عَالِمٌ۔ طَيِّبٌ۔ طَاهِرٌ۔ مُطَهَّرٌ۔ خَطِيبٌ۔ فَصِيحٌ۔ مُتَّقِيٌّ۔ اِمَامٌ۔ بَارٌّ
شَافٍ۔ مُتَوَسِّطٌ۔ سَابِقٌ۔ مُقْتَصِدٌ۔ مَهْدِيٌّ۔ حَقٌّ۔ مُبِينٌ۔ اَوَّلٌ۔ آخِرٌ
بَاطِنٌ۔ رَحْمَةٌ۔ مَكِّيٌّ۔ مُحَرِّمٌ۔ اٰمِرٌ۔ نَاهٍ۔ شَكُورٌ۔ قَرِيبٌ۔ مُنِيبٌ
مُبَلِّغٌ۔ طٰسٓ۔ حٰمٓ۔ حَبِيبٌ۔ اَوْلٰى۔

फिर तीन मरतबा यह दरूद-

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ حَتّٰى لَا يَبْقٰى مِنَ الْبَرَكَاتِ شَيْءٌ

पढ़ें। इसके बाद आयतलकुर्सी और सुरह इख़्लास पढ़ें।

फिर तीन मरतबा-

فان تولوا فقل حسبی الله لا اله الا هو علیه توکلت وهو رب العرش العظیم

फिर तीन मरतबा ربنا ولا تحملنا مالا طاقة لنا به واعف عنا واغفرلنا وارحمنا انت مولانا فانصرنا على القوم الكافرين برحمتك يا ارحم الراحمين.

फिर तीन मरतबा- اللهم اغفرلی ولوالدی ولمن توالد ولجمیع المومنین والمومنات والمسلمین والمسلمات الاحیاء منهم والاموات برحمتک یا ارحم الراحمین

फिर तीन मरतबा- سبحان الاول المبدی سبحان الباقی المعید اللہ الصمد
لم یلد ولم یولد ولم یکن لہ کفواً احد

फिर तीन मरतबा- ان اللہ علی کل شی قدیر قد احاط بکل شی علماً

फिर तीन मरतबा- اتوب توبۃ عبد ظالم ذلیل لا یملک ولنفسہ نفعا
ولا ضرا ولا موتا ولا حیاۃ ولا نشورا

फिर तीन मरतबा- اللھم یا حی یا قیوم باللہ لا الہ الا انت اسئلک
ان تحیی قلبی بنور معرفتک یااللہ۔

फिर तीन मरतबा یا مقلب الاسباب یا مفتح الابواب یا مقلب القلوب والابصار
یا دلیل المتحیرین یا غیاث المستغیثین اغثنی توکلت علیک یارب وفوضت
امری الیک یارب ولا حول ولا قوۃ الا باللہ العلی العظیم ما شاء کان وما
لم یشأ لم یکن ایاک نعبد وایاک نستعین ۝

फिर एक मरतबा- اللھم انی اسئلک یا من یملک حوائج السائلین ویعلم
ضمیر الصامتین فان لک من کل مسئلۃ منک سمعا حاضرا وجوابا عتیدا و
لک من کل صامت علما نافعا فاعطنا مواعیدک الصادقۃ وایادیک الشاملۃ ورحمتک
الواسعۃ ونعمتک السابقۃ انظر الی نظرۃ برحمتک یا ارحم الراحمین

फिर तीन मरतबा- یا حنان یا منان یا دیان یا برھان یا سبحان یا غفران
یا ذاالجلال والاکرام

फिर तीन मरतबा اللھم انی اسئلک باسمائک لا اعظم ان تعطینی ما سئلتک بفضلک
وکرمک یا ارحم الراحمین الحمد للہ الذی فی السماوات عرشہ والحمد للہ
الذی فی القبور قضاہ والحمد للہ الذی فی البر والبحر سبیلہ والحمد

الذی لا ملاذ ولا ملجا الا الیه رب لا تذرنی فردا وانت خیر الرازقین.

फिर तीन मरतबा- اللّٰھم اصلح امۃ محمد اللّٰھم ارحم امۃ محمد

اللّٰھم اغفر امۃ محمد اللّٰھم فرج امۃ محمد ٥

फिर तीन मरतबा- سبحان اللہ ملء المیزان ومنتھی العلم وزنۃ العرش ومبلغ الرضا برحمتک یا ارحم الراحمین ٥

फिर एक मरतबा رضیت باللہ ربا وبالاسلام دینا وبالقرآن اماما وبالکعبۃ قبلۃ وبالمومنین اخوانا ٥

फिर तीन मरतबा بسم اللہ خیر الاسماء بسم اللہ رب الارض والسماء بسم اللہ الذی لا یضر مع اسمہ شیء فی الارض ولا فی السماء وھو السمیع العلیم ٥

फिर तीन मरतबा- اللّٰھم اجرنا من النار

फिर एक मरतबा- لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ

फिर एक मरतबा- اشھد ان الجنۃ حق والنار حق والمیزان حق والصراط حق والسوال حق وکرامۃ الاولیاء حق ومعجزۃ الانبیاء حق فی الدار الدنیا والشفاعۃ حق والساعۃ اٰتیۃ لا ریب فیھا وان اللہ یبعث من فی القبور

इसके बाद हाथ उठाकर दुआ करे-

اللّٰھم زد نورنا وزد عشقنا وزد محبتنا وزد قبولنا برحمتک یا ارحم الراحمین.

इसके बाद सबआते उश्र और सूरह या०सीन० पढ़े। फिर सुरह मुल्क और सुरह जुमुआ पढ़े और जब आफ़ताब एक नेज़ा बलन्द हो जाए तो नमाज़े इश्राक़ पढ़े। नमाज़े इश्राक़ की दस रकअतें

पाँच सलाम से हों।

पहली रकअत में बाद सूरह फ़ातिहा इन्ना अनज़लना एक मरतबा फिर दूसरी रकअत में सूरह इज़ा ज़ुलज़िलत। पहली रकअत में इन्ना आतैना, दूसरी रकअत में सूरह काफ़िरून। तीसरी नीयत में पहली रकअत में सूरह इख़लास पाँच बार, दूसरी रकअत में सूरह नास पाँच बार। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर दस मरतबा दरूद शरीफ़ पढ़ें, फिर तिलावते कुरआन में मशगूल हो जाएँ। जब दोपहर हो जाए और वक़्त चाश्त हो जाए, तो नमाज़ चाश्त की 12 रकअत 6 सलाम से पढ़ें।

चाश्त से फ़ारिग़ होकर 100 मरतबा कलमा तमजिद और 100 मरतबा दरूद शरीफ़ पढ़ें, फिर तिलावते कुरआन शरीफ़ में मशगूल हो जाएँ। जब ज़वाल का वक़्त हो जाए, 4 रकअत नमाज़ इसतिवा पढें, बाद फ़ातिहा हर रकअत में 5–5 मरतबा सुरह इख़लास पढ़ें। इस अमल से ख़्वाजा खिज़्र से मुलाक़ात होती है, फिर कैलूला करें। जुह्र की नमाज़ पढ़कर दस मरतबा दरूद शरीफ़ पढ़कर सूरह नूह पढ़ें और मराक़बा में मशगूल हो जाएँ। अस्र के वक़्त *100* मरतबा लाहौला वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम और *4* रकअत सुन्नत पढ़ें। नमाज़ से फ़ारिग़ होकर सूरह फ़तह एक बार, सुरह मुल्क *5* बार सुरह नबा और सूरह नाज़िआत एक–एक बार पढ़ें।

मग़रिब की सुन्नतें पढ़कर दो रकअत नमाज़ हिफ़ज़ुल ईमान पढ़ें। इस तरह पहली रकअत में बाद सूरह फ़ातिहा सूरह इख़लास *3* बार और दूसरी में सूरह इख़लास *3* बार और सूरह नास एक बार

पढ़ें। नामज़ से फ़रागत के बाद सर सजदह में रख कर या हैयु या क़ैयूम सब्बितनी अललईमान *11* बार पढ़ें। नमाज़ हिफ्ज़ुलईमान के बाद *6* रकअत अव्वाबीन की पढ़ें। तीन सलाम के साथ पहली रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद इज़ा ज़ुलज़िलत, दूसरी रकअत में सूरह फ़ातिहा के बाद अलहाकुमुत्तकासुर, तीसरी रकअत में वलअस्र। बक़िया रकआत में जो सुरतें चाहें पढ़ सकते हैं। इसके बाद ज़िक्रे ख़ुदा में मशगूल हो जाएँ।

जब इशा का वक़्त आ जाए, नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ें- अल्लाहुम्मा अइन्नी अला ज़िकरिक व शुकरिक व हुस्ना इबादतिका फिर चार रकअत नमाज़ ख़्वाब पढ़ें। पहली रकअत में आयतलकुर्सी तीन बार, दूसरी में इख़लास एक बार, तीसरी में सूरह फलक़ एक बार, चौथी में सूरह नास एक बार। उसके बाद सलाते सआदत *4* रकअत अदा करें। चारों रकअत में बाद सूरह फ़ातिहा सूरह क़द्र *3* मरतबा और सूरह इख़लास *15* मरतबा पढ़ें।

फिर सजदा में सर रख कर ये दुआ पढ़ें। या हय्यु या क़य्यूम सब्बितनी अलल ईमान। फिर दोज़ानू बैठकर यह दुआ पढ़ें-

اللّٰھم انی اسئلک برکۃ فی العمر وصحۃ فی البدن وراحۃ فی المعیشۃ وسعۃ
وزیادۃ فی العلم وثبتنا علی الایمان

फिर रात के तीन हिस्से करें। रात के एक हिस्से में नफ़्ल पढ़ें। दुसरे हिस्से में सो जाएँ। तीसरे हिस्से में तहज्जुद अदा करें।

नमाज़े तहज्जुद की *8* रकअत में जितना कुरआन याद हो

सूरह फ़ातिहा के बाद पढ़ें, फिर थोड़ी देर सो रहें। इसके बाद सुब्ह सादिक़ के वक़्त उठकर खुदा की याद में मशगूल हो जाएँ।

नमाज़

इक़रारे तौहीदो रिसालत के बाद नमाज़ ही एक ऐसी इबादत है जो अव्वल से आख़िर तक ख़ुदा के रास्ते पर पहुंचा देती है। सही तरीक़ा से नमाज़ आदा करने से ख़ुदा तआला की क़ुरबत हुज़ूरी और मेराज हासिल होती है। दूसरी इबादतों के मुक़ाबले में नमाज़ सबसे ज़्यादा आला और ख़ुदा के नज़दीक सबसे ज़्यादा पसन्दीदा इबादत है। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फ़रमाया है कि नमाज़ में बन्दा मंज़िलगाहे इज़्ज़त के क़रीब होता है, क्योंकि नमाज़ मोमिन की मेराज है। नमाज़ एक राज़ है जो बन्दा अपने ख़ुदा से अर्ज़ करता है। क़ियामत के दिन अंबिया और औलिया और मुसलमानों से नमाज़ का हिसाब होगा। पस जो नमाज़ से उहदा बरआ होगा ख़ुलासी पाएगा वरना आज़ाबे दोज़ख़ में मुब्तला होगा। नमाज़ दीन का रुक्न है और रुक्न सुतून होता है। सुतून क़ायम रहेगा तो मकान भी क़ायम रहेगा। सुतून हटेगा, तो छत गिर पड़ेगी। इस्लाम और दीन के लिए बमंज़िला सुतून है। अगर नमाज़ के फराइज़, सुन्नत, रुकू और सुजूद में ख़लल और कमी रह गई तो इस्लाम की हक़ीकत और दीन की जुज़ियात में कमी रह जाएगी। (मोईनुल अरवाह)

हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) ने फ़रमाया है कि नमाज़ के लिए खड़े हुए तो जब तक नमाज़ ख़त्म न हो जाए, ख़ुदा की तरफ़ मोतवज्जोह रहो, इधर-उधर न देखो, क्योंकि तुम हालते नमाज़ में अपने ख़ुदा से बातें करते हो। (अलहदीस) याद रखो कि जब बन्दा हालते नमाज़ में इधर-उधर देखता है। तो ख़ुदा तआला फ़रमाता है, किधर देखता है । क्या कोई चीज़ मुझसे भी बढ़कर है। तीसरी मरतबा देखता है तो ख़ुदा तआला मुँह फेर लेता है (अलहदीस)।

हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने इरशाद फ़रमाया है कि अल्लाह तआला की तरफ़ से रोज़ाना एक फ़रिश्ता पुकारकर कहता है कि जो शख़्स खुदा का फ़रीज़ा अदा नहीं करता वह खुदा की बख़शिश से दूर हो जाता है। दूसरा फ़रिश्ता कहता है कि जो रसूल की सुन्नत तर्क करता है वह आपकी शिफ़ाअत से महरूम होता है। (मोईनुल अरवाह) हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने फ़रमाया है कि "क़ियामत के दिन पचास चीज़ों का हिसाब होगा। सबसे ज़्यादा और सख़्त बाज़ पुर्स नमाज़ की होगी। पहले फ़र्ज़ नमाज़ की। उसके बाद सुन्नत की। अगर सुन्नत अदा न की तो सरकारे दो आलम के सामने पेशी होगी कि ये आपका उम्मती है जिसने आपकी सुन्नत तर्क की।" (मोईनुल अरवाह)

नमाज़ की शर्तें

नमाज़ की शर्तों में से एक शर्त ज़ाहिरी नापाकी से तहारत है। इबादत का असल मक़सद चूँकि दिल की तहारत और उसकी इस्लाह है, इसलिए नमाज़ के लिए सिर्फ़ तहारत ज़ाहिरी ही काफ़ी नहीं, तहारत बातनी भी अशद ज़रूरी है। अगर इन्सान का जिस्म साफ़ हो, मगर रूह साफ़ न हो तो इबादत में कभी लुत्फ़ नहीं आ सकता और रूह साफ़-सुथरी होगी तो जिस्म भी लाज़मी तौर पर साफ़-सुथरा होगा। इसलिए इस्लाम में ज़ाहिरी व बातनी दोनों क़िस्म की तहारतें मतलूब हैं। ज़ाहिरी नापाकी से एहतियात के साथ बातनी ख़्वाहिशात से तहारत भी लाज़मी है। जिस कपड़े को पहनकर नामज़ पढ़ी जाए, वह नजासत से पाक होना चाहिए। बातिन की पाकी यह है कि वह कपड़ा हलाल की कमाई से बनाया गया हो। जिस जगह नमाज़ पढ़ी जाए, वह जगह पाक हो। बातिन की पाकी यह है कि वह

ज़मीन गुनाह और फ़साद से पाक हो।

नमाज़ में रुख़ जानिबे क़िब्ला होना चाहिए। बातिनी तौर पर दिल अग़यार से ख़ाली हो और दिल में सिवाए ख़ुदा के और कोई न हो। एलाने तकबीर (तहरीमा) मक़ामे हैबत है और क़याम मक़ामे वस्ल है। क़राअत अज़मत से लबरेज़ होनी चाहिए। रुकूअ-सजदा में दिल की आजिज़ी और कुरतनी शामिल है। किसी शख़्स ने हातिम असम से सवाल किया कि आप नमाज़ किस तरह पढ़ा करते हैं, उन्होंने जवाब दिया-

"जब नमाज़ का वक़्त आता है ज़ाहिरी और बातनी वुज़ू करता हूँ, ज़ाहिरी वुज़ू पाक व साफ़ पानी से और बातनी वुज़ू तौबा और इनाबत से। फिर सज्दा में जाता हूँ और दीदा बातनी से मस्जिदे हराम को देखता हूँ, दोनों अबरुओं के दरमियान मक़ाम इबराहीम पर नज़र करता हूँ। दायें जानिब बहिश्त और बायें जानिब दोज़ख देखता हूँ। पांव के नीचे पुलसरात का तसव्वुर करता हूँ और यह महसूस करता हूँ कि पुश्त पर मलकुलमौत सवार हैं। इसके बाद तकबीर कहता हूँ तो मक़ाम अज़मत तारी हो जाता है, क़याम करता हूँ तो हुरमत का जज़बा पैदा हो जाता है। क़रार के वक़्त हैबत तारी हो जाती है। रुकूअ करते हुए तवाज़ो का इज़हार करता हूँ सज्दे में इन्कसारी व तज़रों का, फिर हुक्म व वकार से क़ादे में बैठ जाता हूँ और शुक्र के साथ सलाम अदा करता हूँ।"

ग़र्ज़ यह है कि जब तक बदन, लिबास और जायेनमाज़ पाक न होगी, नमाज़ न होगी। उसी तरह जब तक दिल पाक न होगा इरफ़ान हासिल न होगा। ज़ाहिरी जिस्म साफ़ व पाक पानी से पाक होता है। दिल की पाकी तौहीद के पानी से होती है जिसमें शिर्क ज़ाती या सफ़ाती की आमेजिश न हो। उस हक़ीक़त को हक़ तआला

सुबहानहू ने इस आयत में बयान फरमाया है-

ان الله يحب التوابين ويحب المتطهرين

"अल्लाह पाक लोगों और तौबा करनेवालों को दोस्त रखता है।" इस किताब में इतनी गुंजाइश नहीं कि इस मौजू पर पूरी तरह रौशनी डाली जा सके। तफ़सिलात के लिए मुलाहिज़ा हो, हकीक़ते नमाज़, मतबूआ आस्ताना बुक डिपो, दिल्ली।

नमाज़ हुजूरी पढ़ने का तरीक़ा

जिस वक़्त अज़ान की आवाज़ कान में आए फ़ौरन अल्लाह जल्ले शानहू कहकर अदब से उसकी तरफ़ मुतव्वजोह हो जाए और दिल में यह ख़याल उस्तवार करे कि यह अल्लाह तआला के दरबार में हाज़िरी और इज़हार अबदीयत का एलान है। फिर जब मोअज़्ज़िन अल्लाहु अकबर और अशहदो अल्ला ईलाहा इल्लल्लाह कहे तो खुदा तआला की अज़मत व जलालत और उलूहियत का तसव्वुर करते हुए इन्हीं कलेमात को दिल और ज़बान से कहें। इसके बाद जब मोअज़्जिन अशहदोअन्ना मुहम्मदर्रसूलुल्लाह कहे तो हुजूर सरवरे आलम (सल्ल०) की रिसालत के यक़ीन को ताज़ा और रिसालत की अज़मत को पेशनज़र रखते हुए खुद भी ये कलिमात अपनी ज़बान से अदा करें।

और हैया अलस्सलाह और हैया अलल फ़लाह के कलिमात सुनकर दिल में ख़याल करें कि ये मोअज़्जिन हुजूर (सल्ल०) की तरफ़ से और हुजूर (सल्ल०) की तालीम से ही हमें नमाज़ में शिरकत की दावत दे रहा है और अपनी तरफ़ उन कलिमाते दावत का जवाब लाहौल वला कुव्व-त इल्लाबिल्लाह से दें, क्योंकि खुदा की तौफ़ीक़ और इनायत के बग़ैर हुसूल सआदत दुशवार है। आख़िर में अल्लाहु

अकबर लाईलाहा इल्लल्लाहु सुनकर हक़ तआला की शान रबूबितय व उलुहियत का इक़रार ताज़ा करते हुए ये ख़याल करें कि ऐसे साहब अज़मत व जलाल के दरबार में हाज़िरी इन्सान की सआदत है और उससे अज़मत व कोताही इन्तिहाई शक़ावत है।

इसके बाद खुदाए क़ह्हार व जब्बार की अज़मत व जलाल का तसव्वुर पेशनज़र रखकर निहायत इज्ज़ो मस्कनत और अदब व ताज़ीम के साथ उसकी रहमत लामुतनाही की उम्मीद रखते हुए मस्जिद की तरफ़ रवाना हो जाएँ और मस्जिद के दरवाज़े पर पहुंचकर ये तसव्वुर रखें कि ये खुदा का घर और उसका दरबार है। इस मक़ाम का अदब निहायत ज़रूरी है। फिर दाहिना पांव अन्दर रखकर ये दुआ पढ़ते दाख़िल हों-

رب اغفرلی ذنوبی وافتح لی ابواب رحمتک

"ऐ अल्लाह, मेरे गुनाह बख़्श दे और अपनी रहमत के दरवाज़े मेरे लिए खोल दे।" इसके बाद मुनाजात और अर्ज़ हाल का दिल में ख़याल करके ख़ालिके कौनैन व मकां के दरबार में अदब, ताज़ीम और नीयत ख़ालिस के साथ क़िब्ला की तरफ़ मुँह करके खड़े हो जाएँ। तमाम ख़यालात दिल से निकाल दें और दिल का रुख़ यकसूई के साथ खुदा की तरफ़ फेरकर ये दुआ पढ़ें-

انی وجهت وجهی للذی فطر السماوات والارض حنیفا وما انا من المشرکین. ان صلاتی ونسکی ومحیای ومماتی لله رب العالمین لا شریک له وبذلک امرت وانا من المسلمین

इसके बाद खुदा की अज़मत व किबरियाई और अपनी आजिज़ी व बेचारगी और तमाम मासिवाये अल्लाह से बेताल्लुक़

होकर निहायत खुशूअ् व खुज़ूअ् से तकबीरे तहरीमा अल्लाहु अकबर कहें और दोनों हाथ कानों तक उठाकर बाँध लें और इस तसव्वुर से कि हक़ तआला अपनी शाने करीमाना से मेरी तरफ़ मुतवज्जोह है और सुन रहा है, सुबहानका अल्लाहुम्मा पढ़ें। इसकेबाद शैतान के शर से बचने के लिए खुदा से पनाह माँगें और अऊज़ुबिल्लाह पढ़कर सुरह फ़ातिहा एक-एक आयत तरतीब के साथ ठहर-ठहरकर और समझकर निहायत अदब व ताज़ीम से और खुशूअ् व खुज़ूअ् के साथ पढ़ें। इसलिए कि सुरह फ़ातिहा ही खुदा तआला के हुज़ूर में बन्दे की अर्ज़दाश्त है। इस्तेहज़ारे क़ल्ब का पूरा-पूरा ख़याल रखें। सुरह फ़ातिहा के बाद जो सूरत चाहें पढ़ें और ख़याल करें कि मेरी दुआ का यही जवाब है। क़राअत ख़त्म करने के बाद शुक्र के जज़्बात के साथ खुदा की अज़मत और अपनी आजिज़ी व बेचारगी का तसव्वुर करके निहायत खूशूअ् व खुज़ूअ् के साथ रुकूअ् करें। बारगाहे इलाही में सर ख़म कर दें और तसबीह पढ़ें। तसबीह पढ़कर समिअल्लाहुलेमन हमिदा कहते हुए सीधे खड़े हो जाएँ और ये ख़याल करें कि ये कलिमात खुदा तआला की तरफ़ से बतौर जवाब मेरी ज़बान से कहलवाया गया है।

इसके बाद हक़ तआला की बन्दानवाज़ी और क़द्र अफ़ज़ाई के जज़्बे से सरशार होकर अल्लाहु अकबर कहकर अल्लाह के हुज़ूर में सर रख दें और खुदाए बरतर की तस्बीह करें। फिर इस सज्दह और इबादत को खुदा की शान के शायान न समझते हुए नदामत और इतिराफ़े क़ुसूर के साथ अल्लाहु अकबर कहकर सज्दह से सर उठाएँ, फिर अल्लाहु अकबर कहकर इस जज़्बा और तअस्सुर के साथ दोबारह सज्दह में गिर जाएँ, फिर ये ख़्याल करते हुए खुदा

तआला की अज़्मत व जलालत के आगे मेरे हक़ीर सज्दे की क्या हक़ीक़त है। अल्लाहु अकबर कहकर खड़े हो जाएँ और दूसरी रकअत मिस्ल पहली रकअत के अदा करें। जब दो रकअत पुरी हो जाएँ तो अत्तहिय्यात पढ़ने के लिए निहायत अदब से दो ज़ानू बैठ जाएँ और कमाल यकसूई के साथ अत्तहिय्यात पढ़ें और क़ाइदा अख़ीरा में ये ख़याल कर के कि दरबारे ख़ुदावन्दी तक रिसाई हुज़ूर (सल्ल०) के तवस्सुत से ही होती है, दरूद शरीफ़ की शक्ल में आपके एहसान का इतिराफ़ करें। दरूद शरीफ़ पढ़ने पर नमाज़ ख़त्म हो जाएगी, मगर इस नमाज़ को नाक़िस और क़ाबिले एतिबार समझते हुए यह दुआ पढ़ें-

اللھم انی ظلمت نفسی ظلما کثیرا وانہ لا یغفر الذنوب الا انت فاغفرلی مغفرۃ من عندک وارحمنی انک انت الغفور الرحیم

इसके बाद सलाम फेरें और दोनों जानिब के फ़रिश्तों और मुक़्तदियों की नीयत करें। सलाम फेरने के बाद यह ख़याल करते हुए कि मेरी इस नमाज़ में नमालूम कितनी कोताहियाँ हुई होंगी, निहायत शर्म व नदामत से तीन बार अस्तग़फ़िरुल्लाह पढ़ें।

रोज़ा

रोज़ा इस्लाम की एक अहम इबादत है। बन्दा और मौला के दरमियान एक राज़ है। भूखा रहना अल्लाह की सिफ़तों में से मिलती हुई एक सिफ़त है। रोज़े की अहमियत का अन्दाज़ा इस हदीसे क़ुदसी से किया जा सकता है, "रोज़ा मेरे लिए है और मैं ही उसकी जज़ा दूँगा।" मासिवा रोज़े के दिगर इबादात का अज्रो सवाब मिन जानिब मुक़र्रर है, लेकिन हक़ तआला ने रोज़ा को अपने लिए मख़सूस फ़रमाकर उसके अज्रो सवाब की कोई तजदीद नहीं फ़रमाई। यही

वजह है कि तालीमे सुलूक में रोज़े पर ज़ोर दिया गया है, सिवाए अय्यामे ममनूअ् के औलियाए किराम हमेशा रोज़े रखा करते हैं।

रोज़ा से नफ़्स को ख़ुशुअ् और क़ल्ब को ख़ुज़ूअ् हासिल होता है। यही वजह है कि ख़ुदा तआला को भूखे का पेट सत्तर ग़ाफ़िल इबादत गुज़ारों से महबूब है। हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) का हुक्म है- अपने पेट को ख़ाली (भूखा) रखा करो। यह भी इरशाद है-

بطن جائع احب الی اللہ تعالے

من سبعین عابد غافل (الحدیث)

"भूखा पेट ख़ुदा के नज़दीक सत्तर ग़ाफ़िल इबादत गुज़ारों से ज़्याद महबूब है।"

भूख से अगरचे जिस्मे इन्सानी बेरौनक़ और लाग़र हो जाता है मगर दिल की आराइश बढ़ जाती है। इसका मतलब ये हरगिज़ नहीं कि आदमी खाना-पीना छोड़कर बग़र्ज़ हिलाकत में पड़ जाए बल्कि ग़र्ज़ ये है कि कम खाए और खाए तो इस नीयत से खाए कि ख़ुदा की इबादत की ताक़त बहाल रहे। "शैतान कहता है कि जो आदमी पेटभर कर नमाज़ के लिए खड़ा होता है, मैं उससे गले मिलता हूँ और जब वह नमाज़ पढ़कर निकलता है, तो उसपर छा जाता हूँ और जब भूखा आदमी नमाज़ में मशगूल होता है तो मैं उससे दूर भागता हूँ। पेट भरके खाने से चूँकि तबियत में सुस्ती आ जाती है इसलिए ख़ुशूअ् ख़ुज़ूअ् में जो नमाज़ की रूह है कमी आ जाती है। बहरहाल मुसलमान का नज़रियाए हयात यह है कि खाना बक़ाए हयात के लिए है न कि बराए तआम ख़ूरदन बराए ज़ीस्तन ज़िक्र करदन अस्त। हुज़ूर (सल्ल०) ने इरशाद फ़रमाया है-

ازا صمت فلیصم سمعک وبصرک
ولسانک ویدک و کل عضو منک

"जब रोज़ा रखा जाए तो आँख भी रोज़े से हों, कान भी रोज़े से हों, हाथ भी रोज़े से हों, ज़बान भी रोज़े से हों और जिस्म के तमाम अज़ा रोज़े से हों।"

इस हदीस की रौशनी में अगर किसी शख़्स ने ग़ैर महरम औरत पर नज़र डाली तो उसका रोज़ा नहीं। ग़ैर मश्रूअ आवाज़ सुनी, किसी की ग़ीबत की या गाली दी, किसी हसीन व जमील औरत इत्र में बसी हुई जा रही थी उस की ख़ुश्बू को सूँघा, किसी ग़ैर महरम को हाथ लगाया, दिल में बुरा ख़याल आया। तालीमे सुलूक में रोज़ा पर इसी लिए ज़ोर दिया गया कि रोज़ा रखने से इन्सान उन तमाम बुराइयों और गुनाहों से महफ़ूज़ रहता है जिनका तअल्लुक़ अज़ाए जिस्मानी से है। ऐसा रोज़ा रखने से ही रोज़ादार को ख़ुदा के यहाँ वह नेमतें मिलेंगी जिनको किसी ने देखा है और न सुना है, न उसका ख़याल किसी के दिल में गुज़रा है, बशर्ते कि वह इन तमाम ममनुआत से बाज़ रहे वरना हुज़ूर (सल्ल०) का फ़रमान है-

"बहुत-से ऐसे रोज़ादार हैं जिनको रोज़ा से ज़रा-सा भी फ़ायदा नहीं पहुँचता, हाँ दिन भर भूखे-प्यासे रहते हैं।"

हज

हज भी इस्लाम के अरकान में से एक रुक्न है। एक आशिक़ाना इबादत है। इस इबादत का हक़ीक़ी लुत्फ़ उसी वक़्त मिलता है जब बन्दा हक़ सुब्हानहू जल्ल मजदहू का सच्चा आशिक़

हो वरना उसकी मिसाल ऐसी है-

मक्का गए, मदीना गए, करबला गए
जैसे गए वैसे ही चल फिर कर वापस आ गए

एक शख़्स ने हज़रत जुनैद बग़दादी से ज़िक्र किया कि मैं हज को गया था। हज़रत जुनैद बग़दादी ने पूछा तूने हज किया था? जी हाँ ! क्या तूने घर से चलते वक़्त तमाम ज़ाहिरी व बातिनी गुनाहों से तौबा की थी ? क्या तूने जिस मंज़िल में क़याम किया था उस मन्ज़िल का रास्ता हक़ के लिए तलाश किया था? क्या तूने इहराम बाँधा तो जिस तरह लिबास व आदत से किनाराकशी की, सिफ़ाते बशरिया से भी इलाहदगी इख़तियार की? क्या तू जब अरफ़ात पहुँचा तुझे मुशाहदए हक़ हासिल हुआ? क्या तूने काबा का तवाफ़ किया? मक़ामे तनज़ीह का तवाफ़ करते हुए खुदा तआला का कमाल देखा? क्या जब तू मिना में आया तो तेरी तमन्नाएँ और आरज़ूएँ तुझसे दूर हो गईं? क्या जब तूने रमी जमार किया तो अपनी नफ़सानी ख़्वाहिशों को भी निकाल फेंका? उस शख़्स ने सब बातों का जवाब नफ़ी में दिया। हज़रत जुनैद बग़दादी ने फ़रमाया- जा, इन सिफ़ात के साथ हज कर, तूने कुछ न किया।

ज़कात

ज़कात भी मिस्ल रोज़ा, नमाज़ के इस्लाम का रुक्न और अहम तरीन फ़र्ज़ है। ज़कात की पूरी तफ़्सील तो शरीअत की किताबों में मज़कूर है कि अगर किसी शख़्स के पास *200* रुपये हों और पूरे सालभर क़ब्ज़ा में रहे हों, तो पूरा साल होने के बाद पाँच रुपये ज़कात के फ़ुक़रा या दूसरे मुस्तहिक़्क़ीन को दे दिए जाएँ। तरीक़त की ज़कात यह है कि दो सौ रुपये में सिर्फ़ पाँच रुपये अपने

ख़र्च के लिए रखे, बाक़ी एक सौ पंचावे रुपये राहे ख़ुदा में दे दे। हक़ीक़त की ज़कात यह है कि जो कुछ हो राहे ख़ुदा में सर्फ़ कर दे, अपने पास एक पैसा न रखे इसलिए कि दुरवेशी ख़ुदफ़रोशी का नाम है। जब दुरवेश ने अपने आप को ख़ुदा के हाथ फ़रोख़्त कर दिया तो वह ख़ुदा का ग़ुलाम बन गया। ग़ुलाम किसी चीज़ का मालिक होता नहीं। आक़ा ही मालिक होता है इसलिए दुरवेश को रुपया अपने पास रखने की इजाज़त नहीं।

हरचे दारी सर्फ़ कुन दर राहे ऊ
लन तनालुल बिर्र हत्ता तुन्फ़िक़ू

तक़वा और तज़कियए नफ़्स

तक़्वा के मानी अगरचे डरने के हैं लेकिन शरई इसतिलाह में इसका मफ़हूम वसीअ् है। इजमाली तौर पर कहा जा सकता है कि तक़्वा के माना ख़ुदा से डरने और मनहीयाते शरइया से बचना है। बाज़ उलमाए ज़ाहिर ने अगरचे तक़्वा के मफ़हूम को शिर्क से बचने और ख़ुदाए वाहिद पर ईमान लाने तक महदूद रखा है लेकिन अरबाबे तरीक़त की नज़र में तक़्वा के मफ़हूम में बहुत वुस्अत है। इसके मुख़तलिफ़ मरातिब और दरजात हैं। हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी के नज़दीक तक़्वा की इबतिदाई मंज़िल यह है कि ममनूआते शरई से परहेज़ किया जाए और इन्तिहाई मंज़िल यह है कि उन उमूर से भी इजतिनाब किया जाए जिनकी इजाज़त शरीअत ने दी है। हदीसे क़ुदसी में फ़रमाया गया है कि मुसलमान उस वक़्त तक मुत्तक़ी नहीं हो सकता जब तक कि वह लायानी चीज़ों से परहेज़ न करे।

तक़्वा सिर्फ़ इसी बात का नाम नहीं कि इसका दाइरा सिर्फ़ ममनुआत से परहेज़ तक महदूद है बल्कि इसका तअल्लुक़ अंवामिर

से भी है। अगर शरीअत ने किसी काम की सरीह इजाज़त दी है, बख़याल तक़्वा उस काम को छोड़ देना तक़्वा की तारीफ़ से ख़ारिज है। मसलन हालते सफ़र में ख़ुदा की तरफ़ से मुसाफ़िर को नमाज़े क़सर पढ़ने की इजाज़त है लेकिन अगर कोई शख़्स ब नीयत हुसूले सवाब क़सर नमाज़ न पढ़े तो उसका यह फ़ेल तक़्वा से ख़ारिज है। बाज़ मुफ़स्सेरीन ने तक़्वा के तीन मदारिज बयान किए हैं-

पहला दर्जा -- इन्सान कुफ़्र व शिर्क से बचे और ख़ुदा पर ईमान लाए। दूसरा दर्जा -- तमाम छोटे-बड़े गुनाहों से परहेज़ करे। तीसरा दरजा -- उस चीज़ से भी बचे जो माबूदे हक़ीक़ी की याद से ग़ाफ़िल और बेपरवाह बना दे। यही असल तक़्वा है । क़ुरआन शरीफ़ चूँकि तीनों तरह के परहेज़गारों के लिए नुस्ख़ए हिदायत है इसलिए अवाम के लिए इसका हुक्म है कि (1) वह कुफ़्र व शिर्क से बचें (2) ख़्वास ईमान के साथ अवामिर नवाही के पाबन्द रहें। (3) ख़ासुलख़ास कि वह ईमान अवामिर व नवाही की पाबन्दी के साथ अपने नफ़स को इस दरजे मज़गी कर लें कि उन्हें शायद हक़ीक़ी का जलवा और दिदार हासिल हो। सुलूक और तरीक़त में रियाज़त व मुजाहिदात का मंशा तज़कियए नफ़्स और हुसूले तक़्वा है।

ज़िक्र इलाही

अल्लाह तआला से बन्दा का ताल्लुक़ सिर्फ़ अबदीयत माबूदियत का ही नहीं, बल्कि इश्क़ व मुहब्बत का भी है। अल्लाह महबूबे हक़ीक़ी है और बन्दा उसका आशिक़। मुहब्बत के असबाब पर अगर नज़र डाली जाए तो हस्ब ज़ेल चीज़ें बाइसे मुहब्बत नज़र आती हैं-

(1) इन्सान किसी से उसके हुस्न व जमाल के बाइस

मुहब्बत करता है।

(2) इन्सान किसी से उसके ज़ाती कमालात की वजह से मुहब्बत करता है।

(3) इन्सान किसी से उसकी दौलत या ताक़त की वजह से मुहब्बत करता है।

खुदा तआला में ये तीनों (ये तीनों ही क्या और भी जितने असबाबे मुहब्बत हैं) सिफ़ात मौजूद हैं -

(1) खुदा तआला से बढ़कर दुनिया व आख़िरत में कोई हसीन नहीं। हसीना जहाँ में उसी का हुस्न का तो परतू है जिस पर आशिक़ अपना जान व माल निसार कर देता है। इसलिए चश्मे बीना रखनवाले के लिए महबूबे हक़ीक़ी हक़ सुबहानहू की ज़ातवाला है।

(2) हक़ तआला से बढ़कर दुनिया व आख़िरत में कोई भी बाकमाल नहीं। इन्सान अगर उसके सनअती कमालाल पर ग़ौर करे, बड़े से बड़े माहिर कारीगर को उसकी कुदरत व सनअत के आगे सर ख़म करने के सिवा चारा नज़र न आएगा।

(3) दुनिया में इन्सान दौलत या ताक़त के नशे से मदहोश होकर ना मालूम क्या-क्या कर गुज़रता है। हद यह है कि खुदा की हमसरी का दावा कर बैठते हैं। हालाँकि इन्सान की खुदा के मुक़ाबले में कोई हक़ीक़त नहीं। चे निस्बत ख़ाक रा बा आलमे पाक। इन्सान न अपनी मौत व ज़िंदगी पर क़ादिर है, ना किसी मादूम चीज़ को हस्ती अता करने की ताक़त रखता है। इन्सान जिस ताक़त या दौलत पर घमण्ड करता है वह ताक़त या दौलत भी तो उसी की बख़शिश है। अगर खुदा किसी से अपनी दी हुई नेमत ले ले तो सारी दुनिया जमा होकर भी मसलूब को नेमत मसलूबा वापिस नहीं कर सकती।

बहरहाल खुदा ही मतलूब व मतलूबे हक़ीकी है। दुनियाए मुहबबत का क़ानून है। मन अहब्ब शैअन अकसरा ज़िकरहु (आदमी को जिस चीज़ से मुहब्बत होती है वह अक्सर उसी का ज़िक्र किया करता है। दुनियाए मुहब्बत के इस क़ानून के तहत खुदा से मुहब्बत का दावा उसी वक़्त सही और क़ाबिल तसलीम होगा जब उसी का ज़िक्र ज़बान पर, उसी का तसव्वुर दिल में हो, पस वही वह हो। उसी से ये बात भी मफ़हूम होती है कि इन्सान की तख़लीक़ का मक़सद खुदा तआला से इश्क़ व मुहब्बत है, इन्सान इन्सान होते हुए अगर महबूबे हक़ीक़ी को छोड़कर माशूक़े मजाज़ी को इख़्तियार करता है तो वह इन्सान इन्सान नहीं होते एक दरजा का जानवर है। नहीं-नहीं जानवर भी खुदा के मुहिब्बे सादिक़ हैं। तुलूअ् सुबह सादिक़ और गुरूब के वक़्त चिड़ियों का चहचहाना कुमरी की हक़ सिर्रहू की सदा इज़हारे इश्क़ नहीं तो और क्या है।

तिलावते कुरआन

अल्लाह तआला के ज़िक्र में सबसे बुलन्द मरतबा तिलावते कुरआन का है इसलिए ज़ाकिर जब तक ज़िक्र में मशगूल रहता है कैफ़ियात में गोनागोई रहती है लेकिन ज़िक्र करते ही वह कैफ़ियत अला हालेही क़ाइम नहीं रहती। कुरआन की तिलावत चूंकि अनवारे रिसालत से वाबिस्ता है इसलिए उसे दवाम हासिल है। हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने अवाइले उम्र में समरक़न्द और बुख़ारा में जाकर सबसे पहले कुरआन की तालिम हासिल की और हज़रत ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ का हमेशा का मामूल रहा कि वह दिन-रात में दो कुरआन शरीफ़ ख़त्म फ़रमाते थे।

अफ़कार व अशग़ाल

तुलू सुबह सादिक़ से पहले या मग़रिब व ईशा के दरमियान ख़िलवत में चार ज़ानू बैठकर दाहिने पैर के अंगूठे से बाएँ पैर की रगे क़िमास को मज़बूती से पकड़कर दोनों हाथ अपनी-अपनी दोनों रानों पर रखकर खोल दें और लाईलाहा को पहलूए चप मक़ामे दिल से शुरू करें यानी ख़म होकर सर बजानिबे चप व ज़ानुए रास्त से गुज़ार कर दाहिने मुंढे तक ले जाएँ और वहाँ से पुश्त की जानिब क़दरे ख़म देकर मक़ामे दिल पर आँखें बन्द करके लाइलाहा इल्लल्लाह की ज़र्ब लागाएँ। लाइलाहा कहते वक़्त आँखें खुली रहें और इल्लल्लाह कहते वक़्त बन्द कर लें। लाइलाहा कहते वक़्त मासिवा अल्लाह की नफ़ी करें, खुदा की ज़ात पाक के सिवा और कोई चीज़ मौजूद नहीं और इल्लल्लाह कहते हुए उसका तसव्वुर करें कि बस सिर्फ़ एक ज़ात पाक हक़ सुबहानहू की है। दस मरतबा ज़र्ब लगाने के बाद एक मरतबा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह कहना चाहिए।

ज़िक्र इस्मे ज़ात

इस्मे ज़ात के ज़िक्र के तीन तरीक़े हैं:-

(1) हब्स दम भर करके आँखें खुली छोड़कर इस क़द्र अल्लाह-अल्लाह कहें कि ज़बान लड़खड़ा जाए, आँखों तले अँधेरा छा जाए।

(2) दूसरा तरीक़ा पासे इनफ़ाक़ है। जिस वक़्त पेट से साँस बाहर आए लाइलाहा और जिस वक़्त साँस पेट में जाए इल्लल्लाह ज़बाने क़ल्ब से कहें।

(3) तरीक़ा यह है कि जो हज़रत ग़ौसे आज़म का मामूल

है उसका तरीक़ा ये है कि चार ज़ानू बैठकर गरदन को शिकम तक ख़म करके दाहिने मोंढे पर ले जाकर हाथ बाएँ मोंढे पर हो और आगे की तरफ़ सरनगूँ कर के ही ज़र्ब लगाएँ।

अज़्कार नफ़ी व इसबात

चार ज़ानू हस्ब तरीक़ा मुक़र्रर बैठकर 'ला' को दोनों ज़ानू दरमियान से खिँचकर बाएँ ज़ानू पर लाएँ और इलाह को दाहिने मोंढे पर ज़र्ब देते हुए बाएँ मोंढे पर 'हा' की ज़र्ब को पूरा करें। इसके बाद लाईलाहा की ज़र्ब दिल पर लगाएँ।

ज़िक्र पंज ज़र्बी

बाएँ पहलू से लाइलाहा शुरू करके दाहिने मोंढे पर ख़त्म करें। फिर सर जानिबे पुश्त ले जाकर बाएँ मोंढे पर उसी तरीक़े से ज़र्ब लगाएँ फिर सर को निस्फ़ पुश्त की बराबर ख़म कर के एक ज़र्ब लगाएँ , फिर दोनों कंधों को कानों के बराबर उठाकर एक ज़र्ब लगाएँ, फिर दोनों ज़ानू होकर और दोनों सुरीन ज़मीन से किसी क़द्र उठाकर पाँचवीं ज़र्ब लगाएँ और उसी तरह सिलसिले जारी रखें और ज़िक्र में हब्स दम ज़रूरी है।

(नोट) ज़िक्र नफ़ी व इसबात में मुबतदी के वास्ते तलक़ीन अशद ज़रूरी है। जिस तरह पीरो मुर्शिद बताएँ, उसी पर अमल करें। ज़िक्र नफ़ी व इसबात के और भी बहुत तरीक़े हैं, बख़ौफ़ तवालत ख़ौफ़ दो तरीक़ों पर इकतिफ़ा किया गया है।

अफ्कार इसबात

यक ज़र्बी मुफ़रद

चार ज़ानू तरीक़ए मुक़र्ररह पर बैठकर बाएँ ज़ानू पर पै दर

पै इल्लल्लाह की ज़र्ब लगाएँ। ज़बान से इल्लल्लाह कहें, दिल में ला मौजूद इल्लल्लाह का ज़िक्र रखें।

दो ज़र्बी ब दो कोब

पहले एक ज़र्ब बाएँ जानू पर लगाएँ। फिर एक ज़र्ब नीम कज होकर बाएँ कुहनी पर लगाकर इल्लल्लाह कहते हुए सर को जानिबे ज़मीन ले जाकर ऊपर लाकर एक ज़र्ब अपने सामने लगाएँ और इसी तरह सिलसिला जारी रखें।

सह ज़र्बी ब सह कोब

बानिशस्त मज़कूर एक ज़र्ब ज़ानुए चप पर और एक कोब अपने दरमियान और एक ज़र्ब ज़ानुए रास्त पर और एक कोब अपने दरमियान और एक ज़र्ब दरिमयान दो ज़ानू के और एक कोब लाइलाहा की अपने दिल पर लागएँ।

चहार ज़र्बी

बनिशस्त मुतज़क्करा एक ज़र्ब इल्लल्लाह की जानिबे रास्त फिर जानिबे चप फिर एक दिल पर और एक अपने रू-बरू लगाएँ।

अज़कार इस्म ज़ात

यक ज़रबी

बनिशस्त माहूद सर को दाहिने मोंढे की तरफ़ क़दरे बुलन्द करके अल्लाहु अकबर कहते हुए बाएँ पहलू पर ज़र्ब लगाएँ। असनाए ज़िक्र में आँखें खुली रहें और यह शग़ल मुतवातिर जारी रखें।

यक ज़र्ब ब इस्मे ज़ात

दोनों हाथ दोनों ज़ानू पर रखकर अल्लाहु अकबर कहते हुए मेदा को ऊपर की तरफ़ सख़्ती से खींचें और सर और कमर को बुलन्द करके अल्लाह कहते हुए ज़ेरे नाफ़ ज़र्ब लगाएँ। ये शग़ल इतनी देर जारी रखें कि बेख़ुदी तारी हो जाए।

ज़िक्र लाहूती

सर को बाएँ मोंढे की तरफ़ और अन्दर की जानिब पुश्त को ख़म देकर दो मरतबा हु-व अलल इत्तिसाल कहें और एक ज़र्ब अपने दिल पर लगाएँ, लेकिन मुँह उसी जगह रहे। फिर सर को बाएँ मोंढे पर रखकर दो मरतबा हु-व कहें और एक ज़र्ब दाहिने पहलू पर लगाएँ, लेकिन मुँह उसी जगह रहे। फिर सर को बाएँ मोंढे पर रखकर दो मरतबा हु-व कहें और एक ज़र्ब दाहिने पहलू पर लगाएँ, बाद दो ज़र्ब ज़ानूए चप और दो ज़र्ब दरमियान दो ज़ानू और एक ज़र्ब दिल पर और दो ज़र्ब दाहिने ज़ानू पर और एक ज़र्ब बाएँ पर लगाएँ, फिर सर को दाहिने मोंढे पर ले जाकर हु-व कहें और एक और ज़र्ब बाएँ पहलू पर लगाएँ, फिर सुरीन क़दरे बुलन्द करके दो ज़ानू बैटें और तीन ज़र्ब लगाएँ और बाएँ जानिब से दाहिनी जानिब फिर जाएँ। इसी तरह शग़ल जारी रखें।

ज़िक्र जबरूती

सर को दरमियान दो ज़ानू के नज़दीक ज़मीन के ले जाकर या अहद की ज़र्ब लगाएँ और उससे या वाहिद की ज़र्ब लगाएँ, फिर या वाहिद, या वाहिद पै दरपै दस मरतबा कहें और सात ज़र्ब अल्लाह-अल्लाह की दिल पर लगाएँ।

ज़िक्र मलकूती

एक ज़र्ब या बदीअ की ज़ानुए चप पर और एक ज़र्ब या बाइसु की दाहिने पहलू पर, इसके बाद एक ज़र्ब या नूर की दाहिने पहलू पर और एक ज़र्ब या शहीद की बाएँ पहलू पर लगाएँ, फिर सर और कमर को बुलन्द करके अल्लाह की ज़र्ब दिल पर लगाएँ।

ज़िक्र नासुती

सर को तीन बार दो ज़ानू के दरमियान ले जाएँ और वहाँ से अल्लाह कहते हुए सर उठाकर अल्लाह की ज़र्ब दिल पर लगाएँ फिर सर को उसी जगह ले जाकर उसी तरह या अल्लाह की ज़ानूए चप पर ज़र्ब लगाएँ, फिर सर को या अल्लाह कहते हुए उठाकर या अल्लाह की ज़र्ब दिल पर लगाएँ।

ज़िक्र मदूरुलहल्क़ नसीरुद्दीन महमूद चिराग़ देहली

निशस्त मज़कूर के साथ बैठकर सर को बाएँ मोंढे से लाइलाहा कहते हुए दाहिने मोंढे पर पहुँचा दें और वहाँ से थूडी को ज़ानूए चप लाकर लाइलाहा की ज़र्ब लगाएँ और इसी तरह मशगूल रहें।

ज़िक्र हद्दादी

दोनों ज़ानू ऐसतादा करके इस तरह बैठें कि हर दो सुरीन ज़मीन पर हो और दोनों हाथ आसमान की तरफ़ दराज़ करें और दो ज़ानू हो कर लाइलाहा कहें और फिर वहाँ से अपनी निशस्तगाह पर आकर दोनों हाथ जोड़कर लाइलाहा कहते हुए सीने पर ज़र्ब लगाएँ और उसी तरह शग़ल जारी रखें।

ज़िक्र हल्लाज

ये ज़िक्र हज़रत गंज शकर ने हिन्दी ज़बान में ईजाद किया है। तरीक़ा ये है कि आसमान की तरफ़ देखते हुए अहवन तून कहे और थोड़ी देर इसी तरह आसमान को देखते रहें, फिर ज़मीन की जानिब देखें और बतर्ज़ मज़कूर ज़बान से अहवन तून कहें और फिर कुछ देर ज़मीन की तरफ़ देखें, फिर उसके बाद अपने दिल में ख़याल करें और मुतावातिर तीन व सात बार अहवनतून कहें फिर इस ज़िक्र को शुरू करें दें।

अशग़ाल

शग़ल सुल्तानुलअज़कार

ये शग़ल हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) ने क़ब्ले बिसत किया था इसी शग़ल के बाद आप पर वही नाज़िल होनी शुरू हो गई थी। हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) ने ये शग़ल ग़ारे हिरा में किया था। हज़रत ग़ौसुलआज़म ने यह शग़ल ग़ारे हिरा में 12 साल जारी रखा। बहुत-से फ़वायद व कशायश बातिनी हासिल हुई। तरीक़ा जंगल या किसी मकान में जहाँ किसी आदमी का गुज़र न हो रात या दिन को बतौर सेहपाया बैठकर शहादत की दोनों उंगलियों के पोरों से दोनों कान बन्द करें। कानों में एक अवाज़ पानी के गिरने की सी आएगी। जिस वक़्त अवाज़ आने लगे उसी की तरफ़ हमा तन मोतवज्जोह हो जाएँ, ये आवाज़ रफ़्ता-रफ़्ता इस दरजे ग़ालिब आएगी कि फिर बाज़ार और मजमा ख़लायक़ में सुनाई देने लगेगी। इस शग़ल की तरकीब अपने पीरो मुर्शिद से करनी चाहिए।

शग़ल मुर्शिद

आँखें बन्द करके पीरो मुर्शिद का तसव्वुर इस दरजे करें कि खुद मुर्शिद और ऐन सूरत मुर्शिद हो जाए और जो क़ौल व फ़ेल अपने से सरज़द हो वह मुर्शिद की जानिब से तसव्वुर करें। हर वक़्त मुर्शिद का तसव्वुर और सरापा नज़रों में रहे।

तसव्वुफ़ का कोर्स

सच्चा सूफ़ी बनने और औलिया अल्लाह की जमात में शामिल होने के लिए जो तालीम ख़ानक़ाहों में दी जाती है, राहे सुलूक तय करने के लिए असनाये सुलूक में सालिक को जिस तालीम की ज़रूरत है, उस तालीम का खुलासा और इजमाली बयान मुन्दर्जे ज़ैल में पेश किया जा रहा है। सालिक राहे हक़ को जिन आदात व रसूम की पाबन्दी ज़रूरी है इस मज़मून में उन्ही आदात व रस्म पर आम फ़हम अन्दाज़ में रौशनी डाली गई है।उम्मीद है कि सुलूक से ताल्लुक़ रखनेवाले हलक़ों में ये मज़मून नज़रे पसन्दीदगी से देखा जाएगा। (शब्बीर हसन चिश्ती निज़ामी)

तहारत

1. सूफ़ियाए किराम की आदत है वह हर वक़्त बावुज़ू रहते हैं। अगर किसी वजह से पानी के इस्तेमाल से माज़ूर होते हैं तो तयम्मूम कर लेते हैं। इसलिए सालिके राहे सुलूक पर लाज़िम है कि हमा वक़्त बावुज़ू रहा करें।
2. शरई नुक़्तए नज़र से अगर एक वुज़ू से मुतअद्दिद फ़र्ज़ नमाज़ अदा करना जायज़ है लेकिन अरबाब तसव्वुफ़ के नज़दीक हर नमाज़ के लिए तजदीदे वुज़ू ज़रूरी है।
3. सुफ़ियाए किराम पानी का भी ख़ास एहतिमाम रखते हैं।

इसलिए वह अमूमन आबेरवाँ के किनारे अपना मसकन व मक़ाम बनाते हैं। लकिन अगर किसी वक़्त कुएँ का पानी इस्तेमाल करने की ज़रूरत लाहिक़ हो तो वह इस बात का ख़ास लिहाज़ रखते हैं कि कोई शख़्स कुएँ पर जूते पहने न चढ़े, पैरों पर नापाक मिट्टी या कीचड़ न लगी हुई हो। डोल कुएँ पर, पैरों पर न पड़ा हुआ हो। कुएँ में चिड़ियाँ बीट न करती हो।

4. खुद पानी लेकर वुजू करना अफ़ज़ल है, लेकिन ज़रूरत के वक़्त आदमी से मदद लेना जायज़ है।

5. वुजू करते वक़्त जो दुआ मासूर हैं, उनसे ज़बान व ज़ेहन को तर रखना चाहिए। सूफ़ियों के लिए ज़िक्र इलाही से ग़फलत मौत के मुरादिफ़ है।

6. वुजू करते वक़्त हर उज़ू के धोने में इत्तिसाल व इनफ़िसाल का ख़ास लिहाज़ रखना चाहिए। ज़ाहिरी वुजू करते वक़्त बातिनी तहारत अज़ा का भी ध्यान रखें ताकि तहारत कामिल तौर पर हासिल हो और पूरा-पूरा अजरो सवाब मिले।

7. अगरचे फ़र्ज़ नमाज़ की अदाएगी कि लिए सिर्फ़ वुजू पर इकतिफ़ा जायज़ है, लेकिन अगर मुमकिन हो सके तो हर नमाज़ के लिए गुस्ल किया जाए। इससे नमाज़ में इनशराह, यकसूई और जमीअत ख़ातिर हासिल होती है।

8. वुजू करने के बाद दो रकअत तहीयतुल वुजू ज़रूर पढ़ा करें। इसका बहुत बड़ा सवाब है।

9. वुजू करते वक़्त दुनिया की बातें नहीं करनी चाहिए। इससे वुजू का सवाब जाता रहता है।

10. वुज़ू करने के बाद फ़र्ज़ों से पहले तहीयतुल वुज़ू या सुन्नतें पढ़ना मसनून है, कोई दुनियावी काम करना दुरुस्त नहीं।

11. इस्तिंजा नंगे सर न करना चाहिए। बेहतर ये है कि इस्तिंजा करते वक़्त दस्तार या टोपी उतार कर रूमाल या और कोई कपड़ा सर से लपेट लें।

12. सालिक को सोते वक़्त बावुज़ू सोना चाहिए। अगर सोते हुए आँख खुल जाए तो वुज़ू करके तहीयतुल वुज़ू पढ़कर सो जाए। वुज़ू करने से शफ़ा हासिल होती है, दिल का मलाल दुर होता है, हमेशा बावुज़ू रहने से चेहरा रौशन और पुरनूर हो जाता है।

नमाज़ फ़र्ज़ व नवाफ़िल

13. सूफ़ी को फ़र्ज़ नमाजें अव्वल वक़्त अदा करने का इहतिमाम करना चाहिए। अव्वल नमाज़ पढ़ने का बहुत सवाब है।

14. फ़ज्र और अस्र की नमाज़ में चुँकि मख़सूस वज़ाइफ़ पढ़े जाते हैं, इसलिए इन दोनों नमाज़ों को खुसूसियत से अव्वल वक़्त पढ़ना चाहिए।

15. फ़ज्र की नमाज़ पढ़कर जो औराद व वज़ाइफ़ पढ़ते हों, उनसे फ़ारिग़ होकर नमाज़ इशराक़ पढ़कर तिलावते कलाम पाक में मश्गूल होना चाहिए। इस वक़्त में कुत्ब सुलूक व तसव्वुफ़ या बुज़ुर्गाने दीन के मलफ़ूज़ात का मुताला करना भी अच्छा है।

16. अस्र की सुन्नतों को कभी क़ज़ा न होने दें। अगर कभी किसी वजह से अस्र की सुन्नतें फ़ौत हो जाएँ तो ख़लवत में क़ज़ा पढ़ें, लेकिन तर्क किसी हाल में न करें।

17. रात की नवाफ़िल या वज़ीफ़ा कुछ पढ़ने से रह गया हो तो तुलूअ़ सुबह सादिक़ के बाद इसकी क़ज़ा बिला कराहियत दुरुस्त है। सुल्तान अलमशयख़ ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के मुरीदों और खुलफ़ा का इसी तरीक़े पर अमल रहा है।

18. अगर ख़यालात में यकसूई और हुज़ूरी हासिल हो तो फ़र्ज़ की नमाज़ में तवील क़राअत मसनून है, वरना हुज़ूरी के साथ मुख़्तसर क़राअत बेहतर है।

19. नमाज़ पढ़ते वक़्त ख़यालात और दिल को यकसू रखना चाहिए।

20. फ़राइज़ पंजगाना के बाद नवाफ़िल पढ़ने से बेहतर ये कि मुराक़्बा में वक़्त सर्फ़ किया जाए, वरना जिस इबादत में ज़ौक़ हासिल हो वही इबादत सालिक के लिए बेहतर है।

जमाअत

21. नमाज़ बाजमाअत पढ़ना वाजिब है। सालिक शहर में हो या जंगल में, हर फ़र्ज़ नमाज़ जमाअत के साथ अदा करना चाहिए। हाँ, अगर जंगल में जमाअत दुश्वार हो तो तनहा पढ़ना भी दुरुस्त है।

वक़्ते मक़बूल

22. सालिक को चाहिए कि जिन औक़ात में दुआ क़बूल होती है उन औक़ात को ज़ाया न करें। वक़्त मक़बूल कौन-सा है इस बारे में बुज़ुर्गों के मुख़तलिफ़ अक़वाल हैं: (1) वक़्ते मक़बूल तुलूअ़ सुबह सादिक़ का वक़्त है (2) फ़ज्र की सुन्नतों और फ़र्ज़ का दरमियानी वक़्त है (3) चाश्त का वक़्त है (4) वक़्त मक़बूल मग़रिब के बाद इशा तक है (5) बाद निस्फ़

शब है (6) आख़िर शब क़रीब सुबह का वक़्त है। मुरीद सादिक़ को इन औक़ात में ज़िक्र शग़ल मुराक़्बा, तिलावत या नवाफ़िल में सर्फ़ करना चाहिए।

औक़ाते मकरूहा और बुज़ुर्गान का तरीक़ेकार

23. फ़ुक़हाए किराम के नज़दीक औक़ाते मकरूहा में नमाज़ पढ़ना मना है, लेकिन सूफ़ियाए किराम इन औक़ात में नमाज़ और मुराक़्बा में मश्गूल रहते हैं।

24. बाज़ सूफ़िया अव्वल शब में सो जाते हैं और निस्फ़ शब के वक़्त बेदार होकर वुज़ू करके इशा की नमाज़ अदा करके ज़िक्र व मुराक़्बा में मशगूल हो जाते हैं। इस तदबीर से दिनभर की थकावट दूर हो कर तबीयत बश्शाश हो जाती है।

25 बाज़ बुज़ुर्गों का ये तरीक़ा है कि अस्र की नमाज़ से इशा के बाद तक सिवाए इबादत के कोइ काम नहीं करते। किसी से बोलते या बात तक नहीं करते। रोज़ा चन्द क़तरा आब से इफ़्तार करके बदस्तूर इबादत में मश्गूल रहते हैं। इशा की नमाज़ पढ़कर कुछ खा-पी लेते हैं। नमाज़ से फ़रागत के बाद कोई नवाफ़िल पढ़ने लगता है, कोई ज़िक्र में लग जाता है। कोई तिलावत क़ुरआन में मशगूल हो जाता है और मुबतदी के लिए इन औक़ात में सबसे बेहतर अमल मुराक़बा है।

नमाज़े तहज्जुद

26. सालिक को नमाज़े तहज्जुद पढ़ना निहायत ज़रूरी है।नमाज़े तहज्जुद से रूहानी मरातिब में उरूज और तरक़्क़ी हासिल

होती है। नमाज़ तहज्जुद की अदायगी के लिए इख़्तियार है कि अव्वल शब में सो जाए और निस्फ शब के क़रीब बेदार होकर बाक़ी तमाम शब इबादत में गुज़ार दे या अव्वल तिहाई और आख़िर तिहाई में आराम कर ले या अव्वल शब में कुछ देर सोकर बेदार हो जाए, फिर सुबह के क़रीब कुछ देर सो रहे।

27. सालिक को वक़्त शब ग़ाफ़िल न सोना चाहिए, बल्कि उसे अपनी हालत ऐसी बनानी चाहिए जिसकी निस्बत कहा गया है कि उनका खाना मरीज़ के खाने जैसा और नींद डूबनेवाले की नींद जैसी है। सालिक को रात के वक़्त बहुत कम सोना चाहिए।

आदाबे ख़्वाब

28. नबी (सल्ल०) का इरशाद है: मेरी आँखें सोती हैं मगर दिल नहीं सोता। सूफ़ी की नींद भी ऐसी ही होनी चाहिए। उसे इतना ग़ाफ़िल न सोना चाहिए कि अपने वुजूद की ख़बर न रहे। सालिक को बावुज़ू सोना चाहिए, ताकि शैतानी असरात से महफ़ूज़ रहे।

29. सालिक के लिए दोपहर का सोना (क़ैलूला) बहुत मुफ़ीद है। अगर नींद न आए तब भी लेटा रहे। दोपहर को कुछ देर आराम करने से क़ियामे शब में कसल पैदा नहीं होता।

30. कुछ रात को बेदार रहते हैं और दिन को भी आराम नहीं करते। उनकी आँखें बोझिल हो जाती हैं, रुख़सारों पर ज़रदी आ जाती है, पेशानी पर नूर नज़र आता है, इन अलामात से शब बेदारी जाहिर हो जाती है। सालिक को

इख़्फ़ाए हाल की कोशिश करनी चाहिए। ऐसी बातों से परहेज़ करना चाहिए जिससे लोगों में शोहरत और नामवरी पैदा हो।

रोज़ा

31. रोज़ा सालिक के लिए निहायत ज़रूरी और अरकाने सुलूक में से एक अहम रुक्न है।

32. फ़र्ज़ रोज़ा के इलावह रोज़ा की कई क़िस्में हैं। सौमे दवाम, सौमे दाऊदी, तय का रोज़ा (सौमे दवाम)। हमेशा रोज़ा रखना। यह तरीक़ा सुलूक में से बहुत ही उमदा है। सौमे दाऊदी एक दिन रोज़ा रखना, फिर तीसरे दिन रोज़ा रखना।

तय का रोज़ा : दो रोज़ और एक शब के रोज़ा को तय कहते हैं। सूफ़ियाए किराम की आदत रोज़ा के बारे में मुख़्तलिफ़ है। बाज़ हज़रात हफ्ते में तीन दिन यानी पीर, जुमेरात और जुमा को रोज़ा रखते हैं, बाज़ जुमेरात और जुमा को रखा करते हैं, बाज़ बुज़ुर्ग ने साल में इन रोज़ों को पसन्द किया है--9 रोज़े ज़िलहिज्जा के, दस मुहर्रम और शव्वाल के।

बहर हाल सालिक के लिए ऐयामे बीज़ यानी *13,14* और *15* तारीख़े क़मरी के रोज़े लाज़मी हैं बशरते कि ज़ोफ़े पीरी या बीमारी माने न हो। बाज़ सूफ़ी दिनभर कुछ नहीं खाते, ग़ुरूबे आफताब से पहले कुछ खा लेते हैं। रोज़ा की नीयत खुद सतायी के साथ नहीं करते। सालिक को इख़्तियार है कि तरीक़ मुतज़क्करा बाला में से जिस तरीक़े को चाहे अपने लिए इख़्तियार करे लेकिन सौमे दवाम बनिस्बत और

दूसरे रोज़ों के ज़्यादा बेहतर है।

34. सुलूक में इन चार चीज़ों को इख़्तियार करने का हुक्म है, कम खाना, कम बोलना, कम सोना और लोगों से मेल-जोल कम करना, ये चार बातें सुलूक की बुनियाद हैं।

तय का रोज़ा रखने के लिए पहले सौमे दवाम की आदत डालना ज़रूरी है। आदत हो जाने के बाद खाना इशा के बाद खाया करें और बतदरीज रोज़ाना खाने में देर करते जाएँ। तय का रोज़ा रखने के बाद तीन दिन का रोज़ा भी रखा जा सकता है। इसकी आदत होने पर फिर दस रोज़, बीस रोज़, महीना, दो महीना, सालभर तक बेग़ैर खाए-पिए सब्र किया जा सकता है, लेकिन इस क़िस्म का रोज़ा रखने की इजाज़त उस वक़्त है जब रोज़ा रखने से हवाइज ज़रूरी पूरी होने में हर्ज वाक़े न हो वरना इस क़िस्म का रोज़ा न रखना ही बेहतर है।

तक़लीले तआम

35. खुराक कम करने की आदत डालने की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं एक सूरत यह है कि आदमी जितनी खुराक कम खाता है उसके बराबर चने वज़न के करले और हर रोज़ उन चनों में से एक चना कम कर के अपनी खुराक का आटा वज़न कर लिया करे। इस तरह सालभर में *36* चनों की बराबर खुराक कम हो जाएगी। दूसरी सुरत यह है कि अपनी खुराक के वज़न बराबर एक गीली लकड़ी को तौल ले और रोज़ाना उसी लकड़ी के वज़न बराबर खुराक खाया करो ज्यों-ज्यों लकड़ी सूखती जाएगी खुराक कम होती जाएगी।

तीसरी सूरत ये है कि रोज़ाना अपनी गिज़ा में से एक लुक़्मा कम खाया करे। सालिक के लिए ज़रूरी नहीं कि इन तीनों तरीक़ों में से किसी एक ना एक तरीक़े को इख़्तियार करे। तक़लीले तआम का जो तरीक़ा मुनासिब हो इख़्तियार कर सकता है।

एतिकाफ

36. रमज़ान के आख़िरी अशरे का एतकाफ सुन्नते मोअक्कदा है।

37. जो मशायख़ मस्जिदों या ख़ानक़ाहों में सकूनत रखते हैं वह बजुज़ एतिकाफ़े रमज़ान के और कोई वक़्त नहीं करते इसलिए कि मस्जिद या ख़ानक़ाह में क़याम से वह खुद ही शरायत एतिकाफ़ के पाबन्द होते हैं।

38. बाज़ सूफ़िया चालीस रोज़ का बाज़ *3* चिल्लों का एतिकाफ़ इख़्तियार करते हैं।

39. सूफ़ियों को अय्याम बीज़ के रोज़े पाबन्दी के साथ रखने चाहिएँ, इसमें इत्तिबाए सुन्नत भी है और औराद वज़ायफ़ की रिआयत भी।

निकाह या नवाफ़िल

40. सालिक को इब्तिदाए अहवाल में नवाफ़िल में इशतिग़ाल बेहतर है वरना यह उमूमी मुशाहिदा है कि सालिक औरत और शादी के चक्कर में पड़ जाता है, मंज़िल मक़सूद से रह जाता है और जौक़ तलब फ़ना हो जाता है।

41. सूफ़ी को लाज़िम है कि तमाम औसाफ़ कमाल हासिल करने के बाद अपने और औराद में से भी कोई दौर नाग़ा न करे,

मशायख़ चिश्त ने बावजूद दरजा कमाल हासिल करने के कभी अपना वज़ीफ़ा फ़ौत नहीं किया। बुज़ुर्गगाने तरीक़त के तरीक़ा माहूद तर्क ना करना चाहिए।

खाना खाने के आदाब

42. खाना खाते वक़्त खुदा का ज़िक्र ज़रूर करना चाहिए। हर लुक़्मे पर बिस्मिल्लाह पढ़ा करें, बाज़ बुज़ुर्ग इतनी देर में लुक़्मा चबाया और निगला करते हैं कि बिस्मिल्लाह और सूरह फ़ातिहा ख़त्म कर लेते हैं। यह हक़ीक़त में उन बुज़ुर्गों की करामत है।

43. सालिक को भूख बढ़ाने के लिए सफ़ूक हाज़िम न इस्तेमाल करना चाहिए।

44. अगर कई अक़साम के खाना दस्तरख़्वान पर हों तो मज़े के खाने देखकर ज़्यादा न खाना चाहिए।

45. मेज़बान को चाहिए कि मेहमान को सक़ील और रियाह पैदा करनेवाला खाना न खिलाए।

46. मेहमान को चाहिए कि जो कुछ उसके आगे आए बख़ुशी क़बूल करे। ऐसी फ़रमाइश न करनी चाहिए जिसको पूरा करने में मेज़बान को दिक़्क़्त हो।

47. अगर किसी शख़्स के यहाँ ज़ियाफ़ते तआम पर जाए तो कुछ न कुछ लेकर जाए ख़ाली हाथ न जाए।

48. अगर बरतन किसी शख़्स के बतौर तोहफ़ा पेश करना हो तो उसे ख़ाली न ले जाना चाहिए , कोई मुनासिब चीज़ उसके अन्दर होनी चाहिए।

49. अगर किसी शख़्स के यहाँ खाना भेजे तो इतना ज़रूर होना

चहिए जो उसके लिए काफ़ी हो।

आदाब ज़ियाफ्ते तआम

50. दावत के मौक़े पर किसी शख़्स को अपने हमराह ना लेजाना चाहिए।

51. अगर ऐसा इत्तिफ़ाक़ हो जाए तो उस शख़्स को खाने में शरीक करने के लिए मेज़बान से इजाज़त हासिल करना ज़रूरी है।

52. मजलिस ज़ियाफ़त में जहाँ जगह मिल जाए, बैठ जाए सदर मक़ाम या जूतियाँ उतारने की जगह बैठने की कोशिश न करनी चाहिए।

53. अगर लोग इसरार करके सदर मुक़ाम पर बैठाए तो उस वक़्त सदर मुक़ाम पर बैठने में कोई हर्ज नहीं।

54. खाना खाते हुए छोटा नेवाला लेना चाहिए। ऐसी निसबत न बैठे जिससे ये मालूम हो कि ये आदमी खाना खूब खाएगा। न खाने से बेरग़बती का इज़हार करे। न बड़े-बड़े लुक़मे खाए। जब तक लोग खाते रहें खुद भी उनका साथ देता रहे। अपने आगे से खाए। खाना इस तरह ना खाए कि हाथ और पेट आलूदा हो जाए। तीन उँगलियों से नेवाला बनाकर खाना चाहिए। खाना खाते वक़्त दायाँ पैर खड़ा रखे, बाएँ पैर को बिछाकर उस पर बैठ जाए। ये नशिस्त ख़ाने के लिए सुन्नत है मगर मशायख़ और बुज़ुर्गों के सामने अदब से बैठना चाहिए। खाना खाने के बाद लोगों के सामने सिलफ़ची में कुल्ली न करे।

55. सूफ़ियों के लिए खाने का बेहतरीन वक़्त दोपहर को क़रीब

ज़वाल के और रात को बाद नमाज़ इशा है।

56. दो वक़्त से तीसरे वक़्त न खाना चाहिए। अगर खाने का इतिफ़ाक़ हो तो बहुत कम खाए।

57. मजलिस ज़ियाफ़त से रुख़सत होते वक़्त मुख़्तसर अलफ़ाज़ में मेज़बान का शुक्रिया अदा करना चाहिए।

शरायत इरादत और इब्तिदाई फ़रायज़

58. उलमाए तसव्वुफ़ ने इरादत के लिए 16 शर्तें बयान फ़रमाई हैं-

(1) सबसे पहले मुरीद होनेवाले को पीरो मुर्शिद की जुस्तजू लाज़िम है। (2) तालिब जवाँमर्द और साहिबे हिम्मत हो ताकि अपने दिल से घर-बार और बीवी-बच्चों से तअल्लुक़ मुन्क़ता कर सके। (3) जहाँ तक हो सके नफ़्स का तज़्किया करे। तमाम मोहर्रमात और मकरूहाते शरीआ को छोड़ दे और दुनिया की लज़्ज़तों से जुदा हो जाए। (4) अपनी रियाज़त व मुजाहिदा को शुमार में न लाए। (5) ख़ल्वत और गोशा नशीनी इख़्तियार करे। (6) औरत से अलग रहे अगर बीवी मौजूद हो तो बजुज़ अशद ज़रूरत के उसके पास न जाए। (7) अकल हलाल का इंतिज़ाम करे और उसे दवाम रखे। (8) पीर का हुक्म मुसतैदी से बजा लाए। (9) बहुत कम सोए। (10) जब दो काम सामने आए, तो उनमें जो बेहतर हो उसको इख़्तियार करे। (11) नफ़्स की ख़्वाहिश पर अमल न करे। (12) अपने आपको सबसे बदतर, हक़ीर व ज़लील समझे। (13) बहस-मुबाहिसा व मनाज़िरा से किनाराकश रहे। (14) वुज़ू और तहारत

वहम न करे कि नमाज़ व औराद का वक़्त फ़ौत हो जाए। (15) अपने लिए कोई ख़ास वज़ा या लिबास इख़्तियार न करे जिससे शोहरत और नामवरी हासिल हो। (16) मराक़बा और हुज़ूरी से दिल को किसी वक़्त ख़ाली न रखे।

नसायह

59. अगर खुदा न ख़ास्ता किसी वक़्त इरादत में लग़ज़िश हो जाए तो इरादात तर्क न करनी चाहिए। इरादत पर क़ायम रहने से उम्मीद है कि लग़ज़िश का असर जाता रहेगा। अल्लाह की रहमत से मायूस न होना चाहिए।

60. ख़ताकार को अपनी ख़ता पर शर्मिन्दा भी रहना चाहिए, लेकिन खुदा की रहमत से उम्मीद लगाए रखे।

बूढ़े मुरीद को क्या करना चाहिए?

61. हक़ तआला किसी बूढ़े को तौफ़ीक़ अता करे और वह किसी बुज़ुर्ग के हाथ पर मुरीद हो जाए तो उसके लिए यही काफ़ी है कि पाँचों वक़्त नमाज़ जमाअत से और वज़ायफ़ पढ़ता रहे। और फ़ुरसत के वक़्त आँखें बन्द करके मराक़िब बैठ जाए। (पीर मराक़बा और मशग़ूली का तरीक़ा बताएगा।)

62. नाबालिग़ लड़के को मुजाहिदा की तालीम न देनी चाहिए।

अगर बादशाह या नवाब मुरीद हो जाए तो उसे क्या करना चाहिए?

63. अगर बादशाह या नवाब को हक़ तआला तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और किसी बुज़ुर्ग के हाथ पर बैअत हो जाए तो उसके लिए यही काम बेहतर है कि रिआया पर एहसान करे

और उन्हें अपनी औलाद की तरह समझे। हर वक़्त ज़िक्र इलाही करता रहे। रात इबादत व मुराक़बा में बसर करे और दिन को रिआया की ख़िदमत अन्जाम दे। सल्तनत के ख़ज़ाने को अपनी मिल्कियत न समझे। शाही ख़ज़ाना मुसलमानों का बैतुलमाल है। हाँ, अलबत्ता अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ वैतुलमाल से रुपया ले सकता है मगर बादशाह को वाक़ई और सच्ची तलब हो तो उसको वह काम करना चाहिए, जो हज़रत इबराहीम बिन अदहम ने किया यानी सल्तनत छोड़कर ख़लवत इख़्तियार करे और अगर ऐसा न हो सके और कोई सल्तनत को सँभालनेवाला न हो तो बादश.ह खुद ही उमूरे सल्तनत अंजाम दे और उमूरे शरई को अन्जाम देने के वास्ते किसी आलिम बाअमल की ख़िदमात हासिल करे।

मुख़बिरों के ज़रिये तजस्सुसे हालात करता रहे कि किसी के हाथ बेइन्साफ़ी तो नहीं होती। हदूदे शरई क़ायम करे, मुज़रिमों को क़रारे वाक़ई सज़ा दे। फ़ुक़रा, ज़ोअफ़ा, यतामा और अइम्मा की ख़बरगीरी को फ़र्ज़ जाने, इन्हीं कामों के अन्जाम देने से बारगाह खुदावन्दी में उसको क़ुर्ब हासिल होगा। एलाये कलिमतुल्लाह के लिए अपने को वक़्फ़ कर दे और हमेशा क़हरो जलाल खुदावन्दी को मलहूज़ रखे।

औरतों को क्या करना चाहिए?

64. अगर अल्लाह तआला की मुहब्बत और तल्ब औरत के दिल में पैदा हो तो अगर औरत जवान हो तो वह सबसे पहले गोशा नशीनी इख़्तियार करे, बिला ज़रूरते बशरी आफ़ताब

व आसमान की सूरत न देखे। लेकिन जवान औरत के लिए उसका मुर्शिद निहायत बूढ़ा और बुज़ुर्ग होना चाहिए जो उसको ख़लवत और मराक़्बा की तालीम दे।

65. गोश्त बिल्कुल न खाए। खुश्क चावल से ज़्यादा इफ़तार करे, सौमे दवाम तर्क न करे। शादी, ग़मी में शिरकत न करे।

66. मुर्शिद को चाहिए कि औरत को मराक़्बा और तसव्वुर तालीम न करे। औरत को इबादते ज़ाहिरी में ज़्यादा से ज़्यादा हिस्सा लेना चाहिए। ज़ीनत व आराइश बिल्कुल तर्क करदे। औरत को बनिस्बत वज़ायफ़ के नवाफ़िल की तरफ़ ज़्यादा तवज्जोह देनी चाहिए।

67. अगर औरत बुढ़िया है तो उसके लिए नमाज़ और तसबीह पढ़ना बेहतरीन काम है। रोज़े रखे। तमाम लग्व बातों से अलाहिदा रहे, गोशाए ख़लवत से बाहर न निकले, घर में बैठकर अल्लाह-अल्लाह क़िए जाए।

पीर की ख़िदमत में हाज़िरी के आदाब

68. मुरीद को चाहिए कि पीरो मुर्शिद के हुज़ूर हाज़िर होकर निगाह अपने पैरों पर रखकर खड़ा रहे, बैठे तो अपने सीने पर नज़र रखे। पीर के सामने न आहिस्ता चले, न दौड़कर। अगर कोई चीज़ लाया हो तो निहायत अदब से पीर के सामने रखदे।

69. और जब शैख़ के सामने हाज़िर हो तो ज़मीने ख़िदमत को बोसा दें।

70. शैख़ की ख़िदमत से वापसी में इस बात का ख़ास तौर पर ख़याल रखे कि शैख़ की तरफ़ पुश्त न हो। जो शख़्स हर

वक़्त शैख़ की ख़िदमत में रहता हो और उससे ये एहतिमाम न हो सके तो इतना ज़रूर चाहिए कि वह तीन क़दम उल्टा चलकर पुश्त करे, पहले ही क़दम में पुश्त न करे।

71. जब शैख़ के पास बैठे तो इधर-उधर न देखे। न बार-बार उठे बैठे। हाँ, अलबत्ता जब शैख़ उठे तो उसके मोवाफ़क़त में उठ खड़ा हो।

72. मुरीद को चाहिए कि उमूरे बंशरी में शैख़ को मिस्ल अपने तसव्वुर करे, लेकिन उमूरे इलाही में मिस्ल पैग़म्बर के तसव्वर करे।

73. मुरीद को चाहिए कि पीर की मजलिस से बग़ैर किसी ज़रूरी काम के बाहर ने जाए और पीर जब उसकी तरफ़ देखें तो फ़ौरन अपनी नज़र नीची कर ले।

74. मुरीद को चाहिए कि परी से सिवाए दुआ के और किसी बात की दरख़्वास्त न करे। इन्कबाज़े तबियत का हाल तक न कहे, अगर पीर खुद ही मुत्तला हो जाएँ तो बेहतर है।

75. अगर मुरीद कव्वाल हो तो जब तक पीर फ़रमाइश न करे सामने कोई ग़ज़ल या नात न पढ़े। पीर की मजलिस को हक़ की मजलिस समझना चाहिए।

76. मुरीद को चाहिए कि पीर जिस बात का हुक्म दें उसकी तामील सर आँखों से करें।

77. मुरीद को यह बात वाज़ेह रहनी चाहिए कि पीर से ग़ाफ़िल रहना इन्तिहाई बदक़िस्मती और महरूमी है। पीर हक़ के रास्ते की रहनुमाई में माहिर और कामिल होता है। जिस जगह मुरीद सालों मुजाहिदा करके पहुँच सकता है, पीर की

एक बात में उस मक़ाम तक पहुँच सकता है।

78. मुरीद को चाहिए कि पीर के इत्तबा को अपने लिए सबसे बेहतर जाने। अक्सर पीर का नाम विर्दे ज़बान रखे और एक लहज़ भी पीर के तसव्वुर से ख़ाली न रहे।

79. मुरीद को चाहिए कि हर वक़्त पीर को ग़ैब के मुशाहिदा में तसव्वुर करे और अपने ऊपर पीर की तजल्ली का तसव्वुर करे। इस बात की मश्क़ करने से एक वक़्त ऐसा आएगा कि पीर उसकी ख़लवत में मौजूद होगा और पीर के दिल पर जो हक़ की तज्जली हो रही है उसका अक्स मुरीद के दिल पर जलवागर नज़र आएगा।

80. मुरीद को चाहिए कि वह हर वक़्त अपने आपको पीर की हिरासत में तसव्वुर करे और अपने हर काम को पीर और खुदा की इनायत जाने। इस बात पर मदावत से चन्द रोज़ बाद जिधर नज़र डालेगा पीर मुर्शिद ही नज़र आएगा।

81. अगर पीर ने किसी काम का हुक्म दिया हो और नमाज़ की जमाअत तैयार हो तो पहले पीर का हुक्म बजा लाए।

82. याद रखो कि अगर मुरीद से पीर को रंज पहुँचे और पीर ने माफ़ भी कर दिया, ऐसी सूरत में भी मुरीद के लिए ख़तरह है कि उसकी तरक़्क़ी रुक जाए।

83. पीर के दोस्तों और हमनशीनों का अदब व एहतिराम भी करना चाहिए।

84. अगर पीर व मुर्शिद अपना मलबूस मुरीद को अता फ़रमाए तो उसको बड़ी एहतियात और हिफ़ाज़त से रखना चाहिए। ईद वग़ैरा के अय्याम में उसकी ज़ियारत करनी चाहिए और

उसको अपना शफ़ीअ तसव्वुर करे।

85. अगर पीरो मुर्शिद हाज़िर न हों तो उनकी नशिस्तगाह का वही अदब मलहूज़ रखना चाहिए जो पीरो मुर्शिद का है। पीर की नशिस्तगाह की तरफ़ न पैर फैलाए, न उसकी तरफ़ पुश्त करे। उल्टे पैरों वापिस हो जाना चाहिए। पीरो मुर्शिद का विसाल ही क्यों न हो चुका हो पीरो मुर्शिद की शान यह है कि वह एक ही वक़्त में क़ब्र में भी है, और मजलिस में भी और खुदा के हुज़ूर में भी।

86. उमूर बशरीयत में पीर की इत्तबा लाज़िम नहीं कि अगर उन्होंने चार निकाह किए हों तो तुम भी करो वरना तुम्हारी मशगूली में फ़र्क़ आ जाएगा।

87. अगर पीरो मुर्शिद कोई बात बयान करें तो उसकी तहक़ीक़ मौलवियों से न करते फिरें, उसकी तहक़ीक पीर ही से हो जाएगी।

88. मुरीद को चाहिए कि अपने पीर को सिर्फ मुअल्लिम या उस्ताद न समझे, ख़्वाजगाने चिश्त के तरीक़े में मुरीद आशिक़ और पीर माशूक़ होता है, अपने पीर से बढ़कर किसी को न माने।

89. मुरीद को चाहिए कि अपने पीर से इतनी मुहब्बत रखे कि वह अपनी जान व फ़रज़न्द और माल दौलत से ज़्यादा अज़ीज़ हो, हर वक़्त पीर की याद और तसव्वुर में ग़र्क़ रहे। मरते वक़्त अगर पीर ही की याद में दम निकले तो ज़हे सआदत है।

90. पीर खुदा का सफ़ीर है। जो कुछ मिलेगा पीर के हाथ ही से

मिलेगा, मुरीद को अपना पीर का इत्तिबा माल में न छोड़ना चाहिए। मुरीद ख़्वाह किसी दरजे पर क्यों न पँहुच जाए क़ियामत के दिन उसको पीर के पीछे ही खड़ा किया जाएगा।

91. मुरीद को चाहिए कि परी जिस मुजाहिदा का हुक्म दें तो उसको मजीद नेमत तसव्वुर करे और फ़रमान बजा लाए।

92. मुरीद ख़्वाह किसी मक़ाम पर पहुँच जाए उसे पीर की इत्तिबा किसी हालत में ने छोड़ना चाहिए।

शैख़ की ख़िदमत

93. मुरीद को चाहिए कि अपने पीर की ख़िदमत दिल व जान से बजा लाए और पीर का शुक्रगुज़ार हो कि उसी की इनायत से उसको इस ख़िदमत की तौफ़ीक़ हुई है। और हर वक़्त पीर की लम्बी उम्र और क़ुर्ब खुदावन्दी की दुआ करे। अगर पीर का विसाल हो गया हो तो एसाले सवाब से उनकी रूह को खुश करे।

94. पीर का दरजा मुरीदों में वही है जो उम्मत में नबी को हासिल है। हुज़ूर (सल्ल०) का फ़रमान है पीर अपने मुरीदों में ऐसा है जैसा नबी अपनी उम्मत में।

95. पीर के सामने मुरीद को फ़िज़ूल बातें, किसी की ग़ीबत जोई या गिला न करना चाहिए, न अपने ऐब ज़ाहिर करने चाहिए।

96. मुरीद को लिबास में पीर की मुशाबहत इख़्तियार करना अच्छी बात है। पीर की रस्मपरस्ती भी एक बड़ी बात है।

97. लेन-देन और उमूर मआशरत में पीर की इत्तिबा दुरुस्त

नहीं।

98. मुरीद को हर हाल में ये कोशिश करनी चाहिए कि इसका बार-बोझ पीर पर न पड़े, जहाँ तक हो सके खुद पीर का बोझ उठाए, अगर मुरीद खुशहाल हो और पीर तंग दस्त तो मुरीद को अपनी खुशहाली पीर ही की बख़शिश और इनायत तसव्वुर करनी चाहिए।

99. पीर जिसका हुक्म दे फ़ौरन उसकी तामील में सरगर्म हो जाए ख़्वाह वह काम महाल या दुश्वार क्यों न हो।

100. मुरदी को चाहिए कि हर वक़्त अपनी नज़र नीची रखे। अगर आँखें उठाए तो आसार वग़ैरा के अलावा कुछ न देखे।

ख़लवत और मुराक़बा

101. सालिक को ख़िलवत के लिए ऐसी जगह तजवीज़ करनी चाहिए जहाँ इंतिहाई ही तन्हाई हो। कोई दूसरा न हो।

102. ख़िलवत में शरायत तहारत जिक्र व मराक़िबा का ख़ास ख़याल रखे।

103. ख़िलवत में हुजूर क़ल्ब शर्त अव्वलीन है। जब हज़ूर कल्ब हासिल हो जाता है तो अबदाल व औताद तालीम के लिए मिनजानिब इलाही आया करते हैं।

104. मुराक़िबा के लिए इतमिनान की ख़ातिर और ख़िलवत बातिन शर्त है। इब्तिदा में सालिक को चाहिए कि अपने दिल पीर के दिल की तरफ मुराकिब करे ताकि पीर के दिल से सालिक को इतमिनान का हिस्सा नसीब हो।

मुरीद चूँकि इब्तिदा में हिजाबात के अन्दर होता है इस

वास्ते वह बराह रास्त हज़रत रब्बुल इज़्ज़त की तरफ़ मुतवज्जोह हो सकता। इस हालत में मुर्शिद की तरफ़ मुतवज्जोह होना सालिक के लिए मुफ़ीद होगा।

105. ख़िलवत और मराक़िब की तालीम पीर व मुर्शिद देगा। उनके बताए हुए तरीक़े परकार बन्द होना चाहिए।

तसव्वुरे शैख़

106. तसव्वुर शैख़ की सूरत यह है कि मुरीद अपने आप को शेख के रू-ब-रू उनकी मजलिस में हाज़िर तसव्वुर करे या अपने दिल में शैख़ का ख़याल जमाए या अपने आपको हमातन शैख समझे। यह काम ख़ास नेक बख़्तों का है। दिल में शैख़ के सिवा कोई ख़तरा न गुज़रे, तसव्वुर में अपने पीर को एक शफ़्फ़ाफ़ आईना तसव्वुर करे जिसपर अनवार इलाही की तजल्ली हो रही है और ये उसके नज़ारे में मशगूल है।

107. नमाज़ में पीर को दाएँ-बाएँ तसव्वुर करे या अपना इमाम समझे या अपने सजदा के जगह या अपने दिल में ख़याल करे और अगर हाज़िर व नाज़िर समझे तो और भी अच्छा है।

हब्से दम

108. सालिक के लिए हब्से दम की आदत भी ज़रूरी है। हब्से दम करनेवाले को औरत से परहेज़ लाज़मी है। पानी बहुत कम पीने चाहिए कि बस खड़े होकर नमाज़ पढ़ सके। फ़ुज़ूल बातों से परहेज़ करे। हब्से दम से ख़तरात खुद बखुद दफ़ा

हो जाते हैं।

109. सालिक को चाहिए कि अपने शैख़ के मज़ार के गिर्द कई चक्कर लगाए। यह शैख़ के क़ल्ब की हुरमत व ताज़ीम है।

110. मज़ारे शैख़ पर फूल पेश करे। खुश्बू से रूह खुश होती है।

111. शैख़ के मज़ार के सामने इतनी देर बैठे जितनी देर में सूरह या०सीन० पढ़ी जाती है। ज़्यादा देर ठहरने से, इधर-उधर नज़र पड़ने से मज़ार शरीफ़ की बेहुरमती होगी।

112. मुरीद जितनी देर तक शैख़ के मज़ार पर ठहरे आँखें बन्द करके शैख़ का तसव्वुर रखे या अपनी नज़र मज़ार पर रखे। शैख़ के मज़ार पर इबादत में मशगूल होना बहुत ही अच्छा है। इससे पीर व मुर्शिद बहुत ही खुश होंगे।

113. शैख़ के मज़ार के सामने किसी शख़्स की ताज़ीम न करनी चाहिए सिवाए उन लोगों के जिनकी ताजीम खुद शैख़ करते हों। यही हुक्म पीर की हयात में भी है।

114. मुरीद को पीर के रिहायशी मकान या मज़ार शरीफ़ के हुरमत मलहूज़ रखनी चाहिए। पीर के मकान या मज़ार की तरफ़ पैर फैलाना, थूकना या पुश्त करना सख़्त बेअदबी है।

115. शैख़ के मलबूस को बावुजू हाथ न लगाए। जब कभी ज़ियारत करे सर आँखों से लगाए।

116. पीर के विसाल के बाद जो उनके ख़लीफ़ा और जानशीन हों, उनकी ख़िदमत व इताअत भी पीर व मुर्शिद के बजा लाए।

117. पीर के विसाल के बाद अगर उसी ख़ानदान के दूसरे पीर मौजूद हों तो उनके पास चले जाने में कोई हर्ज नहीं। अगर ये दूसरे शैख़ कोई ऐसी नयी बात बतलाए जो पहले शैख़

ने न बतलाई हो उस पर फ़ौरन कारबन्द हो जाए।

118. सालिक को चाहिए कि वह कभी शोहरत या नामवरी का तालिब न हो। शोहरत सालिक के लिए आफ़त है।

119. अगर सालिक का ज़िक्र व मराक़िबा की तरफ़ बेहद रग़बत हो तो उनमें इस दरजा मशग़ूल न होना चाहिए कि मुक़र्रह औरादू वजाईफ़ कज़ा हो जाए।

120. नमाज़ और ज़िक्र में भी मुराक़िबा का लिहाज़ रखना चाहिए। बुज़ुर्गों का तरीक़ा ये है कि खाने-पीने और बात चीत में भी मुराक़िब रहते हैं।

तवक्कुल और मुजाहिदा

121. अगर मुरीद अयालदार हो और इतनी आमदनी रखता हो जिससे बाल बच्चों का गुज़ार-बसर हो सकता हो तो वह सब कुछ बाल-बच्चों के हवाले करके ख़ुद बेफ़राग़त इस तरह मुतवज्जोह हो जाए और अगर उसकी मेहनत व मशक़्क़त के बग़ैर बीवी-बच्चें का गुज़ारा मुहाल हो तो ऐसी हालत में उसे अपने कारोबार में ऐसा वक़्त फ़ुरसत का निकालना चाहिए जिसमें बफ़राग़त इबादत में मशग़ूल हो सके।

122. मुरीद को ज़ाहिरी ज़ीनत व अराइश की कोशिश न करनी चाहिए। अच्छे कपड़े पहनना और अच्छा खाना मुरीदों का काम नहीं है।

123. मुरीद को दुनियावी मामलात से किनाराकश रहना चाहिए। अदालत में गवाही के लिए अदालत या हाकिम के पास मुरीद को ना जाना चाहिए।

124. मुरीद को खुदा से अहद करना चाहिए कि दुनिया ... आख़िरत में किसी से झगड़ा न करेगा। अगर कोई ... मुरीद पर ज़ुल्म करे तो उसे चाहिए कि दिल से बख़्श ... मुरीद को मज़लूम बनना जायज़ है।

125. मुरीद को चाहिए कि उसे जो कुछ मय्यसर हो उसी ... क़नाअत करे। इस फ़िक्र में न रहे कि दिन में क्या खाऊँगा ... रात कैसे बसर होगी?

126. मुरीद को चाहिए कि बग़ैर असद ज़रूरी के कर्ज़ न ले।

127. मुरीद को चाहिए कि फ़ाक़ा को ग़नीमत जाने। भूख-प्यास की हालत में जिस क़दर कुर्बे इलाही हासिल होता है, दूसरे किसी वक़्त में नहीं होता। यही सबब है कि अक्सर अम्बिया और औलिया ने भूख-प्यास को इख़्तियार किया है, फ़ाक़ा से रूहानी तसफ़िया व तजल्लिया होता है।

128. तालिब को हमेशा ख़िलवतपसन्द रहना चाहिए। मुरीद का काम इन दोनों कामों के सिवा और कोई न होना चाहिए-

(1) हर वक़्त दोस्त में मशगूल रहे,

(2) या दोस्त की याद में।

129. सालिक को हज़लियात और हँसी-मज़ाक़, क़हक़हा, फ़ह्श ... बातों से परहेज़ ज़रूरी है।

130. अगर नफ़्स को किसी चीज़ की बेहद ख़्वाहिश हो और वह चीज़ मुबाह हो तो कुछ ख़्वाहिश पूरी करदे ताकि बे-तश्वीश के राह चलना सहल हो। अगर ख़्वाहिश ना मशरूअ हो तो हरगिज़-हरगिज़ इसको पूरा न करे।

131. ख़यालात की यकसूई के लिए नशा का इस्तेमाल हरगिज़ न ...

नहीं।

132. खाने में चिकनाई का इस्तेमाल एक मुनासिब हद तक जायज़ है। चिकनाई से दिमाग़ में तरी, जिस्म में ताक़त आएगी। इबादत की कुव्वत बरक़रार रहेगी।

133. सालिक को हर वक़्त यादे हक़ में मशगूल रहना चाहिए। सालिक के नज़दीक हुजरा का गोशा और बाज़ार यकसाँ होना चाहिए।

134. सालिक को इस राह में जिस क़द्र मुशकिलात पैदा हों सब पर सब्र करे और निहायत अलहाह व ज़ारी से कशूदकार की दुआ माँगे।

135. अगर सालिक बीमार हो जाए या किसी आफ़त व मुसीबत में मुब्तिला हो जाए तो हर्फ़े शिकायत ज़बान पर न लाए।

136. बीमारी में जहाँ तक हो सके कोई विर्दे वज़ीफ़ा नाग़ा न करे।

पीरी - मुरीदी

पहला क़दम

दुरवेशी में पहला क़दम रखते ही सालिक को हस्ब ज़ैल उमूर की पाबन्दी लाज़मी है-

(1) तमाम गुनाहों से तौबा की जाए। (2) जो नमाज़ें तर्क हो गई हों उनकी कज़ा करे। (3) जिन लोगों के हुक़ूक़ वाजिब हों उन्हें पूरा करे या माफ़ कराए। हुक़ूक़ुल इबाद की अदाएगी के बग़ैर खुदारसी का वहम भी दिल में न लाना चाहिए। (4) तौबा करने में इस बात का ख़ास तौर पर लिहाज़ रखना चाहिए कि एहकाम इलाही की बजाआवरी में ख़्वाह कितनी ही तकलीफ़ का सामना क्यों न हो, माल-दौलत पर ज़वाल क्यो न आ जाए, जान पर क्यों न आ बने, दुनिया के फ़ायदों से महरूम होना क्यों न पड़े, एहकाम इलाही पूरे इख़लास से अंजाम दूँगा।

दूसरा क़दम

इसके बाद दूसरा क़दम यह होना चाहिए कि शैख़ कामिल की जुस्तुजू की जाए। शैख़ में हस्बज़ैल सिफ़ात की मौजूदगी ज़रूरी है-

(1) जो आलिमे दीन हो। (2) जो शैख़ कामिल का तरबियत याफ़ता हो। (3) जिसकी मजलिस में बैठने से खुदा की मुहब्बत में ज़्यादती और दुनियावी मुहब्बत में कमी हो।

बैअत के अग़राज़ व मक़ासिद

(1) बैअत या मुरीद होने की ग़र्ज़ यह है कि खुदा तक

पहुँचने के लिएं शैख़ का वास्ता और राबता हासिल हो जाए, ताकि सालिक बेराहरवी से महफ़ूज़ हो जाए और वह कोई ग़लत क़दम न उठा सके। (2) मुरीद होनेवाले को यह ख़याल भी न लाना चाहिए कि मुरीद होते ही कशफ़ होने लगेगा, ग़ैब की बातें मालूम होने लगेंगी। (3) न कभी मुरीद को यह बात ज़ेहन में लानी चाहिए कि मुरीद होने से शैख़ क़यामत के दिन शफ़ाअत का ज़िम्मेदार हो जाएगा या पीर तमाम गुनाह माफ़ करा देगा। ये बातें ख़ुदा की ताअत और नेक आमाल से ही हासिल होती हैं। (4) गो पीर व मुर्शिद एक निगाह में तालिब को बाकमाल बना सकता है लेकिन इस उम्मीद पर मुजाहिदात से ग़फ़लत और एहकामात से लापरवाही सख़्त गुमराही है।

(5) बैअत का मंशा हुसूल रजाए इलाही है। उमूर मुतज़क्करा बाला की ख़्वाहिश खुली हुई ग़ैरत है। तालिबे हक़ का पहला क़दम यही ग़ैरत है। लाइला-ह इल्लल्लाह।

(6) तालिबे हक़ के लिए ज़रूरी है कि कुछ अर्से अपने शैख़ की सोहबत में रहकर फ़ैज़याब हो। सालिक के लिए शैख़ की सोहबत और शैख़ की ख़िदमत एक निहायत ज़रूरी उमूर है। शैख़ जो अज़कार व अशग़ाल की तालीम दे, पूरी तवज्जोह के साथ अंजाम देता रहे।

मुजाहिदा ज़रूरी है

नफ़्स को मग़लूब और मतलूब करने के लिए मुजाहिदा तालिबे हक़ के लिए निहायत ज़रूरी है। मुजाहिदा से ही सालिक को क़ुर्बे इलाही का रास्ता नज़र आता है। हुज़ूर संरवरे कायनात (सल्ल०) बावजूद मासूम और महबूबे ख़ुदा होने के इस क़दर

रियाज़त फ़रमाते थे कि पाँवों पर वरम आ जाता था, अंगूठे शक़ हो जाते थे, औलियाये किराम भी नबी व पैग़म्बर का अक्स और वारिस उलूम नुबूव्वत व रिसालत होते हैं। उनको यह दरजा और मरतबा रियाज़त व मुजाहिदात के बाद ही मिलता है। ख़्वाजा ग़रीब नवाज (रह०) को बवुजूद कि हज़रत ख़्वाजा उस्मान हारूनी (रह०) पहली ही नज़र में खुदा तक पहुँचा दिया था, मगर इसके बावजूद उन्होंने इतिकाफ़ के चिल्ले किए। ख़िलवत कदों में यादे इलाही की, सफ़र हज के मौके़ पर पीरो मुर्शिद का सामान सर पर उठाए फिरे, खरका ख़िलाफ़त मिलने के बाद वफ़ात तक एक घड़ी एसी नहीं गुज़री जो इबादत और यादे खुदा से ख़ाली हो। मामूली मुजाहिदा यह था कि दिन-रात में कुरआन शरीफ़ ख़त्म फ़रमाते थे। शब बेदारी नवाफ़िल और यादे इलाही ख़्वाजा ग़रीब नवाज की ज़िंदगी के मामूलात थे।

राह सुलूक में कामिल मुजाहिदा और रियाज़त शाक़ा के बग़ैर मुक़ामात अला तक रसाई नामुमकिन है । इन सबमें आसान मुजाहिदा तिलावत कुरआन और नवाफ़िल पढ़ने का है। नवाफ़िल पढ़ने से मक़ाम फ़ना हासिल होकर कुर्बे खुदावन्दी हासिल हो जाता है। मुरीद को मुजाहिदा का जो तरीक़ा पीरो मुर्शिद बताए उसी तरीक़े पर अमल पैरा होना चाहिए।

सूफ़ी सादिक़

दरहक़ीक़त सच्चा सूफ़ी वही है जिसका ग़ैर से इंक़िता और असल से वस्ल हो, यानी जिसका क़ौल और अमल कुरआन और सुन्ते रसूल (सल्ल०) के मुताबिक़ न हो तो वह एक ठग से ज़्यादा वक़अत नहीं रखता । दरजा कमाल हासिल होने के बाद भी इबादत साहबे कमाल के लिए ज़रूरी है। हुज़ूर सरवरे कायनात (सल्ल०) हमेशा सर बसुजूद रहने के बावजूद हक़ तआला से फ़रमाया करते

थे- माअब्द ना-क- हक़ इबादतिक। इसलिए पीर के इंतिख़ाब में सबसे पहले ये बात निहायत ज़रूरी और क़ाबिल लिहाज़ है कि वह मुतबे सुन्नत है या नहीं। इसलिए कि तौहीद और शिर्क की हदें आपस में मिली हुई हैं। यह न हो कि ज़रा-सी लग़ज़िश से शिर्क की तरफ़ क़दम बढ़ जाए और उल्टी नाड़ गले पड़े। इस दुनिया में ऐसे दुरवेश भी मौजूद हैं जो ज़बान से कह देते हैं वह पूरा हो जाता है, जिस बात की ख़बर देते हैं, आँखों के सामने आ जाती है। शैतान का परसतार और ग़ैबात के आमिल ऐसे-ऐसे शुबदे दिखा सकता है, जिससे अक़्ल इंसानी दंग रह जाती है। ऐसा न हो कि तुम ऐसे ही आदमी के हाथ में अपना हाथ दे बैठो। उसकी जिंदगी को अच्छी तरह जाँच लो कि वह पैग़म्बरे इस्लाम के साँचे में ढली हुई है या नहीं। अगर वह मुतबा सुन्नते रसूल है तो सुबहानल्लाह। वरना ऐसे शख़्स के क़रीब भी मत जाओ। जो पल्ले है वह भी खो बैठोगे।

तसव्वुफ़ का इसासी मक़सद

तसव्वुफ़ का हक़ीकी मक़सद तज़किया नफ़्स है। उसी तज़किये नफ़्स के लिए मुजाहिदा किए जाते हैं। इंसान जब तक दुनियावी लज़्ज़तों और ख़्वाहिशों में उलझा रहता है, ग़फ़लत और वसविसें के हुजूम से उसका दिल स्याह हो जाता है। दिल पर स्याही का छा जाना दिल की मौत है। जब दिल ही मर गया तो बाक़ी क्या रहा। बंजर ज़मीन में तुख़्म पाशी से क्या फ़ायदा। ज़मीन में रूईदगी की क़ुवत होनी चाहिए। जब तक दिल के आईने से रंग दूर न किया जाएगा, ख़ुदा तआला तक रसाई हासिल न होगी।

जब सालिक शरीअत पर अमल करता है तो ख़ुदा उसका दरजा बढ़ाता है और उसको तरीक़त में दाख़िल कर देता है, और

अगर इससे तरक़्क़ी करता है तो खुदा मारफ़त का दरजा अता फ़रमाता है। इसके बाद हक़ीक़त की राहें खुल जाती हैं, क़ल्ब में रौशनी पैदा होती है। और जो खुदा से माँगता है, मिलता है।

क़ियामत के दिन दुनिया का हिसाब पचास जगह होगा और पचास चीज़ों के मुतल्लिक़ सवाल होगा। अगर बन्दा ईमानदार है तो जवाब ठीक-ठीक देगा, वरना दोज़ख़ में डाल दिया जाएगा। हक़ीक़त में ईमानदार वही लोग हैं कि जब उनके सामने कुरआन तिलावत किया जाए तो उनके दिल में हैबत हो और इमान व एतिक़ाद में इज़ाफ़ा हो।

हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी (रह०) फ़रमाया करते थे कि मुझे पीरो मुर्शिद से जो कुछ मिला उसको हमेशा दूर रखा। तुमको भी यही हिदायत है कि मुक़र्ररह वज़ीफ़ा कभी नाग़ा न करो। सालिक को चाहिए कि पहले अपने नफ़्स को तलाक़ दे फिर दुनिया को, फिर माफ़ीहा को, इसके बाद सुलूक में क़दम रखे। दुरवेशी इसका नाम है कि पास आनेवाला कोई महरूम न रह जाए। अगर भूखा हो तो पेटभर खाना खिलाया जाए। नंगा हो तो कपड़ा पहनाया जाए। हाज़तमन्द हो तो उसकी ज़रूरत पूरी की जाए।

सब कुछ उसी का है

बाबा जो कुछ तेरे पास हो ख़र्च कर डाल। अपने पास एक पैसा न रख, तेरे पास जो नेमत है, उसी की दी हुई है।

खुदा के दोस्तों की ख़स्लतें

ये ख़स्लतें खुदा के उस बन्दे में होती हैं जिनको खुदा दोस्त रखता है (1) दरया की-सी सख़ावत। (2) आफ़ताब की-सी शफ़्क़त। (3) ज़मीन की-सी तवाज़ो।

अलामते मुहब्बत

मुहब्बत की अलामत यह है कि महबूब का फ़रमांबरदार रहे और डरता रहे कि कहीं महबूब ख़फ़ा न हो जाए, निकाल न दे।

आरिफ़ बिल्लाह की शनाख़्त

जिन लोगों को ख़ुदा की मारफ़त हासिल है उनकी अलामत यह है कि वह ख़िलक़त से दूर भागते हैं और किसी से कलाम नहीं करते।

नमाज़ मोजिबे क़ुर्बे इलाही है

मनज़िले क़ुर्ब में बनदा को इतना क़ुर्ब हासिल नहीं होता जितना नमाज़ में हासिल होता है।

मक़ामात तौहीद

तौहीद के कई मक़ामात हैं- जाहिलों से दूर रहना, दुनिया को छोड़ देना, मुतकब्बिरों से भागना, महबूब को पहचाना और कसरत से ख़ैरात करना।

दुरवेश के औसाफ़

दुरवेश वह है जिसमें ये चार सिफ़ात मौजूद हों-

1. दुरवेशी में तवंगरी, *2.* भूख पर सब्र, *3.* ग़म पर इज़हारे मुसर्रत और *4.* किसी के साथ दुश्मनी न करना।

अज़ाबे इलाही को दावत

जानवर को बेरहमी से मारना अज़ाब ख़ुदावन्दी को दावत देता है।

ईमान की अलामत

मोमिन मौत, फ़क़ीरी और बीमारी को अज़ीज़ रखता है

जिसमें ख़ुदा का ख़ौफ़ होता है, उससे सब डरते हैं।

करामात

एक शख़्स ने हज़रत कुत्बुल अक़ताब से अर्ज़ किया कि मैं ग़रीब नादार हूँ। कुछ मेरी इमदाद फ़रमाए। हज़रत साहब ने फ़रमाया कि अगर मैं तुझसे कहूँ कि मुझे अर्शे आज़म नज़र आता है तो क्या तू इस बात को याद करेगा। उस आदमी ने जवाब दिया : बेशक हज़रत कुत्ब साहब ने फ़रमाया कि तेरे घर में *70* रुपये रखे हैं, पहले उन्हें ख़र्च करदे। इसके बाद नादारी की शिकायत करना। ये सुनकर वह आदमी बहुत शर्मिन्दा हुआ और चुपचाप वापिस चला गया।

बक़रीद के दिन आपकी मजलिस में हज ज़ियारत का ज़िक्र हो रहा था। आपने फ़रमाया कि अल्लाह के बन्दे ऐसे भी हैं जिनकी ज़ियारत के लिए ख़ाने काबा खुद उनके घर आता है। अभी आपकी ज़बान मुबारक से ये अलफ़ाज़ पूरे न हुए थे कि काबा सामने नज़र आया। सब हाज़िरीन ने तवाफ़ और ज़ियारत की। एक रोज़ नासिरी शायर हज़रत कुत्बुल अक़ताब की ख़िदम में हाज़िर हुआ। दुआ का तालिब हुआ। आपने फ़मारया कि तुम्हें बहुत-सा इनाम मिलेगा। अगले दिन वह शायर एक क़सीदा लिखकर सुल्तान शम्सुद्दीन के दरबार में हाज़िर हुआ। क़सीदा पेश किया। बादशाह को बहुत पसन्द आया। इस क़सीदे में नासिरी ने *56* अशआर लिखे थे। सुल्तान ने *56* हज़ार रुपये नक़द अता फ़रमाया । शायर मज़कूर वह रुपये लेकर आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुआ और सब रुपये आपके सामने रख दिए। अर्ज़ गुज़ार हुआः हज़रत इसमें कुछ क़बूल फ़रमा लीजिए।

आपने फ़रमाया : नहीं, नहीं, ले जाओ, उठाकर अपने बच्चों के पास ले जाओ। यह उनका हक़ है।

हज़रत ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया हर जुमेरात को ज़ियारत के लिए मज़ार अक़दस पर तशरीफ़ ले जाया करते थे। एक रोज़ रास्ते में आपके दिल में ख़याल आया कि न मालूम हज़रत कुत्ब साहब को मेरी हाज़िरी की इत्तिला होती है या नहीं।जब हज़रत महबूब इलाही दरगाह शरीफ़ में हाज़िर हुए। देखा हज़रत क़ुतुब साहब क़ब्र मुबारक पर तशरीफ़ फ़रमा हैं।

हज़रत अमीर ख़ुसरो ने अफ़ज़लुलफ़वायद में तहरीर फ़रमाया है कि एक फ़ासिक़ व फ़ाजिर आदमी इन्तिक़ाल के बाद हज़रत कुत्बुल अक़ताब के पाइंती मदफ़ून हुआ। लोगों ने ख़्वाब में उसे बहिशत में सैर करते देखा। पूछा तूने कौन-सा ऐसा अमल किया था जिसके बदले तुझे जन्नत नसीब हुई। उस आदमी ने जवाब दिया कि जब अज़ाब के फ़रिश्ते मेरी क़ब्र में आए तो आप की रूह मुबारक को तकलीफ़ महसूस हुई। हक़ तआला ने मेरे गुनाह माफ़ फ़रमा दिए और अपनी रहमत से बख़्श दिया।

इमारात क़ुत्ब साहब

महरौली शरीफ़ एक छोटा-सा क़स्बा शहर देहली से गोशा जनूब व मग़रिब में 11 मील के फ़ासले पर है। जहाँ क़ुत्ब की लाठी और हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब ख़्वाजा क़ुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी (रह०) जानशीन सुलतान अलहिन्द हज़रत ख़्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती अजमेरी (रह०) का असताना है। हिन्दुस्तान में इस्लामी हुकूमत से पहले शहर देहली इसी जगह आबाद था, जहाँ क़ुत्ब की लाठी और हज़रत ख़्वाजा क़ुत्बुद्दीन बख़्तियार काकी (रह०) का मज़ार अक़दस है। यहीं हिन्दुस्तान का महाराजा पृथ्वी राज का निहायत वसी व अरीज़ क़िला था। इसी क़िले के अहाते में शहर आबाद था जो देहली के नाम से मौसूम था। महाराजा पृथ्वी राज अजमेर में रहा करते थे। देहली की ज़माम हुकूमत उसके भाई खाण्डेराव के हाथ में थी। सातवीं सदी हिजरी में हिन्दुस्तान में मुख़तलिफ़ राजगान हुक्मरानी करते थे। ये राजा अपने-अपने इलाके के मालिक थे, हाकिम थे। उस हुकमराँ तबक़े में महाराजा पृथ्वी राज को वही हैसियत हासिल थी ज़ो एक शहनशाह की होती है। इसीलिए वह महाराजा (यानी शहनशाह) कहलाते थे।

577 हि० में सुल्तान शहाबुद्दीन ग़ौरी ने महाराजा पृथ्वी राज को शिकस्त दी थी। इसी ज़माने में यह क़िला पूरे इस्तेहकाम और आब व ताब के साथ मौजूद था।2–4 बादशाहों के बाद मुसलमान बादशाहों ने नई देहली (शहर) आबाद किया तो क़दीम देहली की रौनक़ रुख़सत हो गई। महाराजा का क़िला भी इसी इनक़लाब के नज़्र हो गया। हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी हुकूमत के क़याम तक क़िला की दिवारें कहीं-कहीं क़ायम थीं। अब इस क़िले की बुनियाद या कहीं–कहीं टूटी हुई दीवार का टुकड़ा दुनिया की फ़ना का दर्स ज़बान हाल से दे रहा है। देहली में हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब की तशरीफ़आवरी का मफ़स्सल तज़किरा गुज़श्ता सफ़ाहात में पेश किया जा चुका है। इसलिए इसको यहाँ दोहराने की ज़रूरत नहीं। हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब (रह०), हज़रत ख़्वाजा हमीदुद्दीन नागौरी इस्लामी हुकूमत के इब्तिदाई दौर में इसी शहर में सकूनत पज़ीर रहे। इसी शहर में हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब का रिहयाशी मकान था। इसी शहर में हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी का मकान था, जहाँ समा की महफ़िलें गर्म रहती थीं।

शहाबुद्दीन ग़ौरी के गवर्नर जनरल क़ुत्बुद्दीन ऐबक और उसके बाद हज़रत सुल्तान शम्सुद्दीन अलतमश की राजधानी यही शहर थी जो अब खण्डरात की सूरत में कोसों तक मौजूद हैं और आबादी के लिहाज़ से एक बड़े मौज़ा या क़स्बा की सूरत इख़्तियार किए हुए है। महरौली में जिस जगह हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब का मज़ार मुबारक है यह जगह हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब ने पसन्द करके ख़रीद फ़रमाई थी। हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब का ख़ादिम मिर्ज़ा मुबारक शैख़ूलइस्लाम हज़रत बाबा फ़रीदुद्दीन मसऊदी गंज शकर और

दीगर औलियाए किराम ने अपने सरों पर मिट्टी की टोकरियाँ उठा-उठाकर तामीर किया था। उस ज़माने में न मज़ार के गिर्द कोई चारदिवारी थी, न शानदार दरवाज़े थे। सलातीन और उमरा ने बतौर इज़हार अक़ीदत मज़ार मुबारक तामीर कराया। चारदिवारी बनवाई। शानदार दरवाज़े, मस्जिद और बावड़ी तामीर कराई।

आज़ादी सन् *1947* से पेशतर हर जुमेरात को दरगाह शरीफ़ में एक मेला लगता था। अजमेरी गेट और चौक जामा मस्जिद से सैकड़ों तांगे कुत्ब साहब जाया करते थे। उर्स के ज़माने का तो हाल न पूछो। लाखों ज़ाइरीन से महरौली जैसा छोटा-सा क़स्बा एक बड़ा भारी शहर मालूम होता था। दुकानदारों की इस क़दर भीड़ होती थीं कि माला-माल हो जाते थे, मगर आज़ादी सन् *1947* के बाद ये बातें ख़्वाब व ख़याल हो गईं। मुलसमान इक़्तसादी और माअशी लूटमार के शिकार होकर बरबाद हो गए। पेट के फ़िक्र से ही फ़ुर्सत नहीं कि सैरो तफ़रीह या रूहानी फयुज़ो बरकात हासिल करने मज़ारात पर जाएँ।

इमारात आसतानए आलिया

महरौली पहुँचते ही बस कुत्बमीनार के दरवाज़े के सामने रुकती है जहाँ आम तौर पर मुस्लिम व ग़ैर मुस्लिम सैयाह अज़ीमुश्शान व सर-ब-फ़लक़ मीनार को देखने के लिए उतर पड़ते हैं, ज़ाइरीन को इस मक़ाम पर उतरना न चाहिए। यहाँ से *4–5* फ़लांग आगे पुलिस स्टेशन के सामने बस स्टैण्ड है। बस स्टैण्ड से आधे फ़लांग के फ़ासले पर हज़रत कुत्बुल अक़ताब का आसताना है। बस स्टैण्ड पर गाड़ी से उतरकर डाकख़ाने के बराबर दरगाह आली को रास्ता जाता है। डाकख़ाना से *40–50* क़दम चलकर एक गली बाएँ हाथ

को जाती है जो ज़ाइरीन को दरगाह शरीफ़ के शुमाली दरवाज़े पर पहुँचा देती है। सामने सीधे रुख़ पर दिल्ली के आख़िरी बादशाह के महल का दरवाज़ा नज़र आता है। उसी दरवाज़े से मुतसिल दरगाह शरीफ़ का अरबी दरवाज़ा है।

किताब हाज़ा का यह बाब चूँकि सिर्फ़ ज़ाइरीन की हिदायत, रहनुमाई के लिए मख़सूस है। इसीलिए हम शुमाली दरवाज़े से इमारत दरगाह शरीफ़ के हालात तहरीर करते हैं, ताकि ज़ाइरीन को बेग़ैर किसी रहनुमाई के दरगाह शरीफ़ के मुतल्लिक पूरे-पूरे मालूमात हासिल हो जाएँ।

शुमाली दरवाज़े का अहाता

तारीख़ की किताबों में मज़कूर है कि शेरशाह सूरी (पठान बादशाह) के अहद तक हज़रत कुत्बुल अक़ताब के मज़ार मुबारक की कोई चारदिवारी न थी। एक दिन शेरशाह सूरी शिकार खेलता-खेलता इधर आ निकला। उसे यह देखकर ये ख़याल पैदा हुआ कि इस मुतबर्रक ज़मीन की सिम्त व वक़ार को बहाल रखने के लिए जहाँ हज़रत कुत्बुल अक़ताब आसूदा ख़्वाब हैं इर्द-गिर्द चारदिवारी की ज़रूरत है ताकि ज़ाइरीन इस हद तक पहुँचकर हज़रत कुत्बुल अक़ताब के तक़द्दुस व अज़मत से बाख़बर हो कर, जुतियाँ उतारकर नंगे पैर हो जाएँ और अदब व एहतिराम के साथ ज़ियारत की सआदत हासिल करें।

शेरशाह सूरी के हुक्म से अमीरुलउमरा ख़लीलुल्लाह ख़ान के ज़ेरे एहतिमाम सन् *948* हि० में एक बड़ा लम्बी-चौड़ी चारदिवारी तामीर हो गई। अन्दर आने के चार दरवाज़े रखे। उन्हीं दरवाज़े में से एक शुमाली दरवाज़ा है। मेहराब की पेशानी पर तारीख़ तामीर

है। उन चार दरवाज़ों पर संगमरमर के कुतबे नसब थे। शेरशाह सूरी के बाद दूसरे सलातीन ने दरगाह शरीफ़ की तामीराते इमारात में हिस्सा लिया। शेरशाह सूरी के ज़माने की चारदिवारी मादूम हो गई, सिर्फ़ ये शुमाली दरवाज़ा उसकी यादगार के तौर पर बाक़ी है।

शुमाली दरवाज़े में दाख़िल होते ही तक़रीबन *50* क़दम के फ़ासले पर अहाता दरगाह शरीफ़ का दूसरा दरवाज़ा है। इन दोनों दरवाज़ों के माबैन दायें जानिब कुछ हुजरे और मजारात है। बायें जानिब कुछ और टूटे-फूटे खण्डरात हैं। दूसरे दरवाज़े में दाख़िल होकर दायें हाथ को अहद आलमगीर गाज़ी के मज़ारात और मस्जिद हैं। इस अहाते में मुअतमद ख़ान की क़ब्र है जो क़िला जात आगरा व ग्वालियार का क़िलादार था। दरवाज़े पर संगमरमर की दस तख़्तियों पर तारीख़े वफ़ात कुन्द है। बायें हाथ पर ख़्वाजा हिलाल कुतबी (सज्जादा नशीन) का रिहायशी मकान है। सामने ही *5–7* क़दम के फ़ासले पर अहाता दरगाह शरीफ़ का तीसरा दरवाज़ा है।

तीसरे दरवाज़े में दाख़िल होते ही बाईं तरफ़ चबूतरे पर कुछ मज़ारात और दरगाह शरीफ़ की मस्जिद है। दाहिनी तरफ़ रौज़ा मुबारक की ख़ुशनुमा जालियाँ है। आगे *20–25* क़दम के फ़ासले पर चौथा दरवाज़ा है जहाँ से गुज़रकर दाहिने हाथ पर हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब का मज़ार मुबारक है।

मस्जिद दरगाह शरीफ़

हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब और दीगर औलियाए कामेलीन ने इस जगह एक छोटी-सी ख़ाम मस्जिद तामीर की थी, जो गारे -मिट्टी की तामीर थी। इस मस्जिद की सिर्फ़ एक महराब थी जो तौसीअ के बाद आज भी मौजूद है। शेरशाह सूरी के बाद इस्लाम

शाह सूरी ने 958 हि० में मस्जिद मज़कूर का एक दरजा बढ़ाकर मस्जिद की तौसीअ की और मज़ार शरीफ़ के इर्द-गिर्द कई चारदिवारी तामीर कराई। ये मस्जिद तौसीअ के बाद कई सदियों तक इसी हालत पर रही। मुग़ल शहनशाह फ़र्रुख़ सेर ने सन् 1130 हि० में मस्दिज के इन दोनों दरवाज़ों के आगे एक और वसीअ दरवाज़ा तामीर कराया, जिससे मस्जिद की वुसअत में इज़ाफ़ा हो गया था। साथ ही साथ मज़ार शरीफ़ के इर्द-गिर्द संगमरमर की खुशनुमा जालियों का अहाता और संगमरमर के खुशनुमा दरवाज़े तामीर कराए। मस्जिद के तीसरे दरवाज़े कें दरमियान मेहराब के ऊपर सन् तामीर कुन्दा है।

मस्जिद दरगाह शरीफ़ की मौजूदा इमारत मुरब्बा नहीं है क्योंकि गोशा जनूब में तीन मज़ारें हैं-

1. हज़रत निज़ामुद्दीन अबुलमुवीद (रह०), 2. मज़ार हज़रत बीबी सारा और 3. मज़ार हज़रत मौलाना फ़खरुद्दीन साहब।

मज़ार मुबारक अहलिया मुहतरमा व दाया हज़रत कुत्ब

मस्जिद दरगाह से मुतसल ही जानिबे जनूब व मशरिक़ एक दरवाज़ा है, जिसमें बतलाया जाता है कि जानिब क़िब्ला हज़रत कुत्बु अक़ताब की अहलिया मुहतरमा का मज़ार मुबारक है और इनके बराबर उनकी दाया का मज़ार है। वाकेआत दारुल हुकूमत में अहलिया मुहतरमा का नाम बीबी हंबल मज़कूर है। हज़रत की अहलिया मुहतरमा के सरहाने एक तनावर नीम का दरख़्त है जिसकी खुसूसियत यह है कि इसके पत्तों में तलखी नहीं। नीम के पत्ते, नीम की छाल जिस क़दर तल्ख़ होती है हर शख़्स को मालूम है। आप बिला तकल्लुफ़ इस नीम की पत्ती चबा जाइए, तल्ख़ी नाम को भी महसूस न होगी। इस नीम के मुतल्लिक़ यह रिवायत मशहूर है कि

हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने एक रोज़ नीम की शाख़ से मिसवाक फ़रमाई थी। वह मिसवाक ज़मीन पर पड़ी थी। उसमें से शाख़ और पत्तियाँ फूट आईं और तनावर दरख़्त बन गया।

लंगरख़ाना

इस हुजरे के बग़ल में एक संगीन इमारत जानिब शुमाल मुलहक़ है। यहाँ दोनों वक़्त फ़क़ीरों को लंगर तक़्सीम होता है। फ़ुक़रा मुतवक्कलीन का उसी लंगर पर गुज़र-बसर औक़ात का मदार है। फ़सादात *1947* से पहले इस लंगरख़ाने से सैकड़ों फ़ुक़रा दोनों वक़्त शिकम सेर होते थे। *1947* में मुसलमानो के इख़्लिा से फ़ुक़रा की एक बड़ी तादाद पाकिस्तान चली गई थी। फिर भी दोनों वक़्त लंगर की तक़सीम के वक़्त फ़ुक़रा की ख़ासी तादाद नज़र आती है। लंगरखाने के सेहन में और ख़्वाजा हलाल क़तबी के हुजरे और वुज़ूख़ाना के दरमियान बीसों पुख़्ता क़दीमी मज़ारात हैं।

समाख़ाना

क़व्वालों को हज़रत कुत्बुल अक़ताब के मज़ार मुबारक पर मस्जिद में गाने की इजाज़त नहीं। दरगाह शरीफ़ का समाख़ाना मस्जिद दरगाह के जानिब जनूब वाक़े है। समाख़ाना के नीचे भी वसीअ सेहन है, जानिब ग़र्ब मुतअद्दद पुख़्ता मज़ाारात हैं। उर्स के मौक़े पर क़व्वाली इसी सेहन में होती है।

समाख़ाने के *2* दालान आगे-पीछे हैं। सेहन में और समा ख़ाने में मजमूई तौर पर कई हज़ार आदमियों के बैठने की गुंजाइश है। यह इमारत सन् *1787* में ज़ाब्ता ख़ान ने बनवाई थी। उन्हीं इमारत से मुतसल ज़ाब्ता ख़ान और उसकी बीवी की क़ब्र है। यहीं

नवाब ख़ाँ क़ासिम जान मदफ़ून है जिनके नाम से गली क़ासिम जान, मोहल्ला बल्लीमारान में मौसूम है। हकीम अजमल ख़ाँ के दादा हकीम मोहम्मद शरीफ़ भी मदफ़ून हैं। बराबर ही में शैख़ हसीन फ़िरोज़ का मज़ार है जिनके मुतल्लिक़ यह मशहूर है कि वह मिट्टी की गोलियाँ बनाते थे, कुदरते खुदावन्दी से वह मोती बन जाते थे।

बावड़ी

ये बावड़ी नदीमुद्दौला ख़लीफ़ा अलमुल्क हाफिज़ मुहम्मद दाऊद ख़ाँ ने मस्जिद के लिए बातौर हौज़ सन् *1260* में बनवानी शुरू की थी। *3* साल में तामीर मुकम्मल हुई। ये बावड़ी सतह सेहन मस्जिद से तक़रीबन *125* फिट गहरी है। तौल व अर्ज़ तक़रीबन *30–30* फिट है। समाख़ाना और मस्जिद के दरमियान नीम के नीचे बावड़ी में उतरने का ज़ीना है। उर्स के मौक़े पर देहली के तैराक *100* फिट की बुलन्दी से बावड़ी में छलांग लगाकर फ़न तैराकी का मुज़ाहिरा किया करते थे। सन् *1947* के बाद बावड़ी में उतरने का रास्त बन्द कर दिया गया है। सफ़ाई न होने के बाअस आजकल पानी निहायत गंदी हालत में है।

मज़ारात अन्दूरूने बग़ल मस्जिद दरगाह शरीफ़

मस्जिद दरगाह शरीफ़ की बायें बग़ल में तीन मज़ारात हैं–

1. मज़ार हज़रत निज़ामुद्दीन अबुलमुवीद, *2.* मज़ार हज़रत बीबी सारा, (वालिदा) हज़रत निज़ामुद्दीन अबुलमुवीद और *3.* मज़ार मुबारक फ़ख़रुल मिल्लत वालिदैन हज़रत मौलाना फ़ख़रूद्दीन साहब बिन हज़रत मौलना निजामुद्दीन साहब औरंगाबादी ख़लीफ़ा आज़म कुत्बुल आलम हज़रत शैख़ कलीमुल्लाह शाहजहाँबादी मुजद्दिद

सिलसिला आलिया निज़ामिया। आपका मज़ार मुबारक इस दरवाज़े से मुत्तसिल है जो समाख़ाना से दरगाह शरीफ़ में जाने का है। आपका मज़ार मुबारक सफ़ेद संगमरमर का है।

सिलसिले निज़ामिया फ़ख़रिया आप ही से जारी हुआ। हिन्दुस्तान में अक्सर निज़ामी ख़ानक़ाहें आप ही के सिलसिले की हैं। हज़रत शैख़ कलीमुल्लाह शाहजहाँवादी आपके दादा पीर थे।

हज़रत मौलाना फ़ख़रुद्दीन के मज़ार मुबारक के चबूतरे पर बराबर में सुल्तान शम्सुद्दीन अल्तमश के एक साहबजादे की क़ब्र है।

दरवाज़ा आस्ताना आलिया हज़रत कुत्बुल अक़ताब

यह दरवाज़ा और संगमरमर की जालियाँ मुग़ल शहंशाह फ़र्रुख़ सेर ने सन् *1120* हि० में तामीर कराया था।

इसी दरवाज़े से मुत्तसिल बाईं तरफ़ ऊँची कुर्सी पर हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नागौरी का मज़ार मुबारक है। हज़रत क़ाज़ी साहब हज़रत कुत्बुल अक़ताब के उस्ताद थे। उस्ताद होने के बावजूद वह हज़रत कुत्बुल अक़ताब का हद दरजा अदब व एहतिराम किया करते थे। बारगाह कुत्बुल अक़ताब के मख़सूसी मुकर्रबीन में से थे। *11* रमज़ानुल मुबारक सन् *695* हि० तारीख़ वेसाल है। मज़ार शरीफ़ सन् *774* हि० में तामीर हुआ।

अब आप हज़रत कुत्बुल अक़ताब के मज़ारे अक़दस पर आ गए। इस दरवाज़े से आगे जूतियाँ ले जाना मना है। औरतों को जालियों में से ज़ियारत की इजाज़त है। इस दरवाज़े से आगे औरतों को जाना मना है।

मज़ारे मुबारक

आसताने आलिया के दरवाज़े पर पहुँचकर ज़रा होशियार हो जाइए। अब आप नायब सुल्तान आलहिन्द के दरबार में हाज़िर हो रहे हैं। अदब से क़दम उठाएँ, अदब से क़दम रखें। निगाह नीची रखें, दस्त बस्ता हाज़िरी की सआदत हासिल कीजिए। दरवाज़े में दाख़िल होते ही मग़रिबी दीवार से मुतसिल हुज़ूर कुत्बुल अक़ताब का मज़ार मुबारक है। क़ब्र शरीफ़ के इर्द-गिर्द संगमरमर का खुशनुमा कटहरा है और गिर्द बारा सतूनों पर खुशनुमा संगमरमर का गुम्बद है। बग़ैर वुज़ू ज़ियारत के लिए हाज़िरी बेअदबी है। लिबास और जिस्म पाक और साफ़-सुथरा होना चाहिए। फ़ातेहा पढ़ें, दुआ माँगे और उल्टे पाँव वापिस आ जाएँ। मज़ार शरीफ़ की तरफ़ पुश्त करना खिलाफ़े अदब है।

कटहरे के बराबर हज़रत कुत्बुल अक़ताब के बड़े साहबज़ादे सैयद अहमद मदफ़ून हैं, जो साहब जज़्ब और बाकमाल बुज़ुर्ग थे। क़दमों में छोटे साहबज़ादे सैयद महमूद आसूदा हैं, जिनका अहद तिफ़ली में बउमरी *7* साल इन्तिक़ाल हो गया था। फ़सादात *1947* से पेशतर हज़रत की क़ब्र मुबारक की तावीज संगमरमर का था। जबरी इनख़िला के वक़्त जब फ़सादियों ने बस्ती के मुसलमानों पर हमला किया तो दरगाह शरीफ़ को भी सख़्त नुक़सान पहुँचा। तावीज़ उखाड़ दिया, जालियाँ तोड़ दीं, मगर हिन्दुस्तान के महबूब वज़ीर पंडित जवाहर लाल नेहरू ने महात्मा गांधी की वसीयत के मुताबिक़ सन् *1950* में मज़ार शरीफ़ का कटहरा संगमरमर से अज़सरे नौ तामीर करा दिया। इसके बाद गुम्बद मुबारक भी तामीर हो गया, जो इससे पहले कभी तामीर न हुआ था। हज़रत कुत्बुल अक़ताब के

मज़ार के सिरहाने ख़्वाजा अब्दुल अज़ीज़ बस्तामी का मज़ार है, बायें जानिब हज़रत क़ाज़ी हमीदुद्दीन नगौरी (रह०) मौलाना बदरुद्दीन नागौरी, इमामुद्दीन अब्दाली और दीगर औलिया-ए-किराम आसूदा ख़्वाब हैं।

हिन्दुस्तान के रूहानी गवर्नर के दरबार अबद आसार का क़लमी नक़्शा खींचना मुझ जैसे आजिज़ की ताक़त से बाहर है। रूहानी ज़ौक़ रखनेवाले हज़रत के लिए यह चन्द सतर भी काफ़ी हैं। ज़ियारत से फ़ारिग़ होकर अब आप बाहर तशरीफ़ लाइए। अहाते के पहले दरवाज़े से बाहर आकर आप जानिबे ग़र्ब चलिए। एक दरवाज़ा और मिलेगा। ये दरवाज़ा शाह आलम बहादुर के अहद में सरदार शाकिर ख़ाँ ने जानिबे ग़र्ब बनवाया था। मेहराब के ऊपर संगमरमर का कतबा नसब है, जिस पर सन् तामीर कुन्दा है। इस दरवाज़े से बाहर आते ही आप एक और अहाते में दाख़िल हो गए। इस दरवाज़े से मुतसिल दाएँ जानिब पीरज़ादा इस्लामुद्दीन का रिहायशी मकान है; बाईं तरफ़ यानी दरगाह शरीफ़ की मग़रिब दीवार से मुतसिल मोती मस्जिद है, जो शाह आलम बहादुर शाह ने सन् *1221* हिजरी में बातौर नज़र अक़ीदत तामीर कराई थी। ये मस्जिद संगमरमर के निहायत खूबसूरत फ़ने तामीर का शाहकार है। अफ़सोस मुन्तज़िमे दरगाह जहाँ इमारात मुतलक़ा दरगाह की सफ़ाई का एहतिमाम रखते हैं मोती मस्जिद की तरफ़ तवज्जोह नहीं करते। सेहन, दालाने मस्जिद में मिट्टी-कूड़ा, कबूतर की बीट के अम्बार लगे हुए हैं। शायद उर्स के मौक़े पर एक दफ़ा झाड़ू दिलवा दी जाती है।

मोहज्जिर शाह आलम

मोती मस्जिद के बग़ल में संगमरमर का निहायत खूबसूरत

मोहज्जिर है, जिसमें शाह आलम बहादुर शाह और मोईनुद्दीन मोहम्मद अकबर बादशाह के मज़ारात हैं। दोनों क़ब्रों के सिरहाने संगमरमर की लौह नसब थीं जिनपर साहब क़ब्र का नाम और सन् वफ़ात कुन्दा था। फ़सादियों ने जहाँ मोहज्जिर की जालियों को शिकस्त व रेख़्त किया, वहाँ अलवाह भी तोड़ दीं। उसी अहाते में शाही ख़ानदान के दिगर हज़रात की क़ब्र भी है। जानिब जनूब ख़ुशनुमा सेह दरियाँ बनी हुई हैं, जो इमतिदाद ज़माना और मरम्मत न होने के बाअस टूट-फूट गया। सिर्फ़ दिवारें बाक़ी हैं, जो ज़बाने हाल से दुनिया की बेसबाती की नग़माख़वाँ है। पीरज़ादा इस्लामुद्दीन के मकान से मुतसिल ही एक ख़ानक़ाह और मस्जिद है। सेहन में चंद क़ब्रें हैं। ये भी बादशाही ज़माने की इमारत है। इस मस्जिद और दरगाह से मुतसिल जानिब ग़र्ब एक हौज़ है जो ग़ालबन अर्से के ज़माने में पानी से भरा रहता होगा। आजकल तो खुश्क पड़ा हुआ है। हौज से मुतसिल गोशा शुमाल व मग़रिब में क़दीम ज़माना का दरवाज़ा है। इसी दरवाज़े से मुतसिल पुराने ज़माने की एक मस्जिद है और इससे मुतसिल ही अहाता दरगाह शरीफ़ से बाहर आने का गेट है जहाँ आहनी मेख़ूं के किवाड़ लगे हुए हैं।

मज़ार हज़रत मौलाना मुफ़्ती कफ़ायतुल्लाह साहब

इस दरवाज़े से बाहर बायें हाथ को बहादुरशाह के महल के नीचे एक ऊँचे चबूतरे पर हज़रत मौलाना मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह साहब का मज़ार है। बराबर ही में हिन्दुसतान के आख़िरी ताजदार बहादुर शाह ज़फर का महल है जिसका सिर्फ़ आलिशान दरवाज़ा सालिम सूरत व शक्ल में मौजूद है। बक़िया इमारत खण्डर हो गई है। दिवारें खड़ी हैं, छत नदारद। हज़रत मुफ़्ती किफ़ायतुलल्लह साहब

मुत्तहदा हिन्दुस्तान के मुफ़्ती आज़म थे। निहायत सादा मिज़ाज, ग़ैर तकल्लुफ़पसन्द और सही मानी में उलामए सलफ़ के नमूना थे।

आप मदरसा अमीनिया कश्मीरी गेट देहली के सदर मजलिस और जमीअतुल उलमाए हिन्द के सदर थे। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई सब आपका एहतिराम करते थे। सन् *1953* ई० में आपने दारफ़ानी से रेहलत फ़रमाई।

बाज़ार महरौली शरीफ़

बहादुरशाह ज़फ़र के महल के नज़दीक से ही एक छोटा-सा रास्ता बाज़ार की तरफ़ गया है। इस रास्ते के दोनों तरफ़ नीचे दुकानें, ऊपर बालाख़ाने थे। ये तमाम जायदाद सन् *1947* से पहले मुसलमानों की थी। ज़बरिया इनख़िला के बाद इन जायदादों में पंजाबी पनाहगुज़ीन आबाद हैं। फूलवालों की सैर और उर्स हज़रत कुत्बुल अक़ताब के मौक़े पर यहाँ बड़ी रौनक़ रहती थी। सन् *1947* के आख़िर से ये रौनक़ जाती रही। बाज़ार और शाही महल के दरमियान एक बड़ी वसीअ व अरीज़ बावड़ी थी जो आजकल मिट्टी और पत्थरों से पट गई।

अब आप बाज़ार में दाख़िल हो गए। अब जानिब जनूब चलें। तक़रीबन *4* फ़लांग के बाद दाहिनी तरफ़ जहाज़ महल और बाईं तरफ़ झरना है। इससे आगे बढ़कर दाहिने हाथ पर औलिया मस्जिद है।

औलिया मस्जिद

यह मस्जिद हौज़ शम्स के मशरिक़ी व जनूबी किनारे पर वाक़ेअ है। हज़रत कुत्बुल अक़ताब, ख़्वाजा हमीदुद्दीन नागौरी और दिगर औलियाए किराम इसी जगह मसरूफ़े इबादत रहते थे। इसी

जगह हज़रत ख़्वाजा कुत्बुल अक्ताब ने अहबाब की फ़रमाइश से गर्म-गर्म काक आस्तीन मुबारक से निकालकर अहबाब को खिलाए थे। इसी जगह सुल्तान अलहिन्द ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ ने हज़रत कुत्बुल अक्ताब के साथ नमाज़ पढ़ी थी, जहाँ बाद में बतौर यादगार निशान बना दिया गया है।

बुज़ुर्गों की ज़बानी मालूम हुआ है कि यहाँ रात को औलियाए किराम जमा होते हैं और सरकार ग़रीब नवाज़ कुत्बुल अक्ताब के रूहानी फ़यूज़ से मालामाल होते हैं। यहाँ शब बेदारी करके खुदा तआला से जो आजिज़ाना इलतिजा की जाती है हक़ तबारक तआला अपने फज़ल से क़बूल फ़रमाकर दामने तलब को गौहर हाये मक़सूद से भर देता है। मस्जिद के सेहन में एक कुआँ है जिसका पानी शीरीनी और सबक है। यह मस्जिद सन् *1947* के फ़सादात के दौर से ग़ैरआबाद थी, अब अल्लाह के करम से *22* साल से आबाद है। नमाज़ पंजगाना बा जमाअत होती है। हज़रत कुत्बुल अक़ताब के मलफ़ूजात के मुताले से मालूम होता है कि हज़रत कुत्बुल अक्ताब से मुलाक़ात के लिए उसी जगह अबदाल और रिजाल ग़ैब आया करते थे। अब भी साहब नज़र लोगों की रिजाल ग़ैब और हज़रत अबदाल से मुलाक़ात होती है। इस मस्जिद की ग़रबी दीवार चूँकि हौज़ शम्स के अन्दर है इसलिए हौज़ के पानी से वुज़ू या ग़ुस्ल करने के लिए संगीन ज़ीना बना हुआ है। बरसात के दिनों में जब पानी मस्जिद की दीवार तक आ जाता है। इस ज़ीने से उतरकर नमाज़ी हज़रत हौज़ के पानी से वुज़ू करते हैं। इस मस्जिद में हज़रत कुत्बुल अक्ताब के ज़माने के चन्द मज़ारात हैं।

चह्ल अबदाल

औलिया मस्जिद से चंद क़दम फ़ासले पर जानिब जनूब एक

वसीअ अहाता है, जिसमें *40* अबदाल हज़रात के मज़ारात हैं।

लंगरख़ाना हज़रत सुल्तान शम्सुद्दीन अलतमश

हज़रत सुल्तान शम्सुद्दीन अलतमश का नाम भी हज़रत कुत्बुल अक़ताल के ख़ुलफ़ा में शामिल है। हज़रत सुल्तान मौसूफ़ की रूहानी तरबीयत हज़रत कुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाई। हौज़ शम्सी के ग़ोशे जनूब व शरक़ पर एक वसीअ अहाता इमारत है जिसके मुतल्लिक मालूम हुआ है कि यह इमारत सुल्तान शम्सुद्दीन अलतमश का लंगरख़ाना था। हज़ारहा फ़ुक़रा, ग़रीब शाही लंगरख़ाने से दोनों वक़्त शिकम सेर होते थे। इस इमारत की सरफ़ की कुछ दीवार बाक़ी है, बाक़ी हिस्सा मुनहदिम हो गया है।

हौज़ शम्सी

यह हौज़ सुल्तान शम्सद्दीन अलतमश ने बाइशारा हुज़ूर सरवरे कायनात (सल्ल०) हज़रत कुत्बुल अक़ताब के ज़माने हयात में तामीर कराया था। यह हौज़ *2* मील लम्बा और एक मील चौड़ा था। संग सुर्ख़ से तामीर था। इस हौज़ की तामीर का तज़किरा नाज़रीन पिछले सफ़हात में मुलाहिज़ा फ़रमा चुके हैं।

यह हौज़ बहुत गहरा है। सफ़ाई न होने के बाअस मरूर ज़माने से बड़ी हद तक अट गया है। फिर भी मौजूदा ज़माने में इतना तवील व अरीज़ है कि अगर पानी का मुनासिब इन्तिज़ाम रखा जाए तो लाखों इंसानों की ज़रूरियाते ज़िन्दगी की किफ़ालत कर सकता है। मौजूदा ज़माने में नल सिस्टम के अजरा से अगरचे पानी की तकलीफ़ बड़ी हद तक रफ़ा हो गई है, मगर क़ुदरती व ज़ख़ीरा आब की जो ख़ुसूसियत है उससे मौजूदा नल सिस्टम महरूम है। क़ुदरती ज़ख़ीरा

आब मौसमे गरमा में सर्द और मौसमे सरमा में गर्म रहता है। इसके बरख़िलाफ़ नल का पानी गर्मियों में गरम और सरदियों में सर्द रहता है। ग़रीब लोगों के लिए नल सिस्टम इस हद तक फ़ायदाबख़्श और मोईन सेहत नहीं जिस क़दर दरिया या किसी बड़े हौज़ का पानी फ़ायदाबख़्श है।

गुज़श्ता सफ़हात में नाज़रीन किराम पढ़ चुके हैं कि हज़रत सुलतान शम्सुद्दीन इस फ़िक्र में थे कि पानी की क़िल्लत रफ़ा करने के लिए हौज़ तामीर कराया जाए। यह हौज़ किस जगह तामीर हो इस पर काई पोख़ता ख़याल क़ायम न होता था। सुलतान ने ख़्वाब में हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) को घोड़े पर सवार उस जगह पर देखा जहाँ वस्त हौज़ में एक चबूतरे पर एक बुर्ज क़ायम है। हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) ने फ़रमाया यह जगह हौज़ के लिए मुनासिब है। इस जगह पर हौज़ तमीर करो। इधर हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०)ने सुलतान शम्सुद्दीन को हौज़ की तामीर का इशारा फ़रमाया। उधर हज़रत कुत्बुल अक़ताब को मुत्तला फ़रमाया। ख़्वाब से बेदार होते ही सुलतान शम्सुद्दीन ने अपना ज़ाती नौकर हुज़ूर क़ुत्बुल अक़ताब की ख़िदमत में भेजकर हाज़िरी की इजाज़त तलब की। हज़रत क़ुत्बुल अक़ताब ने फ़रमाया बादशाह से कह देना कि हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) ने जिस जगह हौज़ तामीर करने का हुक्म दिया है, मैं उसी जगह जा रहा हूँ, तुम भी आ जाओ। जवाब मिलते ही सुलतान शम्सुद्दीन घोड़ा दौड़ाते हुए मुक़र्ररा जगह पर पहुँच गए। देखा उस जगह घोड़े के सम का निशान है और पानी का चश्मा जारी है। हज़रत सुलतान शम्सुद्दीन ने वहाँ पानी पिया, पीते ही दिल बाग़-बाग़ हो गया। और इस पानी के मुतल्लिक फ़रमाया : इससे बेहतर शीरीं और सर्द पानी मैंने कभी नहीं पिया। उसी वक़्त वह जगह महसूर

करने के लिए निशान लगा दिया। हौज़ तामीर हो गई। खुश्क और बंजर इलाक़े में यह हौज़ एक नेमत ग़ैर मुतरक़्बा थी। जिस जगह पानी का चश्मा जारी था और जहाँ हज़रत के घोड़े के सम का निशान था सुल्तान शम्सुद्दीन ने *20X20* फ़िट चबूतरा चार संगीन सुतूनों पर एक मज़बूत बुर्ज बनवा दी, जो साढ़े सात सौ बरस गुज़रने के बाद आज भी मौजूद है।

मैने बाज़ बुजुर्गों की ज़बानी सुना है कि ये जगह निहायत मुक़द्दस व बाबरकत है। औलिया किराम ने इस मक़ाम पर चिल्ला कुशी करके रूहानी उरूज हासिल किया। अफ़सोस है इन्क़िलाब *47* के बाद महरौली शरीफ़ की इस्लामी क़दीमी तारीख़ी इमारात व असार का कोई हिफ़ाज़त करनेवाला नहीं। जिस जगह पर बड़े-बड़े औलिया, बड़ी ताज़ीम और अदब से क़दम रखते थे उस जगह पर मवेशी चरते, लीद और पेशाब करते नज़र आते हैं। कोई उनको रोकने-हटानेवाला नहीं । ग़रीब मर्द, औरतें जूते पहनकर आज़ादी से घूमती-फिरती हैं। इस मुतबर्रक मक़ाम की कोई ताज़ीम व तकरीम करनेवाला नहीं। अलबत्ता मोहकमा आसारे क़दीमा का अन्दरून गुम्बद एक कुतबा नस्ब है जिस पर लिखा है कि क़ानून तहफ़्फ़ुज़ आसार क़दीमा की फ़लाह दिफ़ा के तहत इस इमारत को नुक़सान पहुँचाना ज़ुर्म है।

इस हौज़ का पानी चूँकि खुश्क नहीं होता बारो महीने बाक़ी रहता है, इसलिए इस हौज़ में बेशुमार मछलियाँ हैं। इनकी तादाद रोज़ अफ़ज़ों हैं। इस हौज़ का जो हिस्सा पट गया है उसमें तीन तरफ़ आम के बाग़ात हैं। सन *1947* में हिन्दुस्तान को अज़ादी मिलने के बाद इस हौज़ के पानी से इस्तफ़ादह की सूरत तब्दील हो गई। न यहाँ का पानी आदमियों के पीने के काम में आता है, न वुज़ू करनेवाले

मुसलमान बाक़ी रहे। यह हौज़ तो ग़ैरमुस्लिम पंजाबी रिफ़्यूजी औरतों के लिए कपड़े धोने का तालाब बन गया है। तुलू आफ़ताब से 3–4 बजे शाम तक हौज़ के इर्द-गिर्द सैकड़ों रिफ़्यूजी औरतें कपड़े धोती नज़र आती हैं। कपड़ा कूटने की आवाज़ खटखट औलिया मस्जिद की दीवारों से टकराती रहती है।

सुलतान शम्सुद्दीन अलतमश के बाद फ़िरोज़ शाह तुगलक़ ने ज़मीन दोज़ नाला बनाकर उस पानी को कुछ दूर ले जाकर एक आबशार की सूरत अता की थी। औलिया मस्जिद के क़रीब ही जानिब मशरिक़ बादशाही ज़माने का झरना या आबशार है जो सतह ज़मीन से तक़रीबन 20–25 फ़िट की ऊँचाई पर गिरकर छोटी-छोटी हौज़ों से गुजरकर दूसरी तरफ़ निकल जाता है। झरने की साख़्त और मुतअल्लक़ा इमारत क़ाबिले दीद है। गो सन् 1947 के बाद इस ख़ूबसूरत मक़ाम की रानाई फ़ना हो गई, फिर भी इसकी गई-गुज़री हालत में ये आबशार मौसमे बरसात में क़ाबिले दीद है । झरने के ऊपर लोधियों के ज़माने का जहाज़ या हवा महल बना हुआ है। इस महल के चारों कोने पर चार ख़ूबसूरत और रंगीन बुर्जियाँ बनी हुई हैं। सतह ज़मीन से काफ़ी ऊँचे पर यह इमारत वाक़े है। इस इमारत के चारों तरफ़ बनी हुई है जो बरसात के ज़माने में हौज़ पर हो जाने के बाद पानी से लबरेज़ हो जाती है। इस इमारत की जनूबी दीवार टूट गई है, नहीं कहा जाता सकता यह दीवार पुरानी हो जाने की वहज से खुद-बखुद गिर गई या गिरा दी गई।

मक़बरा हज़रत अबदुल हक़ मुहद्दीस देहलवी

हज़रत शाह साहब का मकबरा हौज़ शम्सी के दाहिने किनारे पर आम के बाग के बराबर ज़ियारत गाह ख़ास व अवाम है, जिस

वक़्त आपका मक्बरा तैयार हुआ होगा उस वक़्त तो न मालूम वह कितना हसीन व जमील होगा। मरूर ज़माने और इन्क़लाबात के बाद आज भी आपके मक्बरा से शान व शौकत टपकती है । आपका मज़ार मुबारक एक ख़ूबसूरत वसीअ व अरीज़ हुजरा में है जिनके ऊपर एक निहायत शानदार हिश्त पहल गुम्बंद बना हुआ है। अहाते मज़ार शरीफ़ से जानिब ग़रब में इस वक़्त भी मस्जिद की महराबें और ग़रबी दीवार मौजूद है। अहाता दरगाह में दाख़िल होने के *2* दरवाज़े जानिब शुमाल है। जानिब जनूब भी हुजरे बने हुए है जिन की टूटी-फूटी दीवारें और छत पर चढ़ने का ज़ीना आज भी मौजूद है। अहाता मज़ार के इर्द-गिर्द बहुतम से मज़ारात व मक़ाबिर हैं जो शिकस्ता हाली में दुनिया की बेसबाती का मज़हर है। जानिब शिर्क एक मुख़्तसर अहाता है। दो पुख़्ता मज़ारात हैं, जिनके मुतल्लिक़ नहीं कहा जा सकता कि साहब मज़ारात कौन बुज़ुर्ग थे। शुमाली दीवार देखकर अन्दाज़ा होता है कि इन मज़ारात के हुजरे के ऊपर भी किसी ज़माने में गुम्बद बना हुआ होगा, जो आज मौजूद नहीं मलबा का ढेर पड़ा हुआ है।

हज़रत शाह साहब के मज़ार मुबारक से जानिब गोश शुमाल व मग़रिब एक ऊची पहाड़ी पर एक बुर्ज और बड़ी लम्बी दीवार नज़र आती है। यह इमारत हज़रत शाह साहब के मज़ार मुबारक से तक़रीबन *4* फ़र्लांग के फ़ासले पर एक पहाड़ी पर वाक़े है। मौक़ा देखने से मालूम होता है कि यह इमारत किसी जमाने की एक वसीअ व अरीज़ मस्जिद की है जिसकी चारदीवारी भी होगी, दरवज़े भी होंगे, मगर अब न कोई दरवाज़ा बाक़ी है और न चारदीवारी, सिर्फ़ मग़रिबी दीवार बाक़ी है। जानिब जनूब भी कोई इमारत होगी, जो

अब भी टूटी-फूटी हालत में कुछ-कुछ मौजूद है। इस अहाते के गोशा मशरिक़ व जनूब में चार सुतूनों पर क़ायम एक बुर्ज के नीचे एक मज़ार है। कोई कुतबा मौजूद नहीं जिससे पता चल सके कि यह इमारत किस ज़माने की बनी हुई है। बनवानेवाला कौन था और इस बुर्ज के नीचे कौन मर्दे खुदा महवे ख़्वाब है। हज़रत शाह साहब का गो सालाना उर्स होता है मगर मुनतिज़मीन उर्स हज़रत शाह साहब के मज़ार मुबारक पर जाने की तक्लीफ़ गवारा नहीं करते।

मालूम होता है कि सन् *1947* में फ़सादी आपके मज़ार मुबारक के किवाड़ भी उतारकर ले गए। किसी मर्दे खुदा ने मिट्टी पत्थर से तक़रीबन ढाई फ़िट दरवाज़ा बन्द कर दिया है जिससे मज़ार शरीफ़ मवेशियों के ज़रिये बेहुरमती से महफ़ूज़ हो गया है। अय्यामे गरमा में हज़रत शाह साहब के मज़ार मुबारक का हुजरा इस क़द्र सर्द रहता है कि धूप में चलकर अहाते मज़ार शरीफ़ में दाख़िल होते ही ऐसा महसूस होता है कि बर्फ़ख़ाने में दाख़िल हो गए। मज़ार शरीफ़ के हुजरे के अन्दरूनी कारनिसों पर चूने और मसाले से चारों तरफ़ आयतलकुर्सी मय बिस्मिल्लाह तहरीर है। ख़त इस क़द्र पाकीज़ा और नोक पलक से इस क़द्र आरास्ता है कि अच्छा-अच्छा ख़त्ताब भी सफ़ा करतास पर क़लम से तहरीर नहीं कर सकते।

अहाता मज़ार मुबारक के हर चार जानिब की दीवारों में हवा की आमद व रफ़्त के लिए जालियाँ बनी हुई हैं। सरहाने एक अलमारी दीवार में बनी हुई है, जिसमें एक मिट्टी का दिया बग़ैर तेल के रखा नज़र आता है। औलिया मस्जिद के मौजूदा इमाम साहब हज़रत शाह साहब के मज़ार मुबारक की देख-भाल रखते हैं। वही ग़ालबन जुमेरात को चिराग़ रौशन कर देते होंगे। हज़रत शाह साहब के मज़ार मुबारक के इर्द-गिर्द भी मज़ारात और मक़ाबिर हैं।

मुख़्तसर हालताल हज़रत अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी

हज़रत मोहद्दिस साहब माह मोरहम सन् 958 हि० में देहली में पैदा हुए थे। इस्लाम शाह सूरी का अहद हुकूमत था। आपके दादा आग़ा मुहम्मद बुख़ारा के रहनेवाले थे। तेहरवीं सदी ईस्वी में जब मुग़लों ने वस्त एशिया में आतिश व ख़ूँ का हंगामा बरपा किया तो वहाँ के हालात से बद दिल होकर तुर्कों की एक जमाअत कि साथ तर्के वतन करके हिन्दुस्तान चले आए थे। उस वक़्त सुल्तान अलाउद्दीन ख़िलजी हिन्दुस्तान का फ़रमाँरवा था। सुलतान अलाउद्दीन ख़िलजी ने उनको उमरा की एक जमाअत के साथ गुजरात की मुहिम पर रवाना कर दिया। गुजरात फ़तह हो गया। आग़ा मुहम्मद ने वहाँ सुकूनत इख़्तियार कर ली। आग़ा मुहम्मद के 101 बेटे थे, जिनके साथ वह बड़ी शान व शौकत की ज़िन्दगी गुज़ारते थे। क़ज़ाए इलाहा 100 बेटे इन्तिक़ाल कर गए और वह बाक़ी मांदा एक बेटे को हमराह लेकर स्याह मातमी लिबास पहनकर देहली वापिस आकर हज़रत शैख़ सलाहुद्दीन सहरवर्दी की ख़ानक़ाह में बैट गए और सुलतान मुहम्मद तुगलक़ के अहद में 17 रबीउस्सानी 739 हि० को दाई अजल को लबबैक कहा। हज़रत शाह साहब के वालिद माजिद का इस्म गिरामी मौलाना सैफ़ुद्दीन था। बड़े साहब दिल बुजुर्ग, बहुत अच्छे शायर, बहुत अच्छे आलिम और बहुत अच्छे खुदा रसीदा बुजुर्ग थे। हज़रत शाह साहब ने इब्तिदाई तालीम वालिद माजिद के आगोश आतिफ़त में पाई। तीन महीनों में पूरा क़ुरआन शरीफ़ पढ़ लिया। महीना-डेढ़ महीने में लिखना भी सीख गए। साल-सवा साल में क़ुरआन मजीद हिफ़्ज़ कर लिया। ज़ेहन व हाफ़िज़ा बला का था, 18 साल की उम्र में उलूम ज़ाहिरी की तकमील से फ़ारिग़ हो गए।

तकमील उलूम ज़ाहिरी के बाद हज़रत शाह साहब ने सिलसिला दर्स व तदरीस जारी रखा। उसके बाद आज़म हज बैतुलाल्लह हुए। रमज़ान 96 हि० में शैख़ अब्दुल वह्हाब अतक़ी की ख़िदमत में हाजिर हुए और उनकी ख़िदमत में रहकर तकमील उलूम और सुलूक व एहसान की राहों से आगाही हासिल की। हज़रत शैख़ अतक़ी सहाब ने आपको इल्म बातिनी की तालीम दी। तसव्वुफ़ की किताबें पढ़ाई और हरम शरीफ़ के अन्दर अपनी निगरानी में इबादत बरियाज़त कराई, इल्म व अमल की वादियों की सैर करने के बाद हज़रत शाह साहब बहुक्म पीरो मुर्शिद हिन्दुस्तान वापिस तशरीफ़ लाए। देहली में मस्नदे दर्स व इरशाद बिछाई। मदरसा क़ायम किया, जहाँ कुरआन व हदीस को उलूम दीन का मरकज़ी नुक़्तए फ़िक्र देकर तालीम दी जाती थी।

दर्स व तदरीस का हंगामा हज़रत शाह साहब के आख़िरी लम्हे जिंदगी तक बरपा रहा । आपके क़ायम करदा दारुलउलूम में मुतअद्दद उस्ताद दर्स व तदरीस की ख़िदमात अंजाम देते थे। हज़रत शाह साहब के पहले रूहानी मुर्शिद आपके वालिद माजिद मौलाना सैफुद्दीन थे। फिर वालिद माजिद के हुक्म से हज़रत सैयद मूसा गिलानी से बैअत हुए ***985*** हि० में हज़रत सैयद साहब ने हज़रत शाह साहब पर खुसूसी तवज्जोह इनायत फ़रमाई। मक्का मुअज़्ज़मा में हज़रत शैख़ अब्दुल वह्हाब अतक़ी के हाथ पर बैअत की और चिश्तिया-क़ादरिया-शादला सिलसिला की ख़िलाफ़त हासिल की। हज बैतुल्लाह से वापसी पर हज़रत शाह साहब ने हज़रत ख़्वाजा बाक़ीउल्लाह के दामने तरबीयत से वाबस्ता होकर बहुत कुछ हासिल किया।

हज़रत शाह साहब अगरचे चिश्तिया, शाज़लिया, रिना और नक़शबन्दिया सिलसिले में मुनसलिक थे, लेकिन आपका क़ल्बी और हक़ीक़ी ताल्लुक़ सिलसिला क़ादरिया से था। हज़रत शाह साहब ने ज़ब्दतुलअनार मुंतख़िब हिज्जतुल असरार में लिखा है कि मुझे ख़्वाब में हज़रत गौस आज़म ने हुज़ूर सरवरे आलम (सल्ल०) के इशारा पर मुरीद किया था। बैअत होने के बाद हुज़ूर सरवेरे कायनात ने फ़ारसी ज़बान में मुझे बशारत दी थी – 'बुज़ुर्ग ख्वाही शुद'। हज़रत शाह साहब ***21*** रबीअव्वल ***1021*** हि० को ब उम्र ***94*** साल रेहलत फ़रमाया, आलमे आख़िरत हुए। वसीयत के मुताबिक़ आपके साहबज़ादे शैख़ नूरुलहक़ ने जनाज़े की नमाज़ पढ़ाई और हस्ब वसीयत हौज़ शम्स के किनारे आप सुपुर्द खाक कर दिए गए। क़ब्र के मुतल्लिक वसीयत थी कि क़ब्र वसी बनाई जाए। अन्दरूनी क़ब्र कच्च न कराई जाए। दीवारें कच्ची ईंटों से बनाई जाए। सिरहाने की दीवार में बहुत-से ताक़ बनवाकर उनमें शिजरे रखे जाएँ। वसीयत के मुताबिक़ शैख़ नूरुलहक़ ने मज़ार शरीफ़ के सिरहाने संगमरमर का कुतबा नसब कराया जिसपर निहायत इख़्तिसार और जामीयत के साथ हज़रत शाह साहब की तारीख़ विलादत सन् व वफ़ात के अलावा हज़रत शाह साहब की पूरी ज़िंदगी का ख़ाका दर्ज है। हज़रत शाह साहिब के मज़ारे मुबारक की इमारत नवाब हिदायत ख़ाँ सिपहसालारे अफ़वाज शाहजहाँ बादशाह ने बनवाई जिसका मुख़्तसर तज़किरा गुज़श्ता सफ़हात में पेश किया जा चुका है। हज़रत शाह साहब ने अगरचे ***94*** साल की उम्र पाई थी, फिर भी आपकी उम्र का अकसर हिस्सा तालीफ़ व तसनीफ़ में गुज़रा। इबादत, रियाज़त, तसनीफ़ ऐयामे शबाब से विसाल तक आपकी ज़िन्दगी का महबूब मशग़ला था।

मोअर्रिख़ीन ने आपकी तसनीफ़ात सौ या उससे ज़्यादह

बयान की है। बहरहाल जिन उलूम पर आपकी तसनीफ़ात व तालीफ़ात हैं, उनके नाम ये हैं-

(1) तफ़सीर (2) तजवीद (3) हदीस (4) अक़ायद (5) फ़िक़ह (6) तसव्वुफ़ (7) अख़लाक़ (8) आमाल (9) फ़लसफ़ा व मन्तिक़ (10) तारीख़ (11) सेयर (12) नह्व (13) ज़ाती हालात (14) ख़तात (15) मकातीब (16) असनाद।

(माख़ूज़ अज़ हयात शैख़ अब्दुल हक़ मोहद्दिस देहलवी)

मज़ार हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन

दरगाह हज़रत कुत्ब के पीरज़ादों और बाज़ बुज़ुर्गों की ज़बानी मालुम हुआ कि हज़रत शैख़ शहाबुद्दीन हज़रत बूअली क़लन्दर पानी पती के पीर व मुर्शिद थे। आपका मज़ार मुबारक ईदगाह मेहरौली से जानिब शुमाल तक़रीबन एक फ़र्लांग के फ़ासले पर एक पहाड़ी पर वाक़े है। मज़ार मुबारक पर चार सुतुनों पर लदाव का एक बुर्ज बना हुआ है। जानिबे जनूब एक कोठरी है जिसमें इन्क़िलाब *1947* से पहले एक ख़ादिमे दरगाह रहा करता था। बग़ल में भी एक मज़ार है और बाएँ जानिब भी जानिबे जनूब बरगद के पेड़ के नीचे एक बड़ा भारी कुवाँ है जहाँ हर वक़्त डोल पड़ा रहता है। पानी पीने का एक डोंगा भी रखा रहता है। कुएँ के मन पर 4-5 निशानात इस क़िस्म के हैं जिनसे मालूम होता है कि इन जगहों पर या तो पानी के मटके रखे रहते थे या आसपास के बाशिन्दे इन जगहों पर पानी भरने के घड़े वग़ैरा रखा करते होंगे।

मुन्शी मुहम्मद हनीफ़ साहिब साकिन कटरा आलम बेग मोहल्ला बल्लीमारान देहली का बयान है कि मैं एक मरतबा अपने दो अज़ीज़ों के हमराह हज़रत शैख़ साहिब के मज़ार मुबारक की

ज़ियारत के लिए गया। इस ज़माने में वहाँ एक ख़ादिमे दरगाह इस कोठरी में रहा करते थे जो मज़ार शरीफ़ से मुत्तसिल मौजूद है। इनका बयान है कि हम जिस वक़्त वहाँ पहुँचे कुएँ पर मुँह-हाथ धोकर पानी पिया, ख़दिम दरगाह एक कुंडे में गरमागरम पुलाउ लेकर आया। कहा, 'लो बेटा यह खाओ।' हमने उज़्र किया कि घर से खाना खाकर आए हैं लेकिन वह ख़दिम बदसतूर मुसिर रहा और हम से कहने लगा कि रात हज़रत पीर व मुर्शिद ने मुझे हुक्म दिया था कि कल फलाँ वक़्त तीन मेहमान आएँगे इनके लिए खाना तैयार रखना। चुँकि कूंडाभर खाना हमारी ज़रूरत इश्तहा से ज़्यादह था। इसलिए कुछ खाना बच रहा। ख़दिम दरगाह ने इसरार किया कि यह भी तुम्हें खाना पड़ेगा। बिलआख़िर हम तीनों साथियों ने थोड़ा-थोड़ा करके वह भी खा लिया। आपकी करामत के और भी वाक़िआत सुनने में आए हैं। बख़ैफ़ तिवालत सिर्फ़ इसी एक वाक़िआ पर इकतिफ़ा किया जाता है। आपका मज़ार मुबारक क़िला पृथ्वी राज के बुर्ज के नीचे खाई के किनारे वाक़े है। मज़ार शरीफ़ से मुत्तसिल जानिबे मशरिक़ एक ऊँचे चबूतरे पर 8 बादशाहों के मज़ारात हैं और दूर तक चारों तरफ़ बेशुमार मज़ारात हैं। क़रीब ही बाज़ इमारतों के आसार या टूटे-फूटे खण्डर मौजूद हैं। ईदगाह शम्सुद्दीन अलतमश के सेहन में हज़रत औहदुद्दीन किरमानी (रह०) का मज़ार मुबारक है।

मज़ार शरीफ़ के महल्ले वुक़ूअ् पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि यह सब मज़ारात शुहदाए किराम के हैं, जो क़िला पृथ्वीराज पर हमला के वक़्त शहीद हो गए थे। हज़रत शैख़ साहिब के मज़ार मुबारक की बुर्जी के सुतुन महाराजा पृथ्वीराज के बुतख़ाना के हैं से साख़्त हिन्दुस्तानी मालूम होती है इसलिए यह बात क़रीने

क़ियास है कि यह मज़ारात इसलामी बादशाह के हाथ पर दिल्ली की फ़तह के वक़्त के हैं।(वल्लाहु आलम बहक़ीक़तिलहाल)

मज़ार हज़रत हाजी रोज़बा और दोख़्तर पृथ्वीराज

हज़रत हाजी रोज़बा के मुतल्लिक़ सर सैयद अहमद ख़ान ने आसारुस्सनादीद में लिखा है कि यह सबसे पहले इस्लामी दुरवेश हैं जो देहली में सबसे पहले आए थे। देहली पहुँचकर उन्होंने महाराजा पृथ्वीराज के क़िला के बुर्ज के नीचे नीम के दरख़्त के पास क़याम किया था। उन्हें देखकर उस ज़माने के मुनज्जिमों ने राजा से कहा था कि इस फक़ीर का यहाँ क़याम करना आपकी हुकूमत के लिए अच्छा नहीं। ऐसा मालूम होता है कि आपकी हुकूमत अन्क़रीब ख़त्म हो जाएगी। मुसलमान हुक्मरानी करेंगे। आपके हाथ पर बेशुमार अहले हुनूद मुशर्रफ़ ब इस्लाम हुए थे। महाराजा पृथ्वीराज की लड़की भी मुसलमान हो गई थी। इसी नीम के सामने हज़रत हाजी साहिब ने विसाल फ़रमाया। इसी जगह मदफ़ून हुए। बग़ल में महाराजा पृथ्वीराज की मुसलमान लड़की का मज़ार है।

मेहरौली शरीफ़ में बेशुमार मज़ारात, मक़ाबिर और तारीख़ी इमारात व मक़ामात हैं। इस मोख़्तसर रिसाला में इतनी गुंजाइश कहाँ कि पूरी तफ़सील पेश की जा सके। ज़िन्दगी बख़ैर है तो किसी वक़्त क़दीम देहली की तारीख़ी इमारात का तफ़सीली तज़किरा किताबी शक्ल में पेश किया जाएगा।

कुत्ब मीनार

यूँ तो दुनिया के मुख़्तलिफ़ शहरों में बहुत-से बुलन्द व बाला ख़ूबसूरत मीनारें हैं मगर सर से पैर तक संगीन ख़ूबसूरत बुलन्द व बाला व क़दीमी मीनार सिवाय कुत्ब मीनार के कोई नहीं। फ्रान्स में

एफ़िल टावर 2 हज़ार फ़िट बुलन्द है। निहायत ख़ूबसूरत और मुस्तहकम है, मगर इसका सबसे निचला हिस्सा पत्थर का है और चोटी तक लोहे की कमानियों से बना हुआ है और इसकी क़दामत 600 साल से ज़्यादा की नहीं। यह ख़ूसूसियत सिर्फ कुत्ब मीनार को हासिल है कि तक़रीबन 800 साल गुज़र जाने के बाद भी 238 फ़िट बुलन्द आज भी मौजूद है।

देहली में जामा मस्जिद के मीनार पर चढ़कर जानिब जनूब नज़र डालने से यह मीनारा एक कीली-सा मालूम होता है।देहली से आगरा जाते हुए निज़ामुद्दीन रेलवे स्टेशन से आगे चलकर कई स्टेशनों तक नज़र आता है।

इस मीनारे का बानी कौन है?

मेहरौली में जिस मक़ाम पर यह मीनारा मौजूद है वहाँ महाराजा पृथ्वीराज के ज़माना में एक अज़ीमुश्शान बुतख़ाना था। सोमनाथ के बाद दूसरे दरजा पर यह बुतख़ाना शुमार किया जाता था। महाराजा की हुकूमत ख़त्म हो गई, हिन्दुस्तानी हुकूमत की बाग-डोर मुसलमानों के हाथ में चली गई।

1193 में हिन्दुस्तान में इस्लामी फ़तूहात मुकम्मल हो जाने के बाद कुत्बुद्दीन ऐबक ने इस पहले दरजा पर मज़ीद चार दरजात तामीर कराकर अपनी अज़ीमुश्शान फ़ुतुहात का निशान क़रार दिया और इस मीनारा को माज़ना (अज़ान देने की जगह) क़रार देकर इसी की मुनासबत से एक अज़ीमुश्शान मस्जिद की तामीर की और इस मस्जिद का नाम कुव्वतुलइस्लाम रखा। जिस मस्जिद का मीनारा इस क़द्र बुलन्द हो उस मस्जिद की वुसअत का अन्दाज़ा मीनार की बुलन्दी से किया जाता है।

बुतख़ाना भीं और ख़ाने ख़ुदा भी

सुलतान कुत्बुद्दीन ऐबक ने इस मस्जिद को इस ढंग से तामीर करना चाहा था कि बुतख़ाना भी बजिन्सही क़ायम रहे और मस्जिद भी तामीर हो जाए। इस वक़्त बुतख़ाना और मस्जिद कुव्वतुलइसलाम का नज़ारा अल्लाह की शान का रिक्क़तख़ेज़ मनज़र और सैयाहान आलम के लिए बसीरत व इबरत का सामान है। इस जगह ख़ाने ख़ुदा भी है और बुतख़ाना की इमारत भी।

मीनार के छठे और सातवें दरजे की तामीर

कुत्बुद्दीन ऐबक की उम्र ने दुख़ाना की इमारत की तकमील ना कर पाया कि पैग़ामे अजल को लब्बैक कहना पड़ा। कुत्बुद्दीन ऐबक के बाद सुलतान शमशुद्दीन तख़्तनशीन हुए। इस मीनारा के ऊपर छटा दरजा संगमरमर का और सातवां दरजा लकड़ी का बनवाकर कलस के तौर पर लगाया, जिसपर इस्लामी परचम लहराया करता था।

तर्ज़े तामीर

इस मीनार के पाँचों दरजे संग सुर्ख़ के हैं, मगर हर दरजा की तामीर में एक ख़ूसूसियत पेशे नज़र है। सबसे निचले दरजा की साख़्त दोहरी है, गोल और नुकीली सिलों से तामीर है।दूसरे दरजा की सब सिलें गोल हैं, तीसरे दरजा की सब सिलें नुकीली हैं, चौथा और पाँचवाँ दरजा संगमरमर का मोदव्वर तराश है।

आयात कुरआनी व कतबात

इस मीनार की एक अजीब ख़ूसूसियत यह है कि नीचे से उपर तक हर दरजा में आयात कुरआनी ख़ते नसख़ में कन्दह हैं।

हर दरजा पर संगमरमर का कतबा नसब है जिस पर मेमार और इनजीनीयर का नाम कन्दह है।

अलाउद्दीन ख़िलजी का मीनार

सुलतान अलाउद्दीन ख़िलजी ने अपने ज़माना हुकूमत में इस मस्जिद की तामीर व तकमील का बीड़ा उठाया था। चुनांचे कुत्ब मीनार के महाज़ात में जानिब शुमाल कुत्ब मीनार से भी बड़ा मोटा और ऊँचा मीनार तामीर कराना शुरू किया। पहला दरजा भी मोकम्मल न हो पाया था कि मौत ने आ दबोचा। तामीर का काम वन्द हो गया। इसके आगे न बढ़ सका।

फ़ने तामीर का कमाल

मौजूदः कुत्ब मीनार की ऊँचाई इतनी है कि इसकी चोटी की तरफ़ नज़र उठाने से सर पर से टोपी गिर पड़ती है। जिस ज़माना में यह मीनार तामीर हुआ था उस ज़माना में न आलात जर्र सक़ील थे, न मशीनें थीं। इतनी बड़ी-बड़ी सिलें किस तरह ज़मीन से उठाकर इतनी बुलन्दी पर लेजाकर क्योंकर नसब होंगी। पोख़्तगी और मज़बूती का यह आलम है कि साढ़े सात सौ साल गुज़र जाने पर भी एक सिले भी अपनी जगह से हिला नहीं। यह मीनारा नीचे से *48* फिट गोल है और गाउदूम होता हुआ ऊपर चला गया है। मौजूदा ज़माना में इस बुलन्द व बाला मीनार के *5* दरजे मौजूद हैं जिनकी ऊँचाई का नक़्शा हस्बे ज़ैल है :

1 पहला दरजा साढ़े छियानवे फ़िट बुलन्द,
2 दूसरा दरजा *51* फ़िट,
3 तीसरा दरजा *41* फ़िट,
4 चौथा दरजा *26* फिट,

5 पाँचवाँ दरजा 25 फ़िट

चोटी पर 9 फ़िट का दौर जिसके गिर्द क़द्दे आदम पीतल का कटहरा नसब है।

छठा और सातवाँ दरजा कब गिरा

हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों के तसल्लुत से पहले ही छठा और सातवाँ दरजा टूट गया था। अंग्रेज़ों ने 8 दरी बुर्जी बनाकर छठा दरजा बनाकर इसके ऊपर बुर्जी की लकड़ी लगाई थी लेकिन अंग्रेज़ों की बनाई हुई इमारत बिजली और हवा की ताव न ला सकी, टूट गई। मजबूरन पाँचवीं दरजा के ऊपर क़द्दे आदम बुर्जी नसब कर दिया।

कुत्ब मीनार की सीढ़ियाँ

कुत्ब मीनार पर चढ़ने की सीढ़ियों की तादाद दरजावार हस्ब ज़ैल है-पहला दरजा 156 सीढ़ियाँ, दूसरा दरजा 78 सीढ़ियाँ, तीसरा दरजा 62 सीढ़ियाँ, चौथा दरजा 41 सीढ़ियाँ, पाँचवाँ दरजा 41 सीढ़ियाँ। इस हिसाब से सारे मीनार में नीचे से ऊपर तक 378 सीढ़ियाँ हैं।

कुत्ब मीनार की चोटी पर लुत्फ़े नज़ारा

कुत्ब मीनार की चोटी पर पहुँचकर जो लुत्फ़ नज़ारा हासिल होता है बयान व तहरीर से बाहर है। कोसों तक सबज़ा ज़ार बड़े-बड़े महलों के शिकस्ता दरो दीवार कोहसार, आबशार सफ़दरजंग के मक़बरा से पोख़ता सड़क के दोतरफ़ा दरख़्तों की क़तार, दूर से जमना का बहाव, चक्कर मार बेशुमार मक़ाबिर, गुम्बद, ईंटों के ढेर, पत्थरों के अंबार नज़र आते हैं। बरसात के मौसम में ऐसा नज़ारा भी देखा जाता है कि कुत्ब मीनार के ऊपर धूप निकली होती है, नीचे

बारिश हो जाती है। मीनारा से उतरकर पता चलता है कि बारिश हुई थी।

कुत्ब मीनार की मरम्मत

हवादिस लैल व नहार से मोतास्सिर होकर कई मरतबा कुत्ब मीनार को मरम्मत की ज़रूरत पेश आई। सबसे पहले शाह फ़िरोज़ तुग़लक़ ने चौदहवीं सदी ईसवी में उस वक़्त मरम्मत कराई जब बिजली गिरने से ऊपर की मंज़िलें ख़राब हो हो गई थीं। फ़िरोज़ शाह तुग़लक़ के बाद *1503* ई० में सिकन्दर लोधी ने इसकी मरम्मत कराई। फिर *1782* ई० में अंग्रेज़ी दौरे हुकूमत में काली आंधी से ऊपर का दरजा और बुर्जी गिर गई। उसके बाद *1829* में अंग्रेज़ी दौरे हुकूमत में कप्तान स्मिथ की ज़ेरे निगरानी मरम्मत हुई। छठे दरजे के बजाए एक संगीन आठ दरी निहायत ख़ूबसूरत बनवाकर उसके ऊपर लकड़ी की बुर्जी नसब की गई, मगर आंधी और बिजली का सदमा यह बुर्जी सहार न सकी। बुर्जी टूट फूट गई। इहंतियातन छठा दरजा भी उतरवा दिया गया और पाँचवीं मंज़िल की चोटी पर क़द्दे आदम हिफ़ाज़ती कटहरा लगा दिया गया।

मस्जिद कुव्वतुलइस्लाम

ज़ाहिर है कि जिस मस्जिद का मीनारा इस क़द्र ऊँचा हो कि उसकी चोटी आसमान से लगी दिखाई देती हो वह मस्जिद किस क़द्र वसीअ व अरीज़ और अज़ीमुश्शान होगी।

इस मस्जिद का पहला दरजा सुलतान कुत्बुद्दीन ऐबक ने तामीर किया था। यह दरजा जनूब की तरफ़ कुत्ब मीनार के सामने है। इस दरजा में क़िबला की तरफ़ संग सुर्ख़ के तीन दरवाज़े हैं और उन पर ख़त नसख़ व कूफ़ी में आयात कुरआनी कन्दा हैं। इन

दरवाज़ों की मेहराबें टूट चुकी हैं। सिर्फ़ बाज़ू बाक़ी हैं। इस दरजा के जनूबी ज़िला में बुतख़ाना की इमारत है। इसी तरह का एक ज़िला जानिब शुमाल भी था, मगर अब इसकी इमारत मौजूद नहीं, टूट-फूट गई। इस दरजे के टूटे हुए दरमियानी दर की लम्बाई अब भी *48* फ़िट है। इस दरजा का अर्ज़ मय बग़ली ज़िलों के *112* फ़िट है। इस दरजा के जनूबी छोटे दर के बाज़ू पर एक कतबा नसब था, जिसमें सन् तामीर *627* हि० है जिस से मालूम होता है कि यह दरजा सुलतान शम्सुद्दीन के ज़माना में तामीर हुआ था।

दूसरा यानी बीच का दरजा बनिस्बत पहले दरजे के बहुत बड़ा है। इस दरजा में क़िबला की तरफ़ *5* दर हैं। एक बड़ा दर है, *2* दाहिनी तरफ़। दो बाएँ तरफ़। इस दरजा के दरों की लम्बाई भी उतनी ही थी जितनी पहले दरजा की है। इस दरजा पर पहुँची कारी बेहद है। आयात कुरआनी कन्दा हैं। इस दरजा के नीचे के दो के बाएं तरफ़ तामीर *594* हि० तहरीर है। यह दरजा सुलतान ऐबक का तामीर करदा है। इस दरजा का अर्ज़ *138* फ़िट है। इसी दरजा के सेहन में लोहे की लाट है, जिसके मोताल्लिक मुख़्तलिफ़ रवांयात ज़बान ज़दे अवाम हैं। इस लाट की लम्बाई *23* फ़िट *8* ईंच, जड़ की मोटाई *5* फ़िट *3* ईंच मोदव्वर है।

ज़िला शरक़ी में बुतख़ाना के सुतून हैं। शरक़ी दरवाज़ा *587* हि० में तामीर हुआ था और शुमाली दरवाज़ा *592* हि० में। इसी मस्जिद का तीसरा दरजा भी पहला दरजा जैसा था। इस दरजा के भी तीन दरजे थे, दो छोटे और दरमियानी बड़ा। बीच के दर की मेहराब टूट गई है। अलबत्ता बाज़ू क़ायम हैं। चौथे दरजा की कोई इमारत इस वक़्त मौजूद नहीं, लेकिन दरों के पायों के निशानात मौजूद हैं। यह

दरजा सुलतान ख़िलजी की तामीर थी। पाँचवाँ दरजा भी सुलतान ख़िलजी ने बनवाना शुरू किया था कि पैग़ामे मौत आ गिया। यह दरजा मोकम्मल न हो सका। अब वहाँ बजुज़ पत्थर के और कोई चीज़ मौजूद नहीं।

टूटी लाट

यह मीनार सुलतान ख़िलजी ने कुत्ब मीनार से ऊँचा बनवाना शुरू किया था कि दाई अज़ल को लब्बैक कहना पड़ा। अलाउद्दीन ख़िलजी एक दरजा भी मोकम्मल तामीर न कर पाया। यह टूटी अलाट ख़लाई मीनार के नाम से मौसूम है।

मस्जिद कुव्वतुलइस्लाम

मस्जिद कुव्वतुलइस्लाम का यह दरवाज़ा सुलतान ख़िलजी ने तामीर कराया था। मस्जिद का यह दरवाज़ा जानिबे शहर था। उस ज़माने में शहर की आबादी कुत्ब मीनार से जानिबे जनूब थी। इस दरवाज़े के बैरूनी व अन्दरूनी मेहराबों पर तारीख़ तामीर *15* शव्वाल सन् *710* हि० तहरीर है। अलाई दरवाज़ा की बलन्दी *47* फ़िट है। दरवाज़े की इमारत नीचे से चौकोर और ऊपर से हश्त पहल है। इस दरवाज़े के ऊपर एक खुशनुमा गुंबद भी है। यह दरवाज़ा अन्दर और बाहर बेल-बूटों और नक़्श व निगार से आरास्ता है। खिड़कियों में संगमरमर की खुशनुमा जालियाँ लगी हुई हैं।

इमाम ज़ामिन का मक़बरा

यह मक़बरा अलाई दरवाज़ा से तक़रीबन दस गज़ के फ़ासले पर है। आपका इस्मे ग्रामी इमाम मुहम्मद अली था। सिकन्दर

लोधी के ज़माने में मशहदे मुक़द्दस से देहली तशरीफ़ लाए। यह मक़बरा उन्होंने अपनी वफ़ात से पहले ही तामीर करा लिया था। वफ़ात के बाद इसी मक़बरा में दफ़न हुए। मक़बरा की इमारत निहायत ख़ूबसूरत और क़ाबिले दीद है।

मक़बरा सुलतान शम्सुद्दीन अलतमश

सुलतान अलतमश ख़ुदा रसीदा बुज़ुर्ग बादशाह थे। बड़े नरम दिल और मुन्सिफ़ मिज़ाज थे। आपके ज़माने में शेर और बकरी एक घाट पानी पीते थे। आपने अपने ज़मानए सलतनत में किसी का दिल नहीं दुखाया। हिन्दू-मुसलमान आपसे निहायत खुश थे। आपकी दराज़ीए उम्र की दुआएँ माँगा करते थे।

सुलतान शम्सुद्दीन की क़ब्र एक तहख़ाना में है जहाँ पहुँचने के लिए *21* सीढ़ियाँ तय करनी पड़ती थीं। ऊपर सिर्फ़ तावीज़ है। मस्जिद कुव्वतुलइस्लाम के शुमाली मग़रिबी गोशे में आपका मज़ार मुबारक है। *20* शाबान सन् *633* हि० तारीख़ वफ़ात है। मक़बरा का हुजरा *19* फ़िट मोरब्बा रक़्बा का है दीवारों की बुलन्दी *28* फ़िट है। इस वक़्त छत नदारद है। मक़बरा के *3* दरवाज़े हैं। मशरक़ी, शुमाली, जनूबी, अन्दरूनी मक़बरा में चारों तरफ़ मेहराबों पर आयते क़ुरआनी मनक़ूश हैं। मक़बरा की सारी इमारत संगे सुर्ख़ की है।

महबूब रब्बे यज़दाँ या बख़तियार काकी

हज़रत मौलाना ज़ियाउल क़ादरी बदायूनी

मख़दूमे जिन्न व इनसाँ या बख़तियार काकी
हैं आप कुत्बे दौराँ या बख़तियार काकी

हर दम है दिल में अरमाँ या बख़तियार काकी
जाँ तुम पर करूँ कुर्बां या बख़तियार काकी

अल्लाह रे मुक़द्दर हैं मेहरबां तुम पर
महबूबे रब्बे यज़दाँ या बख़तियार काकी

तुम हो सरवरे जान बन्दा नवाज़े ख़्वाजा
हो नूर ऐन शमा या बख़तियार काकी

गंजशकर निज़ाम व साबिर नज़ीर व ख़ुसरो
हैं तेरे ज़ेरे दामाँ या बख़तियार काकी

पाए हैं मारफ़त की दौलत वही जहाँ से
है आपका वह ऐवाँ या बख़तियार काकी

सुलतान हिन्द ने है बख़्शा हुज़ूर तुमको
ताजो असाए उस्मान या बख़्तियार काकी

हर आलिमे शरीअत, हर आरिफ़े तरीक़त
है आपका सनाख़्वाँ ऐ बख़्तियार काकी

जो आपके मोहिब्ब हैं , महबूब हैं ख़ुदा के
हैं आप शाहे ख़ूबाँ या बख़्तियार काकी

आवाज़ हक़ को सुनकर वासिल बहक़ हुए तुम पर
राहे ख़ुदा में दी जान या बख़्तियार काकी

है दम क़दम से तेरे देहली बहिश्ते उरूस
सरवरे रियाज़ रिज़वाँ या बख़्तियार काकी

है ग़मज़दा मोहाजिर महरूमे हाज़िरी हैं
दुनिया है तेरी मेहमाँ या बख़्तियार काकी

तुझसे तेरी दुआ का तालिब है वक़्त आख़िर
तेरा ज़िया सनाख़्वाँ या बख़्तियार काकी